卐 [illegible] 卐

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

— कर्ता —

[illegible]

प्रेरक :

प०पू० आचार्यदेव श्रीमद्
विजयसुशीलसूरीश्वरस्य
शिष्यरत्न स्व० पू० मुनि
श्रीदेवभद्रविजयः

सर्जकः सम्पादकश्च
जैनधर्मदिवाकर-शासनरत्न-
तीर्थप्रभावक - राजस्थान-
दीपक - शास्त्रविशारद -
साहित्यरत्न - कविभूषणेति
पदप्रमलङ्कृतो
विजयसुशीलसूरिः



श्री वीर सं० २५०४
विक्रम सं० २०३४
नेमि सं० २९

प्रतियें : १०००
प्रथमावृत्तिः
मूल्यम् : रु० २५|००



प्रकाशक :
आचार्य श्री सुशीलसूरि
जैन ज्ञान मन्दिरम्
शान्तिनगर, सिरोही
(राजस्थान)

मुद्रक :
श्री जगदीशचन्द्र स्वर्णकार
अजन्ता प्रिण्टर्स
त्रिपोलिया बाजार,
जोधपुर (राज०)



वन्दनीया गुरुदेवाः



समर्पणम्

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥ [illegible] ॥

[[illegible]]

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

यद् वाचा विमलाचलादिप्रभृतेः, संघा वरा निर्गता ।
वन्देऽहं शुभपादपद्मयुगलं, तं नेमिसूरीश्वरम् ।।५।।

नन्दीवर्धन कारितप्रतिमया, श्रीवर्द्धमानप्रभो ।
रम्ये काननमण्डिते मधुपुरे, रत्नाकरालङ्कृते ।।
वर्षारम्भदिने महोदयकरं यज्जन्म जातं शुभं ।
वन्देऽहं शुभपादपद्मयुगलं, तं नेमिसूरीश्वरम् ।।६ ।।

लक्ष्मीचन्द्र इति श्रुतस्सुजनको, यस्यास्ति धर्मोद्यत-
श्चाचाराचारविचारचारुचरिता, माता च दीपालिका ।।
वाग्दक्षो हि सतां प्रियो गुणनिधिः, श्रीबालचन्द्रोऽनुजो ।
वन्देऽहं शुभपादपद्मयुगलं, तं नेमिसूरीश्वरम् ।।७।।

येषामीक्षणतोऽपि यान्ति विपुलं, भाग्योदयं सज्जना ।
भूपालावलिमौलिपूजितपदा-म्भोजं च दिव्याकृतिम् ।।
सम्पूर्णेन्दुसुमण्डलाभवदनं, चन्द्रार्धभालस्थलं ।
वन्देऽहं शुभपादपद्मयुगलं, तं नेमिसूरीश्वरम् ।।८।।

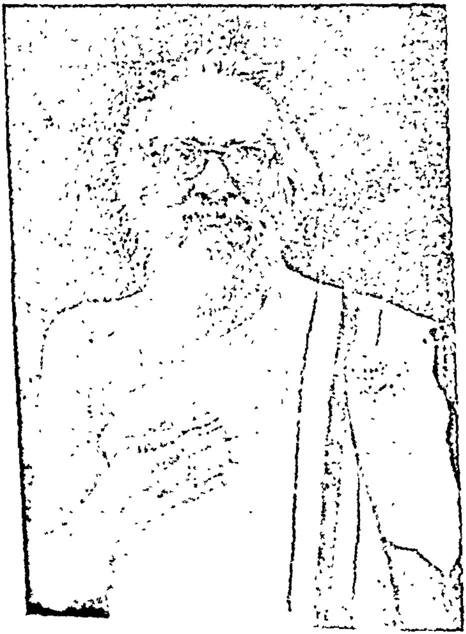
[स्रग्धरावृत्तम्]

नानाविद्याधिदेवाचनविमलधिया-मुक्तिसौभाग्यभाजां ।
श्रीमद्धानन्दसूरीश्वरप्रगुरुमतां, दक्षनाम्नो गुरोश्च ।।
[illegible] चाष्टकमिदममलं श्रीसुशीलेन हृद्यं ।
नित्यं [illegible] वै श्रुतिपठनकृतां मोददानाय भूयात् ।।

।। इति श्रीनेमिसूरीश्वराष्टकम् ।।

[मुद्रित '[illegible]' पंचम विभाग में से उद्धृत]

साहित्यसम्राट्-व्याकरणवाचस्पति-शास्त्रविशारद-कविरत्न
साधिकसप्तलक्षश्लोकप्रमाणनूतन संस्कृतसाहित्यसर्जक-



परमशासनप्रभावक-बालब्रह्मचारी-परमपूज्याचार्यप्रवर
श्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वरजी
महाराज साहेब।

[illegible]

॥ [illegible] ॥

[[illegible] - [illegible]]

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

प्रकुर्वाणां श्लिष्टां विवृतिकलित मष्टकततिं ।
त्रिसूत्री व्याख्यात्रा शुभतिलकमञ्जर्यपि कृता ॥
रतं न्यासोद्धारे स्वपरहितकारेऽतिरसिकं ।
स्तुवे तं सूरीशं प्रगुरुवरलावण्य मुनिपम् ॥ ७ ॥
पुरे बोटादाख्ये विमलगिरिसौराष्ट्रविषये ।
यदीयं जन्माभूत् सुगुणगणभाग् 'जीवन' गृहे ॥
सदाशीलाढ्यानाममृत जननीनां सदुदरात् ।
स्तुवे तं सूरीशं प्रगुरुवरलावण्यमुनिपम् ॥ ८ ॥

[वसन्ततिलका-वृत्तम्]

विख्यातराजनगरे जिनचैत्ययुक्ते ।
नन्दग्रहाङ्कशशिविक्रमवर्षमाघे ॥
शुक्ले दले च प्रतिपत्तिथि शुक्रवारे ।
श्रीनेमिसूरिवर पट्टप्रभावकस्य ॥ ९ ॥
लावण्यसूरिपमरोर्बुधदक्षशिष्य-
स्तस्यान्तिपत्क मुनिराज सुशीलदृब्धम् ॥
रम्यं किलाष्टकमिदं विबुधार्थजात-
मा पुष्पदन्तमनिशं पठतां शिवं स्यात् ॥ १० ॥ [युग्म

॥ इति श्रीविजयलावण्यसूरीशाष्टकं समाप्तम् ॥
['प्रगुरुदेव विरहगीत' ग्रन्थ में से उद्धृत]

गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः ॥ १ ॥
छद्मस्थेषु सदा स्खलद्गतितया दोषप्रबन्धान्वये ।
मोहास्यास्त्वदमत्र दोषघटनायां स्यामहं धीमताम् ॥
नो प्रार्थ्याः कृतिनो निसर्गगरिमावासा मया शोधने ।
येषां दोषगणप्रमार्जनविधिः स्वाभाविकोऽयं ततः॥ २

धर्मप्रभावक-व्याकरणरत्न-शास्त्रविशारद-कविदिवाकर-

देशनादक्ष-बालब्रह्मचारी



परमपूज्याचार्यवर्य

श्रीमद्विजयदक्षसूरीश्वरजी

महाराज साहेब।

॥ [illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ १ ॥

॥ [illegible] ॥

([illegible])

[illegible], [illegible] ।
[illegible], [illegible] ॥ १ ॥

[illegible], [illegible] ।
[illegible], "[illegible]" [illegible] ॥ २ ॥

[illegible], [illegible] ।
[illegible], [illegible] ॥ ३ ॥

[illegible], [illegible] ।
[illegible], [illegible] ॥ ४ ॥

[illegible] ।
[illegible], [illegible] ॥ ५ ॥

[illegible], [illegible] ।
[illegible], [illegible] ॥ ६ ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥ ७ ॥

[illegible], [illegible] ।
[illegible] ॥ ८ ॥

([illegible])

[illegible]

[illegible]

सुशीलनाममाला समीक्षा

[रचयिता-गिरीशकुमार परमानन्द शाह 'कल्पेश' धांगध्रा वाले]

नत्वा वीरं गुरुं भक्त्या, जननीं जनकं तथा ।
सुशीलनाममालायाः, समीक्षा लिख्यते मया ॥ १ ॥
नाममाला रमा रम्या, समुत्पन्ना श्रुतार्णवात् ।
नवयौवन संप्राप्ता, सुशील स्वान्तसद्मनि ॥ २ ॥
विदिता विश्वविश्वे या, जगदाश्चर्यकारिणी ।
कवित्वजननी ह्येषा, शब्दकल्पद्रुमोपमा ॥ ३ ॥
प्रशस्तगुणयुक्ता या, कवीनां हितकारिणी ।
गुम्फिता नाममाला सा, सुशीलसूरिणा मुदा ॥ ४ ॥
मनुजभुवी सुधेयं शब्दमाधुर्ययुक्ता,
सकलकविजनानां हर्षदा नाममाला ।
गुरुपदकजयुग्मे याऽर्पिता भक्तिभावा-
ज्जगति विजयते सा विस्तृता कोशरूपा ॥ ५ ॥
गुरूणामादेशात् प्रथितयशसा जैनमुनिना,
प्रणीता सम्पूर्णा विविधविषयर्णैः सुकविना ।
प्रशस्ता मालेय प्रकृतिसुभगा शब्दप्रसवैः,
प्रसादाद् भाषाया प्रसरतिसमस्तेऽत्र भुवने ॥ ६ ॥
अहो ! नाम्नां माला कविकुलमनोरञ्जनपरा,
जगद्विख्याता परमरमणीया कृतिरियम् ।
प्रमोदाल्लोकेऽस्मिन् बुधजनसभायां नुतिपदैः,
कृतज्ञानां व्यासात् समुदयति कीर्त्ति सुविमलाम् ॥ ७ ॥
विशिष्टैः शब्दैर्या श्रुतजलनिधेर्नीरनुपमा,
धृता चित्ते वारं नमयति सदा दर्शनकरान् ।
कवीनां चरणगां नयति विलय क्लेशमखिल,
जगत्युत्कर्षं सा जिनवचन तीर्थस्य सततम् ॥ ८ ॥

[illegible]

[illegible]

भूमिका

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रीगुर्जरोत्पन्नसमस्तजैन-
साधु प्रधानः प्रिय नेमिसूरिः ।
तच्छिष्य लावण्य प्रसिद्ध सूरिः
धुरन्धरो व्याकृति तत्व वेत्ता ॥५॥

तदीय पट्टाधिकृतो गुणाना-
माधिक्यतः शासनदक्षसूरिः ।
सहोदरश्चाथ तदीय शिष्यः,
सुशीलनामानुगुणः सुशीलः ॥६॥

सूरिस्तदीयो नव नाम माला-
कोषः परं तोषक एष सृष्टः ।
महामुदं संस्कृत शब्द बोध-
समुत्सुकायाशुतरं विदध्यात् ॥७॥

यडत्र ये सन्ति प्रदत्त भागाः ।
देवाधिदेवादिगुणानुरागाः ।
तेष्वेव प्रायो जगतां प्रसिद्ध
नामानि दृष्टानि मनोहराणि ॥८॥

आशास्यते सुन्दर नाममाला-
शालेव धर्मस्य सम प्रिया स्यात् ।
शब्दानुसन्धान प्रदान काले
भालेव वा मोदकरो भविश्री ॥९॥

सकल हृदयहारी सर्वलोकोपकारी,
कविवर प्रिय सूरेर्यत्न एषः प्रशस्तः ।
सरलतम नवीना नाममाला विशाला,
सपदि मनसि शास्यानन्दवृद्धि प्रकुर्यात् ॥१०॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमः ॥

प्रास्ताविक पुरोवचन

अनादि अनंत इस संसार में अनादि काल से संसारी आत्माएं चार गति में एवं चौरासी लाख जीवायोनि में परिभ्रमण कर रही हैं। इसका कारण अपने-अपने कर्म ही हैं। यह कर्म के ज्ञानावरणीयादि आठ मुख्य भेद और उत्तर भेद १५८ (प्रकृतियां) हैं।

किसी भी कर्म की विशिष्टता–बाहुल्य बताने के लिए शास्त्रज्ञान कारण हैं, वही शास्त्रज्ञान शास्त्र में रहे हुए वाक्यों के आधीन हैं, वाक्यार्थज्ञान उन-उन पदार्थज्ञान के आधीन हैं और पदार्थज्ञान याने शब्दबोध उन-उन पद शक्ति को ग्रहण करना उसके ऊपर निर्भर हैं।

पद शक्ति को ग्रहण करने के लिए कहा है कि —

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमान-
कोपाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च।
वाक्यस्य शेषाद् विवृते र्वदन्ति,
सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः ॥१॥

अर्थ —

व्याकरण से, उपमान से, कोष से, आप्तवाक्य से, व्यवहार से, वाक्यशेष से, विवरण से और सिद्धपद के सान्निध्य से शक्तिज्ञान होता है; ऐसा वृद्ध पुरुषों ने कहा है ॥१॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

व्याख्याकारों को, साहित्यकारों को, कवियों को, लेखकों को, वाचकों को और वाङ्मय के किसी भी प्रदेश में विचरने वालों को खजाना-भंडार रूप विपुल शब्दकोष की अति आवश्यकता होती है। किसी भी भाषा के अभ्यास के लिये जिस प्रकार व्याकरण के अभ्यास की आवश्यकता है, उसी तरह भाषा के तलस्पर्शी अभ्यास के लिए उस भाषा के कोष की भी उतनी ही आवश्यकता रहती है।

शब्दकोषों की रचना

अनेक प्राचीन व अर्वाचीन भाषाओं के लिए तत् तद् भाषा के विद्वानों ने शब्दकोषों की रचना करके अपने-अपने कोषग्रन्थ को मुख्य स्थान दिया है। अपनी अति प्राचीन संस्कृत भाषा व प्राकृत भाषा विस्तृत और शब्दबाहुल्य वाली है।

व्युत्पत्ति सम्बन्ध से, सामासिक सम्बन्ध से, प्रायोगिक सम्बन्ध से, धार्मिक-तात्त्विक सम्बन्ध से, सौत्रिक सम्बन्ध से काठिन्य सम्बन्ध से और अनेक विध सम्बन्ध से संस्कृत भाषा या प्राकृत भाषा समलङ्कृत है। अतः संस्कृत भाषा में या प्राकृत भाषा के पठन-पाठन में वह ग्रन्थ पाठ्य पुस्तकों में मुख्यतया समादरणीय है।

संस्कृत साहित्य के या प्राकृत साहित्य के समुपासक भारतवर्ष के प्राचीन या अर्वाचीन अनेक विद्वानों ने एकार्थ, अनेकार्थ अनेक संस्कृत शब्दकोषों की रचना की है।

नामलिङ्गानुशासनकोषकार आचार्य श्री अमरसिंह के समकाल में तथा पूर्वकाल में 'विश्व' 'शाश्वत' 'मेदिनी' 'रभस' इत्यादि संस्कृत में ऐसे अनेक कोष प्रवर्तक हो गये हैं जिनका नामस्मरण भी दुर्लभ है।

(१) जैन कवि श्री धनञ्जय ने 'धनञ्जय नाममाला', 'अनेकार्थ नाममाला' और 'अनेकार्थ निघंटु' यह नाम के तीन कोष-ग्रन्थों का निर्माण किया है।

[illegible] है ।

[illegible] सं. १८५१ में [illegible] है ।

[illegible] है ।

[illegible] है ।

[illegible] है ।

[illegible] है ।

[illegible] है ।

[illegible] है ।

(१०) आचार्य श्री रामचन्द्रसूरि म० सा० ने 'देश्य निर्देश निघण्टु' नामक कोष की रचना की है।

(११) आचार्य श्री जिनदेवसूरि म० सा० ने श्री अभिधानचिन्तामणि कोश के पूरक रूप में 'शिलोञ्छनाममाला' नामक कोष की रचना की है।

(१२) आचार्य श्री पुण्यरत्नसूरि म० सा० ने 'द्वयक्षरकोश' की रचना की है।

(१३) आचार्य श्री हर्षकीर्त्तिसूरि मा० सा० ने 'नाममाला कोष' तथा 'लघुनाममाला कोष' की रचना की है।

(१४) तपागच्छाचार्य श्री सूरचन्द्रसूरि म० सा० के शिष्यरत्न श्री भानुचन्द्रविजयजी ने 'नामसंग्रहकोश' की रचना की है।

(१५) वाचनाचार्य श्री साधुसुन्दरगणिवर ने 'शब्दरत्नाकर कोश' की रचना की है।

(१६) आ० श्री राजेन्द्रसूरि म० सा० ने 'अभिधान राजेन्द्र कोश' की सात भाग में रचना की है।

(१७) आगमोद्धारक आचार्य श्री आनन्दसागरसूरि म० सा० ने 'अल्प परिचित सैद्धान्तिक शब्दकोष' तथा 'लघुतम नाम कोश' की रचना की है।

(१८) स्थानकवासी पंडित मुनि श्री रत्नचन्दजी शतावधानी ने 'जैनागमशब्द' प्राकृत भाषा के लघुकोश की रचना की है। तदुपरान्त 'अर्द्धमागधी कोश' की भी रचना की है।

(१९) पंन्यास श्री मुक्तिविजयजी गणी ने 'शब्दरत्नमहोदधि' (संस्कृत-गुजराती) कोश ग्रन्थ की रचना दो भागों में की है।

(२०) 'पाइयसद्दमहण्णवो' (प्राकृत शब्द-महार्णव) कोष की रचना जैन पंडित श्री हरगोविन्ददास ने की है।

(३४) 'संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ' कोश प्रकाशित हुआ है।

(३५) 'शब्दसागर' कोश भी प्रकाशित हुआ है।

तदुपरान्त-हस्तलिखित 'शब्दरत्न समुच्चय', आयुर्वेदीय औषधि कोष', 'शालिग्रामौषध', 'हलायुधकोष', हिन्दी- 'अनेकार्थसंग्रहनामकोश', न्यायकोष', प्रोफेसर आप्टे कृत छोटी-बड़ी संस्कृत-अंग्रेजी डिक्षनरी' आदि अनेक कोश के ग्रन्थ विद्यमान हैं। संस्कृत व प्राकृत कोशों के कितने ही ग्रन्थों के विविध भाषा में अनुवाद होकर प्रकाशित हो चुके हैं। इसमें भी कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद्हेमचन्द्राचार्य विरचित 'अभिधान चिन्तामणि कोश' पर 'चन्द्रोदयाभिध गूर्जर भाषा-टीका' प्राकृतविद्विशारद सिद्धान्तमहोदधि पू० आ० श्रीमद्विजयकस्तूरसूरीश्वरजी म० श्री द्वारा रची हुई प्रकाशित है।

प्रस्तुत 'सुशीलनाममाला' कोश की रचना आज से दस वर्ष पूर्व कलिकाल सर्वज्ञ श्रीमद् हेमचन्द्रसूरिजी महाराजश्री का बनाया हुआ 'अभिधान चिन्तामणि कोश' जैसा संस्कृत भाषा में एक नूतन कोष बनाने की भावना मेरे अन्तःकरण में स्फुरायमान हुई।

वि० सं० २०२५ की साल में राजस्थान के मरुधर प्रदेश में आया हुआ जावाल में पूज्यपाद् आचार्यदेव श्रीमद्विजयदक्षसूरीश्वरजी गुरु महाराज के साथ में मेरा चातुर्मास हुआ। वहां पर मेरे वयोवृद्ध शिष्य मुनि श्री देवभद्रविजयजी ने इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए प्रेरणा की। पूर्व भावना थी और पुनः प्रेरणा का निमित्त मिला। श्रीअभिधान,चिन्तामणि कोश का आलंबन लेकर सोत्साह 'सुशीलनाममाला' नाम से यह संस्कृत शब्दकोश ग्रन्थ का प्रारम्भ किया। मेरा चलता हुआ इस कार्य को देखकर पू० आ० गु० म० श्री प्रसन्न हुए।

प्रस्तावना

कोशकला भारतीय वाङ्मय की विशिष्टता का प्रतिपादन करती है। किसी भी भापा का व्याकरण तत् तत् भापा का स्वरूप निर्धारण कर उसका नियमन करता है, तो कोश उस भाषा के स्वरूप निर्माण की प्रक्रिया का उद्घाटन करता है। इसीलिए हमारे मनीपियों ने ठीक ही कहा है—

'अष्टाध्यायी जगन्माता ह्यमर कोषो जगत्पिता'

व्याकरण का कार्य भापा के मूल में स्थित तत्वों का उद्घाटन करना है, तो कोश उद्घाटित तत्वों का संक्षिप्त सार्थ स्वरूप प्रकट करता है। संस्कृत एवं प्राकृत साहित्य में कोशकारों की एक बृहत्परम्परा रही हैं, जिनमें जैन एवं बौद्ध कोशकारों का भी अपना विशिष्ट स्थान रहा है। जैन कोशकार कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य के 'अभिधान चिन्तामणि कोश से लेकर प्रस्तुत सुशील नाममाला' में एक सूक्ष्म तात्त्विक तत्वसूत्र ग्रथित-सा दिखाई दे रहा है। परम्परा निर्वाह कर तद्रूप कोश का निर्माण करना तो पिष्टपेपण मात्र रह जाता है, अतः प्रत्येक कोपकार ने अपने अपने मन्तव्यानुसार कोश के क्रम, विभाग एवं स्वरूप का परिवर्तन परिवर्द्धन किया है। 'सुशील नाममाला' में भी ऐसा ही हुआ है, यहाँ जैन दर्शन के नामों का क्रमानुसार उल्लेख किया हुआ है।

कोश के दो प्रकार हैं—ज्ञानकोप एवं शब्दकोप। ज्ञानकोष

प्रथम – देवाधिदेव विभाग।
द्वितीय – देव विभाग।
तृतीय – मर्त्य विभाग।
चतुर्थ – तिर्यग् विभाग।
पंचम – नारक विभाग।
षष्ठ – सामान्य विभाग।
परिशिष्ट – एकाक्षर कोशमाला।

मंगलाचरण में भगवान श्रीमहावीर, गौतमस्वामी, सुधर्मास्वामी की वन्दना कर आचार्य श्री सुशीलसूरिजी ने अपनी गुरु परम्परा की वन्दना करते हुए श्रीनेमिसूरीश्वरजी, श्रीलावण्य सूरीश्वरजी एवं श्रीदक्षसूरीश्वरजी की वन्दना की है, जिनका स्वयं का कोशकला एवं शब्दानुशासन में प्रावीण्य रहा है। तत्पश्चात् भगवती आर्हती भारती की वन्दना की गई है। सूरिजी ने इसमें अपने शिष्य देवभद्रविजयजी का भी स्मरण किया है, जो उनके उदार चरित् का दिग्दर्शन करवाता है।

प्रथम विभाग को जिनशासन के बीज रूप अर्हन्नाम से प्रारम्भ किया है एवं २४ तीर्थङ्करों का ऐक्य प्रतिपादित करने के लिए अर्हद् भगवान के २४ नामों का शिवप्रद पर्यायत्व प्रदर्शित किया है तथा इनकी संज्ञा जैन धर्म एवं दर्शन के चरम लक्ष्य 'शिवत्व' को देने वाली बताई है। ये २४ नाम हृदय कमल की २४ पंखुरियाँ हैं।

तत्पश्चात् गणधर इन्द्रभूति गौतम के नामों का उल्लेख किया गया है। यह एक प्रकार से जैनधर्म कोश है।

इस कोश में जैन जगत की परम्परानुसार तीर्थङ्कर, गणधर श्रुतकेवली, दशपूर्वधर, जिनमाता-पिताओं, यक्ष, यक्षिणी,

प्रथम – देवाधिदेव विभाग।
द्वितीय – देव विभाग।
तृतीय – मर्त्य विभाग।
चतुर्थ – तिर्यग् विभाग।
पंचम – नारक विभाग।
षष्ठ – सामान्य विभाग।
परिशिष्ट – एकाक्षर कोशमाला।

मंगलाचरण में भगवान श्रीमहावीर, गौतमस्वामी, सुधर्मा-स्वामी की वन्दना कर आचार्य श्री सुशीलसूरिजी ने अपनी गुरु परम्परा की वन्दना करते हुए श्रीनेमिसूरीश्वरजी, श्रीलावण्य सूरीश्वरजी एवं श्रीदक्षसूरीश्वरजी की वन्दना की है, जिनका स्वयं का कोशकला एवं शब्दानुशासन में प्रावीण्य रहा है। तत्पश्चात् भगवती आर्हती भारती की वन्दना की गई है। सूरिजी ने इसमें अपने शिष्य देवभद्रविजयजी का भी स्मरण किया है, जो उनके उदार चरित् का दिग्दर्शन करवाता है।

प्रथम विभाग को जिनशासन के बीज रूप अर्हन्नाम से प्रारम्भ किया है एवं २४ तीर्थङ्करों का ऐक्य प्रतिपादित करने के लिए अर्हद् भगवान के २४ नामों का शिवप्रद पर्यायत्व प्रदर्शित किया है तथा इनकी संज्ञा जैन धर्म एवं दर्शन के चरम लक्ष्य 'शिवत्व' को देने वाली बताई है। ये २४ नाम हृदय कमल की २४ पंखुरियाँ हैं।

तत्पश्चात् गणधर इन्द्रभूति गौतम के नामों का उल्लेख किया गया है। यह एक प्रकार से जैनधर्म कोश है।

इस कोश में जैन जगत की परम्परानुसार तीर्थङ्कर, गणधर श्रुतकेवली, दशपूर्वधर, जिनमाता-पिताओं, यक्ष, यक्षिणी,

साधन के साथ जैन दर्शन के नामों का समावेश इस नाममाला की विशेषता है।

परिशिष्ट में अकारादि क्रम से एकाक्षर कोशमाला भी दी गई है, जो इस नाममाला की पूर्णता का प्रतिपादन करती है।

सबसे अन्त में 'सुशील नाममालाओं' में स्थित शब्दों की अकारादि क्रम से अनुक्रमणिका दी गई है, जो विद्वानों एवं जिज्ञासुओं के बड़े काम की वस्तु है।

ग्रंथकार का परिचय

पू० आचार्य श्रीसुशीलसूरिजी म० एक सिद्धहस्त लेखक हैं एवं इन्होंने १०८ छोटे-मोटे ग्रन्थों का सर्जन किया है। उनमें से ५६ तो प्रकाशित हो चुके हैं। इन ग्रन्थों में 'तीर्थङ्कर चरित्र', 'छन्दो-रत्नमाला', षड्दर्शन दर्पण (संस्कृत) 'शीलदूत टीका' एवं 'श्री हेम शब्दानुशासन सुधा' आदि प्रमुख हैं। इतिहास एवं पुरातत्व में भी आपकी रूचि है एवं निरन्तर साहित्य सर्जन से जैन जगत के भण्डार को भर रहे हैं।

आपका जन्म वि० सं० १९७३ में गुजरात के चाणस्मा ग्राम में हुआ था। माता का नाम चंचल बहन व पिता का नाम चतुरभाई ताराचन्द मेहता था। दस वर्ष की लघुवय में ही संयम पथ पर अग्रसर होने की इनकी भावना प्रकट हुई एवं १५ वर्ष की अवस्था में सं० १९८८ में प्रवर्तक प्रवर श्रीमद् लावण्यविजयजी म० के वरदहस्त से दीक्षित हुए। सं० १९८८ में ही बड़ी दीक्षा आचार्य देवेश शासन सम्राट् श्रीमद् विजय नेमिसूरीश्वरजी म० के हाथ सम्पन्न हुई। सं० २००७ में

इस ग्रन्थ के प्रणेता

जैनधर्म दिवाकर-शासनरत्न-तीर्थप्रभावक

परमपूज्य आचार्यदेव श्रीमद्-

विजयसुशीलसूरीश्वरजी म० सा०

आपश्री

शासनसम्राट्-सूरिचक्रचक्रवर्त्ति-तपोगच्छाधिपति प० पूज्य आचार्यमहाराजाधिराज श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वरजी म० सा० के सुविख्यात पट्टालङ्कार-साहित्यसम्राट्-व्याकरणवाचस्पति-शास्त्रविशारद-कविरत्न प० पू० आचार्यप्रवरश्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वरजी म० सा० के प्रधान पट्टधर-व्याकरणरत्न-शास्त्र विशारद-कविदिवाकर-देशनादक्ष प० पू० आचार्यवर्यश्रीमद् विजयदक्षसूरीश्वरजी म० सा० के सहोदर पट्टधर हैं।

आपश्री का जन्म

वि० सं० १९७३ की साल में भाद्र शुद द्वादशी के दिन महागुजरात में आये हुए सुप्रसिद्ध चाणस्मा गांव में चौहाण गोत्र के वीशाश्रीमाली स्व० महेता चतुरभाई ताराचन्दजी की धर्मपत्नि स्व० चंचलबाई की कुक्षी से हुआ था।

आपश्री की भागवती दीक्षा

पूर्वभव की आराधना, इस भव में माता-पिता के द्वारा बाल्यावय में पड़े हुए सुसंस्कार और सद्गुरु के संयोगादि के कारण से दस वर्ष की अवस्था में चारित्र के पुनीत पन्थ में प्रयाण करने की शुभ भावना प्रगट हुई।

वि० सं० १९८८ कार्तिक (मागशर) वद बीज के दिन १५ वर्ष की बालवय में परमपूज्य प्रवर्तक मुनिप्रवर श्रीलावण्यविजय

७. [illegible] से पैदल संघ [illegible] तीर्थ का निकला है।

८. उदयपुर से पैदल संघ श्रीकेसरियाजी तीर्थ का निकला है।

९. सादड़ी से पैदल संघ श्रीकेसरियाजी तीर्थ का निकला है।

१०. जोधपुर से पैदल संघ श्रीगांगाणीजी तीर्थ का निकला है।

११. उदयपुर से पैदल संघ श्रीराणकपुरजी तीर्थ का निकला है।

आपश्री को

१. श्रीजैसलमेर तीर्थ में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोह पूर्वक **'जैनधर्मदिवाकर'** पद से विभूषित किया है।
(वि सं २०२७)

२. रानी स्टेशन में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोह पूर्वक **'मरुधर देशोद्धारक'** पद से समलंकृत किया है।
(वि सं २०२८)

३. श्रीचँवलेश्वरतीर्थ में संघमाला प्रसङ्ग पर श्रीकेकड़ी संघ ने समारोहपूर्वक **'तीर्थप्रभावक'** पद से विभूषित किया है।
(वि सं २०२९)

४ पाली शहर में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोहपूर्वक **'राजस्थान दीपक'** पद से समलंकृत किया है (वि. सं. २०३१)

५. जोधपुर नगर में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोह पूर्वक **'शासनरत्न'** पद से विभूषित किया है (वि सं. २०३१)

आपश्री के सदुपदेश से

(१) श्रीकापरड़ाजी तीर्थ में 'समवसरण मन्दिर' का निर्माण हुआ।

(२) खीमेल में 'श्रीपावापुरी मन्दिर' का निर्माण हुआ।

७. [illegible] से पैदल संघ [illegible]जी तीर्थ का निकला है।

८. उदयपुर से पैदल संघ श्रीकेसरियाजी तीर्थ का निकला है।

९. मादड़ी से पैदल संघ श्रीकेसरियाजी तीर्थ का निकला है।

१०. जोधपुर से पैदल संघ श्रीगांगाणीजी तीर्थ का निकला है।

११. उदयपुर से पैदल संघ श्रीराणकपुरजी तीर्थ का निकला है।

आपश्री को

१. श्रीजैसलमेर तीर्थ में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोह पूर्वक '**जैनधर्मदिवाकर**' पद से विभूषित किया है।
(वि. सं. २०२७)

२. रानी स्टेशन में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोह पूर्वक '**मरुधर देशोद्धारक**' पद से समलंकृत किया है।
(वि. सं. २०२८)

३. श्रीचँवलेश्वरतीर्थ में संघमाला प्रसङ्ग पर श्रीकेकड़ी संघ ने समारोहपूर्वक '**तीर्थप्रभावक**' पद से विभूषित किया है।
(वि. सं. २०२९)

४ पाली शहर में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोहपूर्वक '**राजस्थान दीपक**' पद से समलंकृत किया है (वि. सं. २०३१)

५. जोधपुर नगर में प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्रीसंघ ने समारोह पूर्वक '**शासनरत्न**' पद से विभूषित किया है (वि. सं. २०३१)

आपश्री के सदुपदेश से

(१) श्रीकापरड़ाजी तीर्थ में 'समवसरण मन्दिर' का निर्माण हुआ।

(२) खीमेल में 'श्रीपावापुरी मन्दिर' का निर्माण हुआ।

इस ग्रन्थ की 'प्रस्तावना' प्रोफेसर श्री सोहनलालजी पटनी सिरोही वालों ने प्रौढ भाषा में सुन्दर लिखी है, इसलिए हम उनके भी आभारी हैं। प० पू० आ० म० सा० का संक्षिप्त परिचय लिखने वाले विधिकारक श्री मनोजकुमार बाबुलालजी हरण के भी हम आभारी हैं।

इस ग्रंथ के सम्बन्ध में अपनी अपनी तरफ से सुन्दर अभि-प्राय देने वाले पू० आचार्य महाराजादि मुनि भगवन्तों का, विद्वानों और प्रोफेसरों आदि का भी हम आभार मानते हैं।

इस विशालकाय ग्रन्थ प्रकाशित करने में द्रव्य सहाय दाता भाई-बहनों को धन्यवाद देते हैं।

卐 ॐ ह्रीँ अर्हं नमः 卐

*** प्रातःकालीन प्रभु प्रार्थना ***

॥ मङ्गलाष्टकम् ॥

मङ्गलं सिद्धचक्रं वै, मङ्गलं परमेष्ठिनः ।
मङ्गलं ऋषभो देवो, मङ्गलमजितो जिनः ॥१॥
मङ्गलं सम्भवो नाथो, मङ्गलमभिनन्दनः ।
मङ्गलं सुमतिस्वामी, पद्मप्रभश्च मङ्गलम् ॥२॥
मङ्गलं श्रीसुपार्श्वो वै, चन्द्रप्रभः सुमङ्गलम् ।
मङ्गलं सुविधि देवो, मङ्गलं शीतलो जिनः ॥३॥
श्रेयांसो मङ्गलं श्रेष्ठो, वासुपूज्यश्च मङ्गलम् ।
मङ्गलं विमलो देवो, जिनोऽनन्तोऽपि मङ्गलम् ॥४॥
मङ्गलं धर्मनाथः श्री- शान्तिनाथश्च मङ्गलम् ।
मङ्गलं कुन्थुनाथो वै, अरनाथोऽपि मङ्गलम् ॥५॥
मङ्गलं मल्लिनाथो वै, मङ्गलं मुनिसुव्रतः ।
मङ्गलं नमिनाथः श्री- नेमिनाथश्च मङ्गलम् ॥६॥
मङ्गलं पार्श्वनाथः श्री- महावीरश्च मङ्गलम् ।
मङ्गलं गौतमस्वामी, सुधर्माद्यपि मङ्गलम् ॥७॥
मङ्गलं स्थूलभद्राद्या, गुरुदेवाश्च मङ्गलम् ।
मङ्गलं श्रुतदेवी वै, जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥८॥
यो मङ्गलाष्टकमिदं सुप्रभातकाले,
नित्यं च निर्मलमनः शुचिधीरधीते ।
सद्भाग्यशीलकलितो हृतसर्वविघ्नो,
विश्वे स मङ्गलमलं लभते सुशीलः ॥९॥

॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु श्रीसंघस्य ॥

[रचयिता – विजय सुशील सूरिः]

युगप्रधानकल्पं चा,–ऽऽबाल्यतो ब्रह्मचारिणम् ।
श्रीतीर्थोद्धारकं सूरि,–सम्राजं नेमिसूरिपम् ॥३॥

शब्दानुशासने वाच–स्पतिं शास्त्रविशारदम् ।
प्रगुरुं कविरत्नं स्वं, नत्वा लावण्यसूरिपम् ॥४॥

कविदिवाकरं शास्त्र,–विशारदं सहोदरम् ।
शब्दानुशासने रत्नं, सद्‌गुरुं दक्षसूरिपम् ॥५॥

आर्हतीं भारतीं भव्यां, स्मृत्वा श्रीश्रुतदेवताम् ।
विज्ञप्त्या स्वविनेयस्य देवभद्राभिधस्य वै ॥६॥

सुशीलनाममालेयं, सुशीलसूरिणा मुदा ।
बालबोधाय दृब्धाऽभिधानचिन्तामणि धिता ॥७॥

व्यक्तः[४] सुधर्म[५] मण्डित[६], —मौर्यपुत्रा[७]-ऽकम्पितः[८] ।
अचलभ्रातृ[९]-मेतार्य[१०], -प्रभासा[११] गणधारिणः ॥१६॥ [युग्मम्]

❋ श्रुतकेवलिनामानि ❋

अन्तिमः केवली जम्बू[१],—स्वामी श्रीवीरशासने ।
जातोऽथ प्रभवस्वामी[१], शय्यम्भवा[२]भिध स्तथा ॥१७॥

यशोभद्र[३]श्च सम्भूति[४]—विजयो भद्रबाहुकः[५] ।
स्थूलभद्रो[६]ऽन्तिमश्चैते, श्रुतकेवलिनो हि षट् ॥१८॥

❋ दशपूर्वधरनामानि ❋

महागिरिः[१] सुहस्ती[२] च, सूरिः श्रीगुणसुन्दरः[३] ।
श्यामार्यः[४] स्कन्दिलार्य[५]श्च, रेवतीमित्र[६]सूरिपः ॥१९॥

श्रीधर्मा[७] भद्रगुप्त[८]श्च, श्रीगुप्तो[९] वज्रसंज्ञकः[१०] ।
आर्याः सूरीश्वरा जाता, दशैते दशपूर्विणः ॥२०॥

❋ तीर्थङ्कराणां पितृनामानि ❋

नाभिराड्[१] जितशत्रु[२]श्च, जितारिः[३] संवरो[४] नृपः ।
मेघो[५] धरो[६] धराधीशः, प्रतिष्ठो[७]ऽप्रतिमो नृपः ॥२१॥

महासेनो[८] महाराजा, सुग्रीवो[९] वसुधाधिपः ।
दृढरथो[१०]नृपो विष्णु[११], -र्वसुपूज्यः[१२]प्रजापतिः ॥२२॥

कृतवर्मा[१३] नृपो सिंह—सेनो[१४] भानु[१५] र्नरेश्वरः ।
विश्वसेन[१६] स्तथा सूरः[१७], सुदर्शन[१८]श्च कुम्भराट्[१९] ॥२३॥

[योगस्य षष्ठाङ्गं धारणा, सप्तमाङ्गं च ध्यानम्]

क्वचिद् ध्येये तु चित्तस्य, स्थिरबन्धोहि धारणा[१] ।
ध्यानं तद् विषये चैक-प्रत्ययसन्तति मंतम् ॥६१॥

[योगस्याष्टमाङ्गं समाधिः]

समाधि श्च तदेवार्थ-मात्राभासनरूपकम् ।
एवं योगोष्टधा प्रोक्तः, यमाद्यङ्गाष्टकेन च ॥६२॥

※ कल्याण मङ्गलादिशुभनामानि ※

श्रेयः[१] श्वःश्रेयसं[२] क्षेमं,[३] कुशलं[४] श्वोवसीयसम्[५] ।
भावुकं[६] भविकं[७] भव्यं[८], भद्रं[९] मद्रं[१०] तथा शुभम्[११] ॥६३॥

प्रशस्तं[१२] सुकृतं[१३] शस्तं[१४], सूनृतं[१५] च ततः परम् ।
कल्याणं[१६] मङ्गलं[१७] चैव, भद्रं[१८] काम्यं[१९] तथा शिवम्[२०] ॥६४॥

इति श्रीतपोगच्छाधिपति - सूरिचक्रचक्रवर्त्ति - भारतीयभव्यविभूति-चिरंतनयुगप्रधानकल्प - सर्वतन्त्रस्वतन्त्र - श्रीकदम्बगिरिप्रमुखानेकप्राचीन तीर्थोद्धारक-पञ्चप्रस्थानमयसूरिमन्त्रसमाराधक-शासनसम्राट् - जगद्गुरु-भट्टारकाचार्यमहाराजाधिराज - श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वर - सुप्रसिद्ध पट्टालङ्कार - व्याकरणवाचस्पति-शास्त्रविशारद-कविरत्न-साहित्यसम्राट् सार्धसप्तलक्षश्लोक प्रमाण नूतन संस्कृत साहित्यसर्जक-परमशासन प्रभावकाचार्यदेवेश श्रीमद् विजयलावण्यसूरीश्वर पट्टधर-व्याकरणरत्न-शास्त्रविशारद- कविदिवाकर-देशनादक्ष - शासनप्रभावकाचार्यदेव - श्रीमद् विजयदक्षसूरीश्वर - पट्टधर-साहित्यरत्न-शास्त्रविशारद-कविभूषण-पञ्च प्रस्थानमयसूरिमन्त्रसमाराधक शासनप्रभावकाचार्य श्रीमद्विजयसुशील सूरिणा विरचितायां सुशीलनाममालायां प्रथमो देवाधिदेवविभागः समाप्तः ॥१॥

द्वीपा[९] दिशो[१०] दशाश्चैते, भवनपतयो मताः।
श्री असुरकुमाराख्य-जातिका निखिला अपि ॥७२॥

※ व्यन्तरदेवाः ※

स्युः पिशाचा[१] श्च भूता[२]श्च, यक्षा[३] श्च राक्षसा[४] स्तथा।
तत श्च किन्नरा[५] देवाः, किंपुरुषा[६] महोरगाः[७] ॥७३॥

गन्धर्वजातिका[८] देवा, व्यन्तरा चाष्टधा मतः।
व्यन्तरान्तर्गता देवा अष्टापि वाणव्यन्तराः[१] ॥७४॥

※ ज्योतिष्कदेवाः ※

चन्द्रा[१] अर्का[२] ग्रहा[३] श्चैवं, नक्षत्राणि[४] च तारकाः[५] ।
ज्योतिष्का देवताः पञ्च, विश्वे विश्वप्रकाशकाः ॥७५॥

※ वैमानिकदेवाः ※

देवाः वैमानिकाः कल्प-भवा द्वादश ते त्वमी[६] ।
सौधर्मजा[१] स्तथैशान[२]-जाता सनत्कुमारजाः[३] ॥७६॥

माहेन्द्रकल्पजा[४]ब्रह्म[५]- जा श्च लान्तककल्पजाः[६] ।
शुक्रजा[७]श्च सहस्रार[८]- जा स्तथाऽऽनतकल्पजाः[९] ॥७७॥

प्राणतकल्पजा[१०] देवा, आरणकल्पजा[११]स्तथा।
अच्युतकल्पजा[१२]श्चैते, कथिता ज्ञानिभिः खलु ॥७८॥

१— 'अणपन्नी - पणपन्नी - इसीवादी - भूतवादी - कंदित - महाकंदित कुंड - पतङ्ग' इत्यष्टापि वाणव्यन्तरदेवाः।

❀ चन्द्र सूर्यग्रहणनामानि ❀

सूर्येन्द्वो राहुग्रासे[1] स्या-दुपराग[2] उपप्लवः[3] ।

❀ उपद्रवनामानि ❀

उपसर्ग[1] स्त्वरिष्टं[2] स्या-दुपलिङ्ग[3] मुपद्रवः[4] ॥११८॥
उत्पात[5]श्च तथाऽजन्य[6]-मीति[7]श्च तदनन्तरम् ।
एते चोपद्रवाः ज्ञेयाः, वह्नचुत्पात[1] उपाहितः[2] ॥११९॥

❀ कालनामानि ❀

कालो[1] दिष्टो[2] ऽप्यनेहाः[3] स्यात्, समयः[4] सर्वमूषकः[5] ।
कालो द्विधाऽवसर्पिण्यु-त्सर्पिणीकालभेदतः ॥१२०॥

षडरा अवसर्पिण्या-मुत्सर्पिण्यां त एव वै ।
एवं द्वादशभिश्चारैः, वर्तते कालचक्रकम् ॥१२१॥

अष्टादश निमेषाः स्युः, काष्ठा[1] काष्ठाद्वयं[1] भवेत् ।
लवस्तु तैः कला[1] पञ्च-दशभि रपि जायतान् ॥१२२॥
लेश[1] स्तु तद्द्वयेनैव, तैः पञ्चदशभिः क्षणः[1] ।
नाडिका[1] तु क्षणैः षड्भिः, घारिका[2] घटिका[3] च सा ॥१२३॥
तद्द्वयेन मुहूर्त[1]स्तु, तया तैरपि त्रिंशता ।
अहोरात्रस्तु सम्पूर्णं, दिवसः कथितो बुधैः ॥१२४॥

❀ दिवसनामानि ❀

अह[1] दिन[2] ऽञ्च घस्र[3] द्यु[4], दिवसो[5] [illegible] [illegible] ।

❀ प्रभातनामानि ❀

प्रभातं[1] तु विभातं[2] च, प्रत्यूषं[3] [illegible] ॥[illegible]॥

ज्योत्स्नी[1] तु पूर्णिमारात्रि[2] स्तमिस्रा[1] दर्शयामिनी[2] ।
निशासमूह बोधार्थे, गणरात्रो[1] निशागणः[2] ॥१३३॥

पक्षिणी[1] पक्षतुल्याभ्या-महोभ्यां वेष्टिता क्षपा ।
ज्ञातव्या रजनीद्वन्द्वं[1], गर्भकं[2] तु निशामुखम्[1] ॥१३४॥

दिनात्ययः[2] प्रदोष[3] श्च, याम[1] स्तु प्रहर[2] स्तथा ।
निशीथ[1] स्त्वर्धरात्र[2]श्च, निःसंपातो[3] महानिशा[4] ॥१३५॥

उच्चन्द्र[1] स्त्वपररात्र[2]-स्त्वन्धकारं[3] रजोवलम्[4] ।
तमिस्रं[5] तिमिरं[6] ध्वान्तं[7], तथा ऽन्धतमसं[8] तमः[9] ॥१३६॥

नीलपङ्को[10] निशावर्म,[11], दिनाण्डं[12] दिनकेसरः[13] ।
सन्तमसं[14] तथा वृत्रो,[15] ऽवतमसं[16] दिगम्बरः ॥१३७॥

वियद्भूति[18] श्च भूच्छाया[19], रात्रिरागः[20] स्मृतो बुधैः ।
तुल्यनक्तंदिवंकाले, विषुवद्[1] विषुवं[2] च यत् ॥१३८॥

पञ्चदशदिनानाञ्च, पक्षः[1] स बहुलो[1]ऽसितः ।
कृष्णो निशाह्वयः ख्यातः, शुक्लो दिशाह्वय स्तथा ॥१३९॥

तिथि[1] स्तु कर्मवाटी[2] स्यात्, पक्षतिः[1] प्रतिपत्[2] तथा ।
पञ्चदश्यौ[1] यज्ञकालौ[2], पक्षान्तौ[3] चापि पर्वणी[4] ॥१४०॥

भूतेष्टापञ्चदश्यो यद्, पर्वमूलं[1] तदन्तरम् ।
प्रतिपत् पर्वसन्धिः स पञ्चदश्यो र्यदन्तरम् ॥१४१॥

पूर्णिमा[1] पौर्णमासो[2] स्यात्, राका[1] पूर्णे क्षपाकरे ।
कलाहीने त्वनुमति[1], मार्गशीर्ष्या[1] ऽऽग्रहायणी[2] ॥१४२॥

दुर्दिनं[1] वार्दलं[2] चैव, ज्ञायतां मेघजं तमः ।
धारासम्पात[1] आसारः[2], महावृष्टि[3] स्तथैवच ॥१६९॥

ज्ञायतां वेगवान् वर्षो, वातास्तं वारि शीकरः[1] ।
वृष्टि[1] श्च वर्षणं[2] वर्षं[3], तदभाव स्त्ववग्रहः[1] ॥१७०॥

अवग्राह[2] श्च वग्राहो[3], वग्रहः[4] कथ्यते बुधैः ।
मेघास्थिमिञ्जिका[1] चैव, वर्षाबीजं[2] घनोपलः[3] ॥१७१॥

करक[4] स्तोयडीम्भो वै, बीजोदक[6] मिरावरम्[7] ।
मेघास्थिपुञ्जिका[8] चैव, मेघकफ[9] इराम्बरम्[10] ॥१७२॥

अम्बुघन[11] श्च नामानि, कथ्यन्ते किल पण्डितैः ।

※ दिङ्नामानि ※

आशा[1] चैव हरित्[2] काष्ठा[3], स्याद् दिक्[4] तथा ककुप्[5] किल ॥१७३॥

दिक् पूर्वा[1] तु तथा प्राची[2], स्यादऽपरेतरा[3] तथा ।
दक्षिणा[1] तु अवाची[2] स्या-दपाची[3] चोत्तारेतरा[3] ॥१७४॥

प्रतीची[1] पश्चिमा[2] तु स्याद्, पूर्वेतरा[3] तथैव च ।
उदीची[1] तूत्तरा[2] दिग् च, स्यादऽपाचीतरा[3] तया ॥१७५॥

विदिक्[1] त्वपदिशं[2] चैव, प्रदिक्[3] च कथ्यते बुधैः ।
दिश्यं दिग्भवमस्त्वन्य- प्राग्[1] प्राचीन[2] मेवस्यात् ॥१७६॥

उदीचीनं[1] मुदग्जातं[2] प्राक् प्राचीनं[2] तथा भवेत् ।
स्यात् प्रत्यक्[1] तु प्रतीचीनं[2], तिर्यग्दिशां तु नायकाः ॥१७७॥

पौलोमीश:[३२] सुता काङ्क्षी[३३], शचीपति:[३४] स्वर्गपति:[३५] ।
सुरेश[३६] श्च सुरस्त्रीश:[३७], नाकेशो[३८] ऽसन्महा[३९] तथा ।।१८६।।

शचीश[४०]श्च शपीवि[४१]श्च, वराणो[४२] वज्रदक्षिण:[४३] ।
नेरी[४४] सहस्रनेत्र[४५] श्च, वन्दीक:[४६] देवदुन्दुभि:[४७] ।।१८७।।

उग्रधन्वा[४८] जयो[४९] जिष्णु:[५०], पुरुहूतो[५१] ऽपर:पति[५२] ।
खदिरो[५३] ऽपि किरणालात:[५४],
खिदिरो[५५] मिहिर[५६]स्तथा ।।१८८।।

ऋभुक्षा:[५७] वाहुदन्तेय:[५८], त्रायस्त्रिशपति[५९] स्तथा ।
वयुनो[६०] गौरवास्कन्दी[६१], हर्यश्वो[६२] हरिमान्[६३] तथा ।।१८९।।

नरी[६४] प्राचीनवर्हि[६५] श्च, वृद्धश्रवा[६६]स्तथैव च ।
प्राचीश:[६७] पूर्वदिक् स्वामी[६८], संक्रन्दन स्तथैव[६९]च ।।१९०।।

इन्द्रवाचक नामानि, ज्ञातव्यानि बुधै र्जनै: ।
इन्द्रस्य तु द्विष: पाक:[१] पुलोमा[२] नमुचि[३] स्तथा ।।१९१।।

वृत्रो[४] वलो[५] ऽद्रयो[६] जम्भो[७]-विख्याता इन्द्र शत्रव: ।
इन्द्रस्य तु प्रियेन्द्राणी[१], पौलोमी[२] जयवाहिनी[३] ।।१९२।।

शतावरी[४] महेन्द्राणी[५], चारुधारा[६] शची[७] तथा ।
शक्राणी[८] चापि ज्ञातव्या, तनयस्तु जय[१] स्तथा ।।१९३।।

जयन्तो[२] जयदत्त[३] श्च, सुता तु तविषी[१] पुन: ।
जयन्ती[२] तविषी[३] तिस्रो, हय उच्चै: श्रवा[१] महान् ।।१९४।।

स्वर्गिवध्व[1] स्तु स्वर्वध्व:[2], स्वर्गस्त्रिय:[3] सुरस्त्रिय:[4] ।
अप्सरसो[5] ऽप्सरा[6] श्चापि, स्ववेंश्या[7] उर्वशीमुखाः ॥२०५॥

हाहादय स्तु गान्धर्वा[1], गन्धर्वा[2] देवगायना:[3] ।

❊ यमराजनामानि ❊

यमराजो[1] यम:[2] कालो[3], यमराट्[4] यमुनाग्रज:[5] ॥२०६॥

दक्षिणाशापति[6] र्मृत्यु:[7], कालकूट[8] स्तथा ऽन्तक:[9] ।
श्राद्धदेवो[10] ऽर्कसूनु[11] श्च, कालिन्दीसोदर[12] स्तथा ॥२०७॥

धर्मराजो[13] महासत्य:[14], शमनो[15] महिषध्वज:[16] ।
कीनाशो[17] वै कृतान्त[18] श्च, हरि[19] र्दण्डधर[20] स्तथा ॥२०८॥

शीर्णांहि[21] श्चापि शीर्णाङ्घ्रि[22], पुराणान्त[23] स्तथैव च ।
समवर्ती[24] यमश्चापि, धूमोर्णा[1] तु यमप्रिया ॥२०९॥

पुरी संयमिनी[1] तस्य, प्रतीहार स्तु वैध्यत:[1] ।
दास स्तस्य महाचण्ड:[1], चण्ड[2] स्तथा यमस्य वै ॥२१०॥

लेखक स्तु पुन र्ज्ञेय:, चित्रगुप्ता[1] भिध: किल ।

❊ राक्षसनामानि ❊

राक्षस[1] आशरो[2] रक्ष:[3], कीनाश:[4] कौणप[5] स्तथा ॥२११॥

क्रव्याद:[6] कर्बुर:[7] क्रव्यात्[8], रक्तग्रीव[9] श्च नैऋत:[10] ।
पुण्यजन,[11] पलाद[12] श्च, इनुपो[13] निकसात्मज:[14] ॥२१२॥

गुह्यकेश[२८] श्च गुह्येशः[२९], प्रमोदित[३०] स्सितोदरः[३१] ।
ऐलवि[३२]लैकपिङ्गी[३३] वै, रत्नकरः[३४] पिशाचकी[३५] ॥२२१॥

इच्छावसु[३६] रीशसखः[३७], सन्ति नामानि शास्त्रके ।
विमानं पुष्पकं[१] तस्य, वनं चैत्ररथं[२] तथा ॥२२२॥

पुरी वस्वौकसारा[१] च, वसुप्रभा[२] ऽलका[३] तथा ।
वसुसारा[४] प्रभा[५] चोक्ता, पुत्रोऽस्ति नलकूवरः ॥२२३॥

ज्ञेयः कुवेरदेवस्य, इत्येवं कथितं बुधैः ।

※ धननामानि ※

धनं[१] वित्तं[२] तथा द्रव्यं[३], द्रविणं[४] विभवो[५] वसु[६] ॥२२४॥

पृक्थ[७]-मृक्थं[८] च रिक्थं[९] स्वं[१०],स्वापतेयं[११] च रा[१२] स्तथा ।
ऋक्ण[१३]-मर्थो[१४] हिरण्यं[१५] स्याद्,
सारं[१६] द्युम्नं[१७] तथोच्यते ॥२२५॥

※ निधाननामानि ※

निधानं[१] तु कुनाभि[२] श्च, शेवधि[३] र्निधि[४] रित्यपि ।

※ निधिभेदाः ※

महापद्म[१] स्तथा पद्मः[२], शङ्ख[३]-मकर[४]-कच्छपाः[५] ॥२२६॥

मुकुन्दः[६] कुन्द[७]-नीली[८] च, चर्चा[९] श्च निधयो नव ।

※ जैनमतानुसारं निधिनाम ※

नैसर्पः[१] पाण्डुकः[२] श्चैव, पिङ्गलः[३] सर्वरत्नकः[४] ॥२२७॥

गजा[४४]-ऽनङ्ग[४५]-पुरा[४६]-पूषा-[४७]
काला[४८]-ऽन्धका[४९]-मखा[५०]सुहृत् ।
अर्धकालो[५१] जगद्रोणि[५२], कोणवादी[५३] नृवेष्टनः[५४] ॥२३५॥

अन्धकारिः[५५] अहिर्बुध्नः[५६], समिरो[५७] धर्मवाहनः[५८] ।
पशुः[५९] श्मशानवेश्मा[६०] वै, सर्वज्ञो[६१] वृषलाञ्छनः[६२] ॥२३६॥

शिपिविष्टो[६३] ऽष्टमूर्ति[६४]श्च, घना[६५]-ऽद्द[६६]वाहनी मृडः[६७] ।
[illegible]हृगेकपात्[६९] त्रिदृक्[७०], महानादो[७१] दशाव्ययः[७२] ॥२३७॥

अनेकलोचनो[७३] धूमः[७४], नाट्यप्रियो[७५] महानटः[७६] ।
[illegible][७७] नराधारः[७८], दिशांप्रियतम[७९] स्तथा ॥२३८॥

[illegible][८०] कटप्रू[८१] श्च, कूटकृद्[८२] कपिलाञ्जनः[८३] ।
[illegible][८४] [illegible]त्रिरयंङ्कः[८५], मिहिरागो[८६] महाम्बकः[८७] ॥२३९॥

योगी[८८] जोटी[८९] च जोटीङ्गः[९०], भवो[९१] भूरि[९२]श्च भैरवः[९३] ।
उग्रः[९४] कालः[९५] उन्नन्द[९६] श्च, रेरिहाणो[९७] जटाधरः[९८] ॥२४०॥

प्रमथ[९९]-पशु[१००]-भूतो[१०१]-मा-[१०२],पति.पिङ्गेक्षण[१०३]स्तथा ।
[illegible][१०४]-[illegible][१०५]-भूत[१०६]नाथः,
गोपीनाथ[१०७]स्तथा [illegible]तलः[१०८] ॥२४१॥

[illegible][१०९] [illegible] च, [११०] कामध्वंसी[१११] च हृत्करः[११२] ।
[illegible][११३] [illegible][११४] स्थाणु[११५],
यमजित्[११६] च मृत्युञ्जयः[११७] ॥२४२॥

[illegible] वै, तथा स्यात् [illegible][१२०] ।
[illegible] ॥२४३॥

[illegible][37] [illegible][38] च शर्वाणी[39], सावित्री[40] सिंहवाहना[41] ।
[illegible][42] शुम्भ-मथनी[43] भूतनायिका[44] ॥२५१॥

[illegible][45] भीमा[46], गार्गी[47] च गोकुलोद्भवा[48] ।
[illegible][49] [illegible][50] वै, पुत्री[51] क्षेमङ्करी[52] प्रभा[53] ॥२५२॥

[illegible][54] [illegible][55] [illegible][56], विकराला[57] यमस्वसा[58] ।
[illegible][59] [illegible][60], कालक्षमा[61] करालिका[62] ॥२५३॥

[illegible][63] [illegible][64] [illegible][65] त्रिलंका[66] कुलदेवता[67] ।
[illegible][68] [illegible][69], परब्रह्मचारिणी[70] ॥२५४॥

[illegible][71] [illegible][72], [illegible][73] [illegible][74] जया[75] ।
[illegible]
[illegible] ॥२५५॥

द्वादशाक्ष[३०] स्तथा बाहु-लेय[३१] श्च शिखिवाहनः[३२] ।
षाण्मातुरो[३३] विशाख[३४] श्च,
स्याद् मयूररथो[३५] गुहः[३६] ॥२६७॥

❋ शिवभृङ्गीगणादिनामानि ❋

भृङ्गिरिटी[१] च भृङ्गी[२] वै, चर्मी[३] भृङ्गीरिटि[४] स्तथा ।
नाड्य[५]-स्थि[६] विग्रही चोक्तः, पुनः कूष्माण्डका[१]भिधः ॥२६८॥

केलिकिल[२] स्तथा प्रोक्तो, नन्दिश[१] स्तण्डु[२]-नन्दिनौ[३] ।
शङ्करस्य गणाश्चैते, कथिताः पण्डितैः किल ॥२६९॥

❋ ब्रह्मणो नामानि ❋

ब्रह्मा[१] चतुर्मुखः[२] शम्भुः[३], स्रष्टा[४] शतधृति[५] ध्रुवः[७] ।
विश्वरेताः[८] जगत्कर्त्ता[६], पितामहः[१०] प्रजापतिः[११] ॥२७०॥

विधि[१२] र्वेधाः[१३] विधाता[१४] वै, वेदगर्भः[१५] पुराणगः[१६] ।
भवान्तकृत्[१७] स्वयम्भू[१८] श्च, सनत्[१९] सरोरुहासनः[२०]॥२७१॥

स्थविर[२१] श्च शतानन्दः[२२], सात्त्विकः[२३] कमनः[२४] कविः[२५] ।
द्रुहिणो[२६] द्रुघणो[२७] धाता[२८],
नाभिजन्मा[२९] विरिञ्चनः[३०] ॥२७२॥

कश्च[३१] कमलजन्मा[३२] च, नाभिभूः[३३] पद्मभू[३४] स्तथा ।
आत्मभूः[३५] आत्मयोनि[३६] श्च, पुरुषः[३७] पुरुपासनः[३८]॥२७३॥

अजितो[५५] देवकीसूनुः[५६], सुषेणः[५७] पांशुजालिकः[५८] ।
खण्डास्यो[५९] जितमन्यु[६०] श्च, सुवृषः[६१] समितिञ्जयः[६२] ॥२८२॥

षड्बिन्दु[६३] र्योगनिद्रालुः[६४], वृषाक्षो[६५] वायुवाहनः[६६] ।
वर्द्धमानो[६७] वरारोहो[६८], रन्तिदेवो[६९] वृकोदरः[७०] ॥२८३॥

यदुनाथो[७१] गदा[७२]-चक्र[७३]- शार्ङ्ग[७४]-श्रीवत्स[७५]-शङ्खभृत्[७६] ।
दशार्हः[७७] केशवः[७८] कृष्णः[७९],
विश्वभुग्[८०] शिवकीर्तनः[८१] ॥२८४॥

हृषीकेशो[८१] महाहंसः[८२], बहुरूपो[८३] महाक्रमः[८४] ।
बहुशृङ्गो[८५] वरारोहो[८६], महामायो[८७] महातपाः[८८] ॥२८५॥

हरिः[८९] सौरिः[९०] हृषीकेशः[९१],
शौरिः[९२] सोमः[९३] स्वभूः[९४] स्थिरः[९५] ।
पुनर्वसुः[९६] शतावर्त्तः[९७], शद्रु[९८] वंशः[९९] सुयामुनः[१००] ॥२८६॥

अद्रि[१०१] रिन्द्रानुजो[१०२] ऽज[१०३] श्च,
पद्मेशयो[१०४] वृषाकपिः[१०५] ।
कर्माकर्मा[१०६] महानाथः[१०७], उरुगाय[१०८] उरुक्रम[१०९] ॥२८७॥

वैकुण्ठः[११०] कालकुण्ठ[१११] श्च, विष्वक्सेनो[११२] महीधरः[११३]।
पद्म[११४]-लोक[११५]-ब्रह्म[११६]नाभाः,
सूक्ष्मनाभः[११७] सुरोत्तमः[११८] ॥२८८॥

कामदेवो[११९] वासुदेव[१२०] श्च, मुञ्जकेशो[१२१] कुमोदकः[१२२] ।
दामोदर[१२३] श्च चतुर्दंष्ट्रः[१२४],
त्रिधामा[१२५] ऽपि त्रिविक्रमः[१२६] ॥२८९॥

अजितो[५५] देवकीसूनुः[५६], सुषेणः[५७] पांशुजालिकः[५८] ।
खण्डास्यो[५९] जितमन्यु[६०] श्च, सुवृषः[६१] समितिञ्जयः[६२] ॥२८२॥

पद्‌बिन्दु[६३] र्योगनिद्रालुः[६४], वृषाक्षो[६५] वायुवाहनः[६६] ।
वर्द्धमानो[६७] वरारोहो[६८], रन्तिदेवो[६९] वृकोदरः[७०] ॥२८३॥

यदुनाथो[७१] गदा[७२]-चक्र[७३]- शार्ङ्ग[७४]-श्रीवत्स[७५]-शङ्खभृत[७६] ।
दशार्हः[७७] केशवः[७८] कृष्णः[७९],
विश्वभुग्[८०] शिवकीर्तनः[८१] ॥२८४॥

हृषीकेशो[८१] महाहंसः[८२], बहुरूपो[८३] महाक्रमः[८४] ।
बहुशृङ्गो[८५] वरारोहो[८६], महामायो[८७] महातपाः[८८] ॥२८५॥

हरिः[८९] सौरिः[९०] हृषीकेशः[९१],
शौरिः[९२] सोमः[९३] स्वभूः[९४] स्थिरः[९५] ।
पुनर्वसुः[९६] शतावर्त्तः[९७], शद्रु[९८] र्वंशः[९९] सुयामुनः[१००] ॥२८६॥

अद्रि[१०१] रिन्द्रानुजो[१०२] ऽज[१०३] श्च,
पद्मेशयो[१०४] वृषाकपिः[१०५] ।
ऊर्ध्वकर्मा[१०६] महामायः[१०७], उरुगाय[१०८] उरुक्रम[१०९] ॥२८७॥

वैकुण्ठः[११०] कालकुण्ठ[१११] श्च, विष्वक्सेनो[११२] महीधरः[११३]।
धर्म[११४]-लोक[११५]-ब्रह्म[११६]नाभाः,
सूक्ष्मनाभः[११७] पुरोत्तमः[११८] ॥२८८॥

जनार्दनो[११९] वासुदेव[१२०] श्च, मुञ्जकेशो[१२१] कुमोदकः[१२२] ।
दामोदर[१२३] श्च चतुर्दंष्ट्रः[१२४],
त्रिधामा[१२५] ऽति त्रिविक्रमः[१२६] ॥२८९॥

मधु[१] र्मन्दो[२] मुरः[३] केशी[४], हिरण्यकशिपु:[५] बलि:[६] ।
अरिष्टः[७] शिशुपाल[८] श्च, द्विविदो[९] यमलार्जुनौ[१०] ॥२९८॥

कैटभः[११] कालियः[१२] कंसः[१३], नरकः[१४] शकट[१५] स्तथा ।
पूतना[१६] कालनेमि[१७] श्च, हयग्रीव[१८] श्च धेनुकः[१९] ॥२९९॥
राहुः[२०] साल्व[२१] श्च चाणूरो[२२], बाणो[२३] वध्योऽस्य मन्यते ।
वाहनं वैनतेय[१] स्तु, शङ्खो ऽस्य पाञ्चजन्यकः[१] ॥३००॥

श्रीवत्स[१]नामकोऽङ्कस्तु, कृपाणोऽस्यास्ति नन्दकः[१] ।
कौमोदकी[१] गदा विष्णोः, ज्ञेया कौमोदकी[२] तथा ॥३०१॥

चापं शार्ङ्गं तु विष्णोः स्यात्, तथा चक्रं सुदर्शनः[१] ।
स्यमन्तको[१] मणि र्हस्ते, भुजमध्ये च कौस्तुभः[१] ॥३०२॥

पिता तु वसुदेवो[१] ऽस्य, स एवानकदुन्दुभिः[२] ।
दिन्दुः[३] भूकश्यप[४] श्चेति, कथ्यते कोविदैः सदा ॥३०३॥

※ बलदेवनामानि ※

बलदेवो[१] बलो[२] रामः[३], बलभद्रो[४] बली[५] हली[६] ।
प्रलापी[७] कामपाल[८] श्च, सात्वतो[९] ऽपि सितासितः[१०] ॥३०४॥

मुसली[११] काललक्ष्मा[१२] च, कालिन्दीकर्षण[१३] स्तथा ।
भद्रचलन[१४]-भद्राङ्गौ[१५], प्रलम्बघ्नः[१६] प्रलम्बभिद्[१७]॥३०५॥

अनन्तो[१८] नीलवस्त्र[१९] श्च, सङ्कर्षण[२१]-ककुण्डलौ[२२]।
यमुनाभित्[२३] तथा फालः[२४],
रुक्मिभिद्[२५] रुक्मिदारणः[२६]॥३०६॥

पुष्पास्त्रः[1] पुष्पचाप[2] श्च, पुष्पेषुः[3] कुसुमायुधः[4] ।
तथा कुसुमधन्वा[5] वै, कुसुमवाण[6] संज्ञकः ॥३१५॥

अथ कामरिपु र्ज्ञेयः, शंवरः[1] शम्वर[2] स्तथा ।
शूर्पक[3] श्चापि प्रख्यातः, शंवरा[1]रि स्ततोऽपि सः ॥३१६॥

शम्वरा[2]रिः शूर्पकारिः[3], कामचिह्नं तु केतनम्[1] ।
मीन[2] श्च मकर[3] श्चापि, तस्मात् स मीनकेतनः[1] ॥३१७।

मकरकेतन[2] श्चापि, स्याद् झष[3]-मकर[4]ध्वजौ ।
वाणाः पञ्च तु कामस्य, चूतं[1] नीलोत्पलं[2] तथा ॥३१८॥

अरविन्द[3]मशोकं[4] च, स्यात् तथा नवमल्लिका[5] ।
तस्मात् स पञ्चवाणोऽ[1]पि, विषमेषुश्च कथ्यते ॥३१९॥

कामस्य स्त्री रति[1] र्नाम्नी, तस्मात् रतिपति[1] र्भवेत् ।
ज्ञेयो रतिवर[2] श्चापि, योनि स्त्वस्य मन[1] स्तथा ॥३२०॥

आत्मा[2] शृङ्गार[3]-संकल्पौ[4], तस्मात् चेतोभव[1] स्तथा ।
आत्मभू[2] रात्मयोनि[3] श्च, शृङ्गारयोनि[4] रुच्यते ॥३२१॥

तथा शृङ्गारजन्मा[5] च, संकल्पयोनि[6]संज्ञकः ।
स्मृतिभू[7]श्च मनोयोनिः[8], कामसंज्ञा श्च यौगिकाः ॥३२२॥

काममित्रं मधु[1] श्चैत्रः[2], तस्मात् चैत्रसख[1] स्तथा ।
मधुसुहृद्[2] च नामानि, कामस्य यौगिकानि च ॥३२३॥

स्यात् सुतोऽस्याऽनिरुद्धो[1] हि, उषारमण[2]संज्ञकः ।
ऋष्याङ्कः[3] ऋष्यकेतुश्च[4], इष्मो[5] ब्रह्मसू[1] रपि ॥३२४॥

पञ्चज्ञानो[३४] महामैत्रो[३५], मुनीन्द्र[३६]श्च विनायकः[३७] ।
धर्मधातु[३८] र्दयाकूर्चो[३९], भगवान्[४०] दशभूमिगः[४१] ॥३३३॥

धर्मराज[४२] श्च नामानि, बुद्धस्य कथितानि वै ।
तथै वेमानि नामामि, विपश्यी[१] च शिखी[२] तथा ।
विश्वभू[३] श्च ककुच्छन्दः[४], काञ्चनः[५] काश्यप[६] स्तथा ॥३३४॥

नामावल्यां शाक्यसिंहः[१], मायासुतो[२] ऽर्कबान्धवः[३] ।
शुद्धोदनसुत.[४] शाक्यो[५], देवदत्ताग्रज[६] स्तथा ॥३३५॥

राहुलसू[७] श्च सर्वार्थ-सिद्ध[८] श्च गोतमान्वयः[९] ।
शौद्धोदनि[१०] श्च शाक्यस्य, नामानि दश सन्ति च ॥३३६॥

❋ असुरनामानि ❋

असुरा[१] दानवा[२] श्चैव, दैतेया[३] दितिजा[४] स्तथा ।
दनुजाः[५] पूर्वदेवा[६] श्च, पातालौकः[७]-सुरारयः[८] ॥३३७॥

शुक्रशिष्या[९] श्च नामानि, ज्ञातव्यानि सदा बुधैः ।

❋ षोडश विद्यादेवीनामानि ❋

विद्यादेव्यास्तु नामानि, षोडश क्रमश स्त्वधः ॥३३८॥

रोहिणी[१] प्रज्ञप्ति[२] र्वज्र-शृङ्खला[३] कुलिशाङ्कुशा[४] ।
देवी चक्रेश्वरी[५] चैव, नरदत्ताभिधा[६] पुनः ॥३३९॥

काली[७] देवी महाकाली[८], गौरीदेवी[९] तथैव च ।
गान्धारी[१०] चापि सर्वास्त्र-महाज्वाला[११] च मानवी[१२] ॥३४०॥

अथ सूचनकृत् सूत्रं[1], सूत्रोक्तार्थप्रपञ्चकम्[1]।
भाष्यं[1] ज्ञेयं च प्रस्तावः[1], प्रकरणं[2] ज्ञायतां तथा ॥३६७॥
पदभञ्जन[1] मेवंहि निरुक्तं[2] शीघ्रपाठतः।
अवान्तरप्रकरण-विश्रामे ह्याह्निकं[1] तु वै ॥३६८॥
अधिकारोऽधिकरण[1]-मेकन्यायोपपादनम्।
उक्तानुक्तदुरुक्तार्थ-चिन्ताकारि च वार्त्तिकम्[1] ॥३६९॥
तथा निरन्तरव्याख्या, सा टीका[1] कथ्यते बुधैः।
पुन र्न्यासः[1] पञ्जिका[2]पि तथा स्यात् पदभञ्जिका[3] ॥३७०॥
अथाऽन्वर्थे निबन्ध[1] श्च, वृत्तिः[2] स्याद् संग्रह[1]स्तु वै।
समाहृतिः[2] तथा ज्ञेया, परिशिष्टं[1] तु पद्धतिः[2] ॥३७१॥
अध्यायो[3]ऽङ्क स्तथोच्छ्वासः[4] सर्गः[5] प्रमुखमत्रस्यात्।
ग्रन्थस्यावयवाः प्रोक्ताः काव्यादौ यत्र कुत्रचित् ॥३७२॥
कारिका[1] स्वल्पवृत्तौ स्याद् बहोरर्थस्य सूचिका।
ज्ञातव्या सर्वविद्या[1] च कलिन्दिका[2] कडिन्दिका[3] ॥३७३॥
निघण्टुः[1] शब्दकोषः स्याद् नामसंग्रह[2] इत्यपि।
इतिहासः[1] पुरावृत्तं[2], द्वयं पूर्वचरित्रके ॥३७४॥
सूचकः गुप्तभावस्य, प्रवह्लिका[1] प्रहेलिका[2]।
जनश्रुतिः[1] किंवदन्ती[2], वार्तिता[3] पुरातनी ॥३७५
उदन्त[1]स्तु प्रवृत्तिः[2] स्याद्, वार्त्ता[3] वृत्तान्तक[4] स्तथा।
ना[1] ऽऽह्वा[2]ऽभिधा[3]ऽभिख्या[4]
संज्ञा[5] गोत्रं[6] तथा ऽऽह्वयः[7] ॥३७६॥

अथ सूचनकृत् सूत्रं[1], सूत्रोक्तार्थप्रपञ्चकम् ।
भाष्यं[1] ज्ञेयं च प्रस्तावः[1], प्रकरणं[2] ज्ञायतां तथा ॥३६७॥

पदभञ्जन[1]मेवंहि निरुक्तं[2] शीघ्रपाठतः ।
ग्रन्थान्तरप्रकरण-विश्रामे ह्याह्निकं[1] तु वै ॥३६८॥

प्रसिद्धार्थोऽधिकरण[1]-मेकन्यायोपपादनम् ।
उक्तानुक्तदुरुक्तार्थ-चिन्ताकारि च वार्त्तिकम्[1] ॥३६९॥

तथा निरन्तरव्याख्या, सा टीका[1] कथ्यते बुधैः ।
[illegible][1] पञ्जिका[2]पि तथा स्यात् पदभञ्जिका[3] ॥३७०॥

ग्रन्थान्तरार्थे निबन्ध[1]श्च, वृत्तिः[2] स्याद् संग्रह[1]स्तु वै ।
[illegible][2] तथा ज्ञेया परिशिष्टं[1] तु पद्धतिः[2] ॥३७१॥

[illegible][3] [illegible]स्तथोच्छ्वासः[4] सर्गं[5] प्रमुखमत्रस्यात् ।
[illegible] प्रोक्ताः काव्यादौ यत्र कुत्रचित् ॥३७२॥

कारिका[1] [illegible] स्याद् बह्वोरर्थस्य सूचिका ।
[illegible] सर्वविद्या[1] च कनिन्दिका[2] कदिन्दिका[3] ॥३७३॥

निघण्टु[1] [illegible] स्याद् नामसंग्रह[2] इत्यपि ।
[illegible], इयं पूर्वचरित्रके ॥३७४॥

[illegible] प्रवह्लिका[1] प्रहेलिका[2] ।
[illegible], [illegible][2] [illegible] ॥३७५

[illegible] तथा ।
[illegible]
[illegible] तथा [illegible] ॥३७६॥

अम्बूकृतं[1] सनिष्ठेव[2], सथूत्कारे च कथ्यते ।
तथा निरस्तं[3] सर्वत्र जानातु त्वरयोदितम् ॥३८६॥

भवेदाम्रेडितं द्विस्त्रि-रुक्तं, निरर्थकं[1] तु वै ।
असम्बद्धं[2] तथाऽबद्धं[3], कथितं पण्डितैर्जनैः ॥३८७॥

पृष्ठमांसादनं[1] तद् यद्, परोक्षे दोषदर्शनम् ।
अथ मिथ्याभियोगः[1] स्यादभ्याख्यानं तथा किल ॥३८८॥

स्याद् हृदयंगमं[1] चैव, सङ्गतं[2] परुषं[1] वचः ।
विक्रुष्टं[2] निष्ठुरं[3] रूक्ष[4]- मुच्चैर्घुष्टं[1] तु घोषणा[2] ॥३८९॥

अथेडा[1] वर्णना[2] श्लाघा[3], स्तवः[4] स्तुति[5] र्नुति[6] स्तथा ।
स्तोत्रं[7] तथा प्रशंसा[8] स्या दर्थवाद[9] श्च मन्यते ॥३९०॥

विकत्थनं[1] च मिथ्या स्यात् कौलिनं[1] वचनीयता[2] ।
तथा जनप्रवादो[3] वै, विगान च निगद्यते ॥३९१॥

उपक्रोशो[1] ऽपवाद[2] श्च, गर्हा[3] गर्ह[4] श्च गर्हणा[5] ।
जुगुप्सनं[6] जुगुप्सा[7] च, निन्दा[8] कुत्सा[9] च धिक्क्रिया[10] ॥३९२॥

निर्वादः[11] परिवाद[12] श्चाऽवर्णः[13] क्षेप[14] श्च कथ्यते ।
स्यादाऽऽक्रोश[1] स्तथाऽऽक्षेपः[2], शाप[3] स्तथाऽभिषङ्गकः[4] ॥३९३॥

क्षारणा[1] ऽऽक्षारणा[2] स्याद् वै, स रते दूषणं तथा ।
विरुद्धशंसनं[1] गालि[2]- राशी[1] मंङ्गलशंसनम्[2] ॥३९४॥
अथ कीर्तिः[1] समाख्या[2] स्याद्,
　　　　श्लोको[3] ऽभिख्या[4] यश[5] स्तथा
[illegible] [illegible] वाणी सर्वथा याऽशुभा भवेत् ॥३९५॥

नर्त्तनं[1] नटनं[2] नृत्यं[3], नृत्तं[4] नाट्यं[5] च ताण्डवम्[6] ।
लास्य[7] ञ्चेति हि नामानि, कथ्यन्ते कोविदैः किल ॥४०५॥

स्त्रीमण्डलेन यन्नृत्यं, ज्ञेयं हल्लीसकं[1] हि तत् ।
मद्यपानेन यन्नृत्यमुच्चताल[1] तु कथ्यते ॥४०६॥

समराङ्गणे च यन्नृत्यं ज्ञेयं वीरजयन्तिका[1] ।
नाट्यस्थानं तु रङ्गः[1] स्यात्, पूर्वरङ्गो[1] ऽप्युपक्रमः । ४०७॥

अङ्गहारो[1] ऽङ्गविक्षेपो[2] व्यञ्जको[1] ऽभिनयो[2] भवेत् ।
चतुर्विधानि नामानि प्रथितानि च यथाक्रमम् ॥४०८॥

आहार्यो[1] ऽभिनयो ज्ञेयो, रचितो भूषणादिना ।
वाचिको[2] वचसा चैव तथाऽङ्गेनाऽऽङ्गिकः[3] किल ॥४०९॥
सत्त्वेन सात्त्विक[4] श्चैव, कथ्यते कोविदैः खलु ।
अथ स्यान्नाटकं[1] भाणः[2], तथा प्रहसनं[3] डिमः[4] ॥४१०॥

अङ्कः[5] प्रकरणं[6] चैव, व्यायोगेहा[7] मृगौ[8] तथा ।
वीथीऽसमवकार[10] श्च, नाटकादौ प्रयुज्यते ॥४११॥

षट् संस्कृतादिकाः भाषाः, कथ्यन्ते क्रमशो यथा ।
संस्कृतं[1] प्राकृतं[2] शौरसेनी[3] पैशाच[4]-मागधी[5] ॥४१२॥

अपभ्रंशो[6] ऽपि विज्ञेयो, नृत्य-गीताऽभिनेयके ।
भारती[1] सात्वती[2] चापि, कौशिकया[3] रभटी[4] तथा ॥४१३॥

अथौत्सुक्यं[1] तथोत्कण्ठ[2], आयल्लकं[3] तथाऽरतिः[4]।
उत्कलिका[5] तथोत्कण्ठा[6], रणरणक[7] इत्यपि ।।४६२।।

हृल्लेख[8] श्चापि प्रोक्तार्थेऽवहित्था[1] ऽऽकार गोपनम्[2]।
आकारगूहनं[3] गूढ्जालिका[4] ऽवकुटारिका[5] ।।४६३।।

अवकुठारिका[5] चैव, स्यादऽवकटिका[6] तथा।
अनिष्टोत्प्रेक्षणं शङ्का[1], कथ्यते पण्डितैः सदा ।।४६४।।

अथाऽनवस्थिति[1] र्नाम, चापलं[2] च तदेव स्यात्।
तन्द्रा[1] ऽऽलस्य[2] श्चकौसीद्यं[3], स्याद् वै चित्तप्रसन्नता[1] ।।४६५।।

ह्लादो[2] हर्षः[3] प्रमोद[4]श्च, प्रमदो[5] मुच्[6] च सम्मदः[7]।
आनन्दा[8] ऽऽनन्दथू[9] प्रीतिः[10], आमोद[11] श्चापि कथ्यते।।४६६।।

अथ गर्व[1] श्च दर्प[2] श्च, मान[3] श्चित्तोन्नतिः[4] स्मय[5]।
ममता[6] चाऽभिमानः[7] स्या, दहङ्कारो[8] ऽवलिप्तता[9]।।४६७।।

अहमहमिका[1] ज्ञानं, युद्धादौ दृश्यते सदा।
आहोपुरुषिका[2] दर्पात्, या सा सम्भावनाऽऽत्मनि ।।४६८।।

अहं पूर्वं मह पूर्वमिति स्यादहम्पूर्विका[1]।
अहंप्रथमिका[2] चैव, तथा ऽहमग्रिका[3] किल ।।४६९।।

उग्रत्वं[1] चण्डता[2] स्याद् वै, ग्लानि[1] स्तु बलहीनता[2]।
[illegible][1] स्याद् विनिद्रत्वं[2], दैन्यं[1] कार्पण्य[2] मुच्यते ।।४७०।।

अथाऽऽयासः[1] प्रयास[2] श्च व्यायाम[3] श्च परिश्रमः[4]।
क्लमः[5] खेदः[1] श्रमो[2] ऽपि स्या, दुन्माद[1] श्चित्तविप्लवः[2]।।४७१।।

ये नाट्येऽधिकृताः सन्ति लोके पात्र[१]श्च तान् विदुः ।
तत्तद्वेषोऽपि नाट्ये वै, मन्यते भूमिका[२] किल ॥४८१॥

※ नटनामानि ※

अथ नटः[१] कृशाश्वी[२] च, शैलूषो[३] भरत[४] स्तथा ।
धर्मी पुत्र[५] श्च शैलाली[६],
तथा भरत पुत्रकः[७] ॥४८२॥

जायाजीव[८] श्च रङ्गाजीवो[९] रङ्गावतारकः[१०] ।
कथ्यते सर्वकेशी[११] च,
चारण[१] स्तु कुशीलवः[२] ॥४८३॥

भ्रकुंसः[१] स्याद् भ्रुकुंस[२] श्च भ्रकुंशो[३] भृकुंस[४] स्तथा ।
स्त्रीवेषधारकः सोऽपि नाटके कथ्यते नटः ॥४८४॥

पुनः स्यात् पीठमर्द[१] श्च, वेश्याचार्य[२] स्तथैव च ।
सूचकः[१] सूत्रधारः[२] स्यात्,
स्थापको बीजदर्शकः ॥४८५॥

नन्दी[१] स्यात् पाठको नान्द्याः, पार्श्वस्थः[१] पारिपार्श्विकः[२] ।
विदूषकः[१] प्रहासी[२] स्याद्,
वासन्तिक[३] श्च प्रीतिदः[४] ॥४८६॥

वैहासिक[५] स्तथा केलिकिलः[६] केलीकिल[७] श्च वै ।
अथ पल्लवकः[१] पिङ्गः[२], स्तथा विटोऽपि कथ्यते ।
आवुक[१] श्च पिता प्रोक्त, आवुत्त[१]-भावुकौ[२] पुनः ॥४८७॥

तथाऽबद्धमुखो[3] दुष्टवचन:[4] कथ्यते बुधैः ।
शुक्ल:[1] प्रियंवदः[2] स्याद् वै, प्रियवाक्[3] सैव कथ्यते ॥५१६॥

वदान्य[1] स्तु वदन्य[2] श्च, दानशील: स कथ्यते ।
अथ मूर्खो[1] यथाजातो[2], बालिशो[3] मातृशासित:[4] ॥५२०॥

मातृमुख[5] श्च मूढो[6] ऽज्ञो[7], मन्द[8] श्च नामवर्जित:[9] ।
बालो[10] ऽमेधा:[11] विवर्ण[12] श्च,
वैधेय[13] श्च यथोद्गत:[14] ॥५२१॥

देवानांप्रिय-[15] जाल्मौ[16] वै, जडो[17] ऽनेड[18] श्च कथ्यते ।
मन्द: क्रियासु कुण्ठ:[1] स्याद्, दीर्घसूत्री[1] चिरक्रिय:[2] ॥५२२॥

कर्मोद्यत: क्रियावान्[1] वै, कर्मक्षमोऽपि कथ्यते ।
तथाऽलङ्कर्मीण:[2] किल, कर्मशूर[1] स्तु कर्मठ:[2] ॥५२३॥

स्यात् कार्म:[1] कर्मशील[2] श्च, पुनस्तु तीक्ष्णकर्मकृत्[1] ।
किलाऽऽय: शूलिक[2] श्चैव, ज्ञेयो राभसिक[3] स्तथा ॥५२४॥

अथ स्वङ्ग[1] स्तथा सिंह-संहननो[2] ऽपि मन्यते ।
स्यात् स्वतन्त्र:[1] स्वच्छन्द[2] श्च,
स्वैरी[3] वै स्वरुचि[4] स्तथा ॥५२५॥

अपावृतो[5] यथाकामो[6], तथापि निरवग्रह:[7] ।
स्वेच्छा[1] च स्वैरिता[2] चैव, यदृच्छा[3] मन्यते किल ॥५२६॥

ईशि[13]तेशे[14]श्वरे[15] न्द्रे[16] ना[17],

कथ्यते कोविदैः किल ।

※ दास नामानि ※

अथ दास[1] श्च भृत्य[2] श्च, किङ्करो[3] डिङ्गर[4] स्तथा ॥५३२॥

गोप्यः[5] प्रेष्यो[6] भुजिष्यश्च[7] परान्नः[8] परिचारकः[9] ।
परिकर्मी[10] परिस्कन्दः[11], पराचितः[12] परैधितः[13] ॥५३३॥

नियोज्यः[14] परपिण्डादः[15], चेटः[16] प्रतिचर[17] स्तथा ।
मन्यते परजातो[18]ऽपि-विबुधै र्दासवाचके ॥५३४॥

※ कर्मकर नामानि ※

भृतिभुग्[1] भृतको[2] वैतनिकः[3] कर्मकरी[4] अपि ।
निर्भृतिः कर्मकारो[1] ऽयं, कथ्यते साक्षरै रिह ॥५३५॥

※ वेतन नामानि ※

भृतिः[1] स्याद् वेतनं[2] मूल्यं[3], कर्मणां[4] निष्क्रयः[5] पणः[6] ।
भर्मण्या[7] भर्म[8] निर्वेशो[9],

भृत्या[10] च भरण[11]विधा[12] ॥५३६॥

गणिका[1] भृतिस्तु भोगो[2] भाटि[3] रित्यपि कथ्यते ।

※ खलपू नामानि ※

हुधान्यार्जकः[1] स्याद् वै, संमार्जको[2] बहुकरः[3] ॥५३७॥

※ कृपणनामानि ※

कृपण[1] स्तु कदर्य[2] श्च, किम्पचानो[3] मितम्पचः[4] ॥५४४॥

कीनाशो[5] दृढमुष्टि[6] श्च, क्षुद्र[7] स्तथैव तद्धनः[8] ।

※ कृपालुनामानि ※

कृपालु[1] स्तु दयालु[2] श्च, सूरतः[3] करुणापरः[4] ॥५४५॥

※ दयानामानि ※

अथ दया[1] घृणा[2] शूकः[3], कारुण्यं[4] करुणा[5] कृपा[6] ।
अनुक्रोशो[7] ऽनुकम्पा[8] स्याद्,

※ हिंसकनामानि ※

हिंस्रो[1] शरारु[2]-घातुकौ[3] ॥५४६॥

※ हिंसानामानि ※

अथ हिंसा[1] वधो[2] घातो-[3], व्यापादनं[4] प्रमापणम्[5] ।
विवर्हणं[6] निस्तर्हणं[7], निर्ग्रन्थनं[8] निषूदनम्[9] ॥५४७॥

प्रोज्झासनं[10] प्रवासनं[11], समापन-[12] मपासनम्[13] ।
विशरणं[14] विशारणं[15], विशसनं[16] च वर्जनम्[17]॥५४८॥

प्रतिघातन-[18] मुन्मथो[19], क्राथो[20] निष्कारणं[21] पुनः ।
आलम्भ[22] श्च निशुम्भ[23] श्च, प्रशमनं[24] परासनम्[25] ॥५४९॥

अनृजु[३] श्चापि शण्ठः[४] स्यात्, क्रूरे[१] पापः[२] नृशंसकः[३] ।
निस्त्रिंश[४] श्चापि धूर्त[१] स्तु, वञ्चको[२] व्यंसक[३] स्तथा ॥५५८॥

कुहको[४] जालिको[५] मायी[६], दाण्डाजिनिक[७] उच्यते ।
मायावी[८] मायिक[९] श्चेति, ज्ञातव्या धूर्तवाचकाः ॥५५९॥

शाठ्यं[१] स्यात् शठता[२] माया[३], कुसृति[४] र्निकृतिः[५] पुनः ।
कपटं[१] कैतवं[२] कूटं[३], मिषं[४] लक्षं[५] तथा छलम्[६] ॥५६०॥
उपाधि[७] रूप[८] धिश्छद्म[९], व्याजो[१०] व्यपदेशो[११] निभम्[१२] ।
उपधा[१३] चेति मन्तव्याः, कपटस्यैव वाचकाः ॥५६१॥

अथ स्याद् दम्भचर्या[१] च, कुक्कुटिः[२] कुहना[३] तथा ।
वञ्चनं[१] च व्यलीकं[२] चा-ऽतिसन्धानं[३] प्रतारणम्[४] ॥५६२॥

अथाऽऽर्य[१] श्चापि साधुः[२] स्यात्, सभ्य[३] श्च सज्जन[४] स्तथा ।
दोषैकदृक्[१] पुरोभागी[२], विद्वद्भिः कथ्यते किल ॥५६३॥

अथ कर्णेजपः[१] क्षुद्रो[२], द्विजिह्वो[३] दुर्जनः[४] खलः[५] ।
प्रखलः[६] पिशुनो[७] नीचः[८], स्यान् मत्सरी[९] च सूचकः[१०] ॥५६४॥

व्यसना[१] र्त्तोपरक्तौ[२] वै,

* चोरनामानि *

भवेच् चोर[१] श्च चोरडः[२] ।
परिमोषो[३] परास्कन्दो[४], दस्यु[५] श्च प्रतिरोधकः[६] ॥५६५॥

❀ दाननामानि ❀

अथ दानं[1] तथा त्यागः[2], प्रतिदानं[3] प्रदेशनम्[4] ।
उत्सर्जनं[5] विसर्जनं[6], वितरणं[7] विहायितम्[8] ॥५७३॥

तथा निर्वपणं[9] निर्वपणं[10] प्रादेशनं[11] पुन. ।
अंहतिः[12] स्पर्शनं[13] विश्राणन[14] स्याच्च वापवर्जनम्[15] ॥५७४॥

❀ याचक नामानि ❀

सुकलो[1] ऽर्थव्ययज्ञः स्याद्, वनीपक[1] स्तु मार्गणः[2] ।
तर्कुको[3] याचक[4] श्चाऽर्थी[5], याचनक[6] स्तथैव च ॥५७५॥

अथाऽर्थना[1] याचना[2] याच्ञा[3], भिक्षणा[4] ऽध्येषणा[5] ऽर्दना[6] ।
एषणा[7] प्रणय[8] श्चापि, मार्गणा[9] च सनि[10] स्तथा ॥५७६॥

अभिलाषो[11] ऽभिपस्ति[12] श्च, नामानि याचकस्यवै ।
अथ स्यादुत्पतिष्णु[1] र्वै, तथाप्युत्पतिता[2] खलु ॥५७७॥

मण्डनो[1] ऽलङ्करिष्णुः[2] स्याद्, भूष्णु[1] स्तु भाविता[2] तथा ।
भविष्णु[3] र्वर्तन[1] स्तु वै, वर्तिष्णुः[2] कथ्यते बुधैः ॥५७८॥

विसृमरो[1] प्रसारी[2] स्याद्, विसारी[3] च विसृत्वरः[4] ।
लज्जाशीलो[1] ऽपत्रपिष्णुः[2], लज्जालु[3] श्च निगद्यते ॥५७९॥

क्षमी[1] स्यात् क्षमिता[2] क्षन्ता[3], सहिष्णुः[4] सहन[5] स्तथा ।
तितिक्षु[6] श्च तितिक्षा[1] तु, क्षान्ति[2] श्चसहनं[3] क्षमा[4] ॥५८०॥

गोधूमचूर्णः[१] समिता[२], यवक्षोद[१] स्तु चिक्कसः[२] ।
गुड[१] इक्षुरसक्वाथः[२], सितोपला[१] तु शर्करा[२] ॥६००॥
सिता[३] च मधुधूलि[१] स्तु, खण्डं[२] खण्डो[३] ऽपि कथ्यते ।
मत्स्यण्डिका[१] तु मत्स्यण्डी[२],
मत्स्याण्डिका[३] च फाणितम्[४] ॥६०१॥
मत्स्याण्डी[५] चेक्षुरसतः, सामान्य शर्कराभिदा ।

❋ शीखण्डनामानि ❋

शिखरिणी[१] रसाला[२] च, मर्जिता[३] मार्जिता[४] तथा ॥६०२॥
शीखण्डं कथ्यते लोके, यू[१] यूष[२] श्च रसो[३] ऽन्यथा ।

❋ दुग्धनामानि ❋

दुग्धं[१] च गोरसः[२] क्षीरं[३], पुंसवनं[४] च सोमजम्[५] ॥६०३॥
ऊधस्य[६] ममृतं[७] गव्यं[८] स्तन्यं[९] योग्यं[१०] रसोत्तमम्[११] ।
बालसात्म्यं[१२] मधुज्येष्ठं[१३],
जीवनीयं[१४] सरं[१५] रसम्[१६] ॥६०४॥
पय[१७] श्चेत्यादि नामानि, दुग्धस्य कथ्यते बुधैः ।
पयस्यं[१] दधि दुग्धोत्थं, वस्तुजातं निगद्यते ॥६०५॥
पीयूषं[१] नव दुग्धं स्यात्, पेयूष[२] श्चापि कथ्यते ।
[illegible]ो[१] कूर्चिका[२] चाथ, कूचिका[३] दुग्धजा स्मृता ।६०६॥

श्वेतं[1] श्वेतरस[2] ञ्चैव, समभागजलं दधि ।
कट्वरं[1] सारणं[2] तक्र[3], मर्शोघ्नं[4] परमरसः[5] ॥६१२॥

जलं विनैव मथितं, मथितं[1] कथ्यते दधि ।
सर्पिषा संस्कृतं द्रव्यं, सार्पिष्कं[1] कथ्यते जनैः ॥६१३॥

दध्नि यत् संस्कृतं द्रव्यं, तद् दाधिक[1] मुदाहृतम् ।
दकलावणिक[1] द्रव्यं, लवणोदक संस्कृतम् ॥६१४॥

अर्द्धपानीयवद् दध्ना, संस्कृतं वस्तु कथ्यते ।
औदश्वित[1] मौदश्वित्कं[2], लोके सर्वत्र भोजनम् ॥६१५॥

लवणेन संस्कृत द्रव्यं, लावणं[1] कथ्यते बुधैः ।
उखायां जात मुख्य[1] स्यात्, पैठरं[2] पिठरे कृतम् ॥६१६॥

सुसंस्कृत[1] प्रयस्त[2] ञ्च, पक्वान्नं चारु कथ्यते ।
सिद्धं[1] राद्ध[2] ञ्च पक्व[3] ञ्च, नाम पक्वस्य वस्तुनः ॥६१७॥

भृष्टं[1] भवति तद् वस्तु, यत् पक्वं जल मन्तरा ।
अग्नौ पक्वञ्च भूतिः[1] स्यात्, भटित्र[2] ञ्च भल्टकम्[3] ॥६१८॥

शूल्यं[1] शूलाकृतं[2] मांसं, जानीयात् मांस भक्षकः ।
मांसानाञ्च रसः प्रोक्तो, निष्क्वाथो[1] रसक[2] स्तथा ॥६१९॥

प्रणीत[1] मुपसम्पन्नं[2], सिद्धमन्नं रसादिवत् ।
मसृणं[1] चिक्कणं[2] स्निग्धः[3], सामान्य स्निग्धवस्तुनि ॥६२०॥

पिच्छिलं[1] विजिलं[2] चापि, विजिविल[3] ञ्च विज्जलम्[4] ।
विजिलिम्पं[5] मात्स्युल्क-दधिजं भोजनं भवेत् ॥६२१॥

रात्रि वाचक शब्दा ये, हरिद्रा नामतः स्मृताः ।

❀ राजिकानामानि ❀

क्षुताभिजननः[1] क्षवः[2], राजिका[3] राजसर्षपः[4] ।।६२८।।

असुरी[5] कृष्णिका[6] चापि, व्यञ्जने स्वादकारिणी ।

❀ धान्याकस्यनामानि ❀

कुस्तुम्बरु[1] च धन्याकं[2], धान्याकं[3] धान्यकं[4] तथा ।।६२९।।

धन्या[5] नामापि तस्यास्ति, ज्ञायता मल्लुका[6] पुनः ।

❀ मरीचनामानि ❀

मरीचं[1] मरिचं[2] कृष्णं[3], धर्मपत्तन[4] मूषणम्[5] ।।६३०।।

कोलकं[6] वलितं[7] चापि, वेल्लजं[8] यवनप्रियम्[9] ।
द्वारवृत्तं[10] दशैतानि, कृष्णनामानि कथ्यते ।।६३१।।

❀ शुण्ठीनामानि ❀

शुण्ठी[1] शुण्ठि[2] स्तथा विश्वा[3], नागरं[4] विश्वभेषजम्[5] ।
तथा महौषधं[6] विश्वे, कथ्यते कोविदैः किल ।।६३२।।

❀ पिप्पलीनामानि ❀

पिप्पली[1] पिप्पलिः[2] कृष्णा[3], कोला[4] च कृष्णतण्डुला[5] ।
उपकुल्या[6] कणा[7] शौण्डी[8], वैदेही[9] तीक्ष्णतण्डुला[10] ।।६३३।।

घदनं[९] स्वदनं[१०] ग्लानं[११],
निगरण[१२] इत्यादि भक्षणम्[१३] ॥६३९॥

अशनं[१] प्रत्यवसानं[२], चेति नामानि [illegible] :।

❊ चर्वणनाम ❊

कथ्यते चूर्णनं तच्च, चर्वणं पण्डितै र्जनैः।

❊ लेहननाम ❊

जिह्वास्वादो हि शब्दोऽपि, कथितं लेहनं पुनः ॥६४०॥

❊ प्रातःकालिक भोजननाम ❊

प्रातःकालघसे नाम, प्रातराशो[१] हि कथ्यते।
पुनरपि कल्यवर्त्तः[२], सग्धि[१] स्तु सहभोजनम्[२] ॥६४१॥

❊ ग्रासनामानि ❊

ग्रासो[१] गुड[२] श्च गण्डोलो[३], गडोल[४] श्च गुडेरकः[५]।
कवकः[६] कवलः[७] पिण्ड[८],-श्चेत्यादि ग्रासनामकाः ॥६४२॥

❊ तृप्तनामानि ❊

आघ्रातः[१] सुहित[२] स्तृप्तः[३], आघ्राण[४] श्चाशितः[५] पुनः।

❊ तृप्तिनामानि ❊

सौहित्य[१] तृप्ति[२] राघ्राणं[३], भोजनै रिह जायते ॥६४३॥

* लोभनामानि *

लोभ[1] स्तृष्णा[2] स्पृहा[3] लिप्सा[4],
गर्द्धः[5] काङ्क्षा[6] वश[7] स्तथा।
आशा[8] वाञ्छा[9] धनाया[10] च,
रुचिः[11] काम[12] श्च कामना[13] ॥६५०॥

आशंसा[14] चाऽभिलाष[15] स्तृट्[16],
चेच्छा[17] चेहा[18] मनोगवी[19]।
ईप्सा[20] चेहो[21] मनोराज्यं[22],
प्रोक्तं मनोरथ[23] स्तथा ॥६५१॥

* अभिध्यानामानि *

अभिध्या[1] च परस्वेहा[2], तथैव विषमस्पृहा[3]।
प्रोक्तं परधनेच्छायां, विषमप्रार्थना[4] पुनः ॥६५२॥

* उद्धतस्यनाम *

उद्धत[1] श्चाऽविनीत[2] श्च, द्वयं सदा प्रयुज्यते।

* विनीतनामानि *

विनीतो[1] निभृत[2] श्चैवं, प्रश्रितो[3] विनयी जनः ॥६५३॥

* विधेयनाम *

विनयस्थो[1] विधेय[2] श्च, शास्त्रसंस्कारवान् जनः।
श्यः[1] प्रणेय[2] आख्यात आश्रवो वचने स्थितः ॥६५४॥

❀ खसनामानि ❀

पामा[1] पामा[2] खस:[3] कच्छू[4], विचर्चिका[5] ऽपि कथ्यते।

❀ कण्डूनामानि ❀

कण्डू:[1] खर्जू[2] श्च खर्जूतिः[3], कण्डूति[4] श्च पुनर्भवेत् ॥७१२॥

कण्डूयनं[5] च कण्डूया[6], गात्र कण्डूयने स्मृता: ।

❀ व्रणनामानि ❀

ईर्मं[1] क्षतं[2] व्रण[3] श्चारुः[4], क्षणनु[5] श्चापि कथ्यते ॥७१३॥

व्रण चिह्नं किण:[1] प्रोक्त-मस्त्रशस्त्रादिकस्य च ।

❀ श्लोपदरोगनाम ❀

श्लीपदं[1] पादवल्मीकं, पादरोगस्य नाम वै ॥७१४॥

❀ पादस्फोटनाम ❀

शीतादिना समुत्पन्न:, पादस्फोटो[1] विपादिका[2] ।

❀ स्फोटकनाम ❀

विस्फोट:[1] स्फोटको[2] गण्ड:[3], पिटक[4] श्चापि कथ्यते ॥७१५॥

❀ पृष्ठग्रन्थिनाम ❀

पृष्ठग्रन्थि[1] गंडु:[2] प्रोक्त: पृष्ठग्रन्थिक मित्यपि ।

❀ शोफनामानि ❀

शोफ[1] श्च श्वयथुः[2] शोथः[3], शरीरं यत्र फुल्लति ॥७२०॥

❀ अर्शोनामानि ❀

अर्शः[1] स्याच्च दुर्नामा[2], गुदकीलो[3] गुदाङ्कुरः[4] ।

❀ वमननामानि ❀

नाम प्रच्छर्दिका[1] छर्दि[2], वमनं[3] वमथु[4] र्वमिः[5] ॥७२१॥

❀ उदररोगनाम ❀

गुल्मः[1] स्यादुदरग्रन्थि[2], उदावर्तो[1] गुदग्रहः[2] ।
नाडीव्रणो[1] गति[2] र्वृद्धिः[1], कुरण्ड[2] आण्डवर्धनम्[3] ॥७२२॥

❀ अश्मरीनाम ❀

अश्मरी[1] मूत्रकृच्छ्रं[2] च, मूत्राशये च जायते ।

❀ प्रमेहनामानि ❀

मेह[1] स्यात् प्रमेह[2] श्च कथ्यते बहुमूत्रता[3] ॥७२३॥

❀ [illegible] ❀

❀ स्वास्थ्यनामानि ❀

स्वास्थ्यं[1] सह्यं[2] तथाऽऽरोग्यं[3], वार्तं[4] स्याच्चाप्यनामयम्[5] ।

❀ नीरुक्नामानि ❀

पटु[1] र्वार्त्त[2] स्तथोल्लाघः[3], कल्यो[4] नीरुक्[5] निगद्यते ॥७३०॥

❀ पार्श्वकनाम ❀

उत्कोचे विभवाऽन्वेषी, पार्श्वकः[1] सन्धिजीवकः[2] ।

❀ कूकुदनामानि ❀

सत्कृत्याऽलङ्कृतां कन्दां, यो ददाति स कूकुदः[1] ॥७३१॥

स एव कूपदः[2] प्रोक्तः, पारिमित[3] श्च प्रायशः ।

❀ चपलनाम ❀

चपल[1] चिकुर[2] श्चेति, नामाऽपि कथ्यते जनैः ॥७३२॥

❀ नीलीरागनामानि ❀

नीलीरागः[1] स्थिरप्रेमा[2], तथा स्यात् स्थिरसौहृदः[3] ।

❀ हरिद्रारागनाम ❀

हरिद्राराग[1] इत्युक्तः, क्षणिकरागवान् किल ॥७३३॥

❀ मेदरनाम ❀

अतिस्नेहेन संयुक्तः, सान्द्रस्निग्ध[1] श्च मेदुरः[2] ।

* आगन्तुकनाम *

आगन्तुको[1] गन्तुर[2] श्च, कथ्यते चागतागतः ।

* शरणार्थिनाम *

शरणार्थी[1] चाभिपन्नः[2], उच्यते शरणागतः ॥७३९॥

* परीक्षकनामानि *

आक्षपटलिक[1] श्चापि, कारणिकः[2] परीक्षकः[3] ।
परीक्षाकारको लोके, कथ्यते कोविदः किल ॥७४०॥

* वरदनाम *

वरद[1] श्च समर्धुकः[2], वाञ्छितस्य प्रदायकः ।

* सङ्घजीविनाम *

सङ्घे स्थिता जीविताश्च, व्रातीनाः[1] सङ्घजीविनः॥७४१॥

* सदस्यनामानि *

पार्षदाः[1] पारिषद्या[2] श्च, सभ्या[3] श्चापि सभासदः[4] ।
सभास्तारा:[5] सदस्या[6] श्च, सामाजिकाः[7] स्मृताः समे ॥७४२॥

* सभानामानि *

सभा[1] संसत्[2] समाज[3] श्च, समज्या[4] समितिः[5] सदः[6] ।

※ मषीभाजननामानि ※

मषिधानं[१] मषीधानं[२], मषीभाजन[३] मित्यपि ।
मषिकूपी[४] मषीकूपी[५], पात्र मस्याः निगद्यते ॥७४९॥

※ मसीनामानि ※

मसी[१] मसि[२] श्च मेला[३] च, मलिनम्बु[४] मषी[५] मषिः[६] ।

※ कुलश्रेष्ठिनामानि ※

कुलक[१] श्च कुलश्रेष्ठी[२], कुलिको[३] ऽपि निगद्यते ॥७५०॥

※ द्यूतकारकनाम ※

द्यूतकर्ता भवेल्लोके, सभिको[१] द्यूतकारकः[२] ।

※ द्यूतकृत्नामानि ※

द्यूतकृत्[१] कितवः[२] प्रोक्तो, धूर्तो[३] ऽक्षधूर्त[४] एव च ॥७५१॥
अक्षदेवी[५] स एव स्या-दक्षं दीव्यति यो जनः ।

※ द्यूतनामानि ※

अक्षवती[१] पणो[२] द्यूतं[३], कैतवं[४] स्याद् दुरोदरम्[५] ॥७५२॥

※ अक्षनामानि ※

* [illegible]नामानि *

पुण्यवान्[1] सुकृती[2] धन्यः[3], पुण्यात्मा [illegible] ।

* [illegible]नामानि *

[illegible] ॥७५७॥

* [illegible]नामानि *

शिवतातिः[1] [illegible] [illegible] शिवङ्करः[3] ।
क्षेमङ्करः[4] इत्येवास्ति, कल्याणकारकः स च ॥७५८॥

* आस्तिकनामानि *

आस्तिकः[1] श्राद्धः[2] श्रद्धालुः[3], श्रद्धावानाऽऽगमे सदा ।

* नास्तिकनाम *

शास्त्रे श्रद्धा न यस्यास्ति, स भवेत् नास्तिको[1] जनः ॥७६०॥

* वैरङ्गिकनाम *

वैरङ्गिको[1] विरागार्हो[2], वैराग्यलायकं स च ।

* वीतदम्भनाम *

अमायावी जनः प्रोक्तो, वीतदम्भो[1] ऽप्यकल्कन ७ ॥७६१॥

* असम्मतनाम *

प्रणाय्यो[1] ऽसम्मतो[2] लोके, विरुद्धपथगन्तुकः ।

❀ पथिकनामानि ❀

प्रवासी[1] पथिकः[2] पान्थो[3], ऽध्वनीन[4] श्चा ऽध्वग[5] स्तथा ।
अध्वन्यो[6] देशिक[7] श्चैव, कथितो मार्ग गन्तरि ॥७६७॥

❀ पथिकसार्थनाम ❀

हारिः[1] पथिकसार्थः[2] स्यात्, पथिकानां समूहके ।

❀ पाथेयनाम ❀

पाथेयं[1] शम्बल[2] श्चापि, पथि खाद्ये निगद्यते ॥७६८॥

❀ जङ्घालनाम ❀

अतिजव[1] श्च जङ्घालो[2], वेगवानुच्यते जनः ।

❀ जङ्घाकरनामानि ❀

जङ्घाकरिक[1]-जाङ्घिको[2], जङ्घाकर[3] श्च कथ्यते ॥७६९॥

❀ त्वरितनामानि ❀

जवो[1] च जवन[2] श्चापि, त्वरितो[3] बहुवेगवान् ।

❀ वेगनामानि ❀

जवो[1] वाज[2] स्तथा वेगो[3], रयो[4] रंहः[5] स्तथा तरः[6] ॥७७०॥
प्रसर[7] श्च स्यद[8] श्चैव, वेगनामानि सन्ति वै ।

रमणी[७] सुन्दरी[८] चैव, प्रमदा[९] स्त्रीविशेषकाः ।
अङ्गानि सुन्दराण्यस्याः, सा भवेत् सुन्दरी सदा ॥७८८॥

क्रीडावती च रामा स्यात्, रमणी चापि कथ्यते ।
क्रीडन्ती ललना प्रोक्ता सुन्दराऽवयवाऽङ्गना ॥७८९॥

मनोज्ञा सर्वलोकानां, चित्ताकर्षणकारिका ।
वामाक्षी[१] च मृगाक्षी[२] च, मत्तेभगमना[३] पुनः ॥७९०॥

तरललोचना[४] ख्याता, सुस्मिता[५] चाऽलसेक्षणा[६] ।
वरारोहा[७] ऽपि प्रख्याता, तथैव वरवर्णिनी[८] ॥७९१॥

प्रतीपदर्शिनी[९] क्वापि, काव्ये शास्त्रे निरूपिता ।
लीला[१] शृङ्गारचेष्टा स्यात् मानः[१] स्त्रीणां घनं स्मृतम् ॥७९२॥

स्मरः[१] कामर्थक इत्यपि मनोविलास इत्यपि ।
एतस्मादपि नामानि, स्त्रीणां भवन्ति कानिचित् ॥७९३॥

लीलावती[१] स्मरवती, मानिनी नाम जायते ।
मनोविलासवत्यादि,-नाम काव्ये समीरितम् ॥७९४॥

॰ स्त्रीणां स्वाभाविकोऽलङ्कारः ॰

विलासो[१] ललितं[२] लीला[३] विभ्रमो[४] विहृतं[५] तथा ।
विव्वोक[६] इत्यादि विव्वोको[७],
विच्छित्तिः[८] किलिकिञ्चितम्[९] ॥७९५॥
कुट्टमितं[१०] तथा मोट्टा-यितं[११] मोटायितं[१२] च हि ।
एता सर्वा हि स्त्रीणां स्वा,-भाविकालङ्कृति भुवि ॥७९६॥

* वधूटीनामानि *

वधूटी[1] वध्वटी[2] चैव, चिरण्टी[3] च सुवासिनी[4] ॥८०१॥
चरण्टी[5] स्याच्चुरिण्टी[6] च, चिरिण्टी[7] स्ववासिनी[8] ।

* पत्नीनामानि *

पत्नी[1] पाणिगृहीती[2] च, परिग्रहः[3] सधर्मिणी[4] ॥८०२॥
सधर्मचारिणी[5] भार्या[6], द्वितीया[7] सहधर्मिणी[8] ।
ऊढा[9] क्षेत्रं[10] कलत्रं[11] च,
करात्ती[12] गृहिणी[13] जनी[14] ॥८०३॥
वधूः[15] जाया[16] तथा[17] दाराः[18],
दारा[19] दार[20] श्च गेहिनी[21] ।
पुनः सहचरी[22] चेति, कथ्यते सहचारिणी ॥८०४॥

* पुरन्ध्रीनाम *

पुरन्ध्री[1] स्याद् कुटुम्बिनी[2], सा कुटुम्बवती जनी ।

* प्रजावतीनामानि *

भ्रातुर्जाया[1] तथा भ्रातृ,-जाया[2] स्याच्च प्रजावती[3] ॥८०५॥

* पुत्रवधूनामानि *

सूनोः स्नुषा[1] वधूटी[2] च, जनी[3] वधू[4] श्च मन्यते ।

❀ दोहृदान्वितानाम ❀

गर्भकाले विभिन्नेच्छा, श्रद्धालु[1] र्दोहृदान्विता[2] ।

❀ प्रसूतिकानामानि ❀

जातापत्या[1] विजाता[2] स्यात्, प्राजाता[3] च प्रसूतिका[4] ॥ ६०॥

❀ गर्भनामानि ❀

गर्भ[1] श्च गरभो[2] भ्रूणो[3], भवेद् दोहृदलक्षणम्[4] ।

❀ गर्भाशयनामानि ❀

उलवं[1] च जरायु[2] श्च, गर्भाशयोऽपि कथ्यते ॥८६१॥

❀ कललनाम ❀

उल्वं[1] कलल[2] मित्याहुः, शुक्रशोणित मिश्रणम् ।

❀ दोहृदनामानि ❀

दोहृदं[1] दौर्हृदं[2] प्रोक्तं, श्रद्धा[3] च लालसा[4] पुनः ॥८६२॥

❀ सूतिमासनामानि ❀

सूतिमाः[1] सूतिमास[2] श्च, वैजनन[3] श्च बुध्यताम् ।

❀ प्रसवनाम ❀

प्रसव[1] श्च विजननं[2], जन्म नाम द्वयं भवेत् ॥८६३॥

ॐ दौहित्रनाम ॐ

दौहित्र¹ श्चापि नप्ता हि, मन्यते दुहितुः सुतः ॥८६९॥

ॐ प्रपौत्रनाम ॐ

प्रतिनप्ता¹ प्रपौत्रो² ऽपि, पौत्रपुत्र उदाहृतः ।

ॐ परम्परनाम ॐ

प्रपौत्रस्यात्मजो लोके, परम्पर¹ श्च कथ्यते ॥८७ ॥

ॐ पैतृष्वसेयनाम ॐ

पितृष्वसुः सुतो लोके, पैतृष्वसेय¹ उच्यते ।
पैतृष्वस्रीय² इत्यपि, द्वितीयं नाम तस्य वै ॥८७१॥

ॐ मातृष्वसेयनाम ॐ

मातृष्वसुः सुतो लोके, मातृष्वसेय¹ कथ्यते ।
मातृष्वस्रीय² इत्यपि, द्वितीयं नाम तस्य हि ॥८७२॥

ॐ [illegible]नाम ॐ

[illegible] लोके, [illegible] [illegible]¹ ।

ॐ [illegible] ॐ

[illegible] ॥८७३॥

वन्धुल[५] श्चेति नाम्नानि, कथ्यते कुलटासुतः ।

❋ कौलटिनेयनाम ❋

सती स्त्री भिक्षुकी पुत्रः, कौलटिनेय[१] उच्यते ॥८७८॥

❋ कौलटेयनाम ❋

असती भिक्षुकी सूनुः, कौलटेय[१] उदाहृतः ।

❋ क्षेत्रजनाम ❋

क्षेत्रजो[१] देवरादिजः, लोके निन्दित उच्यते ॥८७९॥

❋ औरसनाम ❋

औरस[१] श्चप्युरस्यो[२] वै, स्वस्त्री जातः सुतो भवेत् ।

❋ गोलकनाम ❋

मृते भर्तरि यो जातः, स गोलक[१] उदाहृतः ॥८८०॥

❋ कुण्डनाम ❋

पत्यौ जीवति अन्यस्माज्, जातः कुण्डः[१] सुतो भवेत् ।

❋ भ्रातृनामानि ❋

सहोदरः[१] सगर्भ[२] श्च, सोदर्यः[३] सोदर[४] स्तथा ॥८८१॥

❀ कुलीनाम ❀

पत्न्याः ज्येष्ठा स्वसा लोके, ज्येष्ठश्वश्रूः[1] कुली[2] भवेत् ।

❀ श्यालिकानामानि ❀

पत्न्याः लघ्वी स्वसा लोके, श्यालिका[1] केलिकुञ्चिका[2] ॥८८७॥
यन्त्रणी[3] चापि हाली[4] वै, कथ्यते पण्डितैः किल ।

❀ क्रीडानामानि ❀

क्रीडा[1] केलिः[2] किलः[3] खेला[4],
लीला[5] तथा सुखोत्सवः[6] ॥८८८॥
कूर्दनं[7] वर्करो[8] नर्म[9], विनोदो[10] देवनं[11] तथा ।
परिहासः[12] परीहास[13], स्तथा रागरसो[14] द्रवः[15] ॥८८९॥
ललनं[16] चेति नामापि, मन्यते नर्म वाचके ।

❀ पितृनामानि ❀

बप्पो[1] वप्ता[2] तथा तातो[3], बीजी[4] बप्यः[5] पिता[6] पुनः ॥८९०॥
जनयिता[7] जनित्र[8] श्च, रेतोधाः[9] जनको[10] भवेत् ।
पितुः पिता पितामहः[1], तद् पिता प्रपितामहः[2] ॥८९१॥
मातामहो[1] मातृवप्ता, तद् वप्ता प्रमातामहः[1] ।

※ पुत्रपुत्रीनाम ※

तथा पुत्र श्च पुत्री च, पुत्रौ[1] प्रोक्तं महीतले ।

※ भ्रातुःभगिन्याश्चनाम ※

भ्राता च भगिनी चापि, भ्रातरौ[1] कथ्येते खलु ॥८९७॥

※ स्वजननामानि ※

स्वः[1] स्वजनः[2] सगोत्र[3]श्च, ज्ञाति[4] र्बन्धु[5] श्च बान्धवः[6] ।

※ स्वकीयनामानि ※

प्रोक्तः पुनः स्वकीय[1] श्च, स्व[2] आत्मीय[3] स्तथा निजः[4] ॥८९८॥

※ सपिण्डानाम ※

सनाभयः[1] सपिण्डाः स्युः, पितुः सप्तान्तर्गता जनाः ।

※ नपुंसकनामानि ※

क्लीबः[1] पण्ड[2] स्तथा पण्ड[3], स्तृतीयाप्रकृतिः[4] किल ॥८९९॥

शण्ठः[5] शण्ड[6] स्तथा पण्डुः[7], प्रोक्तं नपुंसकं[8] पुनः ।

※ गात्रनामानि ※

इन्द्रियायतनं[1] मूर्त्तिः[2], मूर्तिमत्[3] च कलेवरम्[4] ॥९००॥

अङ्गं[5] गात्रं[6] तनुः[7] क्षेत्रं[8], तनूः[9] संहननं[10] सिनम्[11] ।

॥ ग्रीवानामानि ॥

धमनि[1] कन्धरा[2] ग्रीवा[3], शिरोधि[4] श्च शिरोधरा[5] ।
रेखा त्रयवती सैव, कम्बुग्रीवा निगद्यते ॥६४२॥

॥ शिरःपोटनामानि ॥

पुंखियो खट्टु:[1] स्यात[2], घाटा[2] श्चैव कृकाटिका[3] ।
तदर्थे च शिर: पीठं[4]-पण्डितै: समुदाहृतम् ॥६४३॥

कृक:[1] स्यात् कन्धरामध्यं[2], कृक पार्श्वौ तु वीतनौ[1] ।
ग्रीवाधमन्यौ प्राग् नीले[1], पश्चात् मन्ये[1] कलम्बिके[2] ॥६४४॥

॥ कण्ठनामानि ॥

गलो[1] निगरण[2] श्चैव, कण्ठ:[3] कण्ठस्य कथ्यते ।

॥ कण्ठमणिनाम ॥

मन्ये कण्ठमणिर्नाम,-काकलक[1] श्च काकल:[2] ॥६४५॥

॥ स्कन्धनामानि ॥

स्कन्धो[1] भुजशिर[2] श्चांसो[3], भुजशिखर[4] मुच्यते ।

॥ जत्रुनाम ॥

सन्धिकरों ऽसग: जत्रु:[1], उच्यते जगती जनै: ॥६४६॥

॥ बाहुनामानि ॥

बाहु[1] र्बाहा[2] भुजो[3] दो[4] श्च, प्रवेष्ट:[5] कथ्यते पुन: ।

मध्या[1] च मध्यमा[2] ज्येष्ठा[3], सावित्री[1] स्यादनामिका[2] ॥६५४॥

कनीनिका[1] कनिष्ठा[2] च, व्यवहारे प्रयुज्यते ।
अवहस्तः[1] प्रसिद्धोऽपि, कथ्यते हस्तपृष्ठतः ॥६५५॥

❀ नखनामानि ❀

कामाङ्कुशो[1] भुजाकण्टः[2], करजः[3] पाणिज[4] स्तथा ।
कररुहः[5] करशूकः[6], पुनर्भवः[7] पुनर्नवः[8] ॥६५६॥

महाराजो[9] नख[10] श्चैव, नखर[11] श्चापि कथ्यते ।
प्रदेशिन्यादिभिः सार्द्ध-मङ्गुष्ठे वितते सति ॥६५७॥

प्रादेश[1] श्चापि ताल[2] श्च, गोकर्ण[3] स्तदनन्तरम् ।
वितस्तिः[4] कथ्यते भूयो, जगति पण्डितैः जनैः ॥६५८॥

प्रसारिताङ्गुलौ पाणौ प्रहस्तः[1] प्रतल[2] स्तलः[3] ।
चपेट[4] स्तालिका[5] ताल,-श्चेति हस्तस्य पञ्चकः ॥६५९॥
कथ्यते तौ युतौ सिंह-तल[1] संहतल[2] स्तथा ।

❀ मुष्टिनामानि ❀

संपिण्डिताङ्गुलिः पाणि, र्मुचुटो[1] मुट्टुटिः[2] पुनः ॥६६०॥

मुष्टि[3] र्मुस्तु[4] श्च सङ्ग्राहो[5], ऊर्ध्वमुष्टिः खटक[1] स्तु वै ।
प्रसृतः[1] प्रसृतिः[2] पाणिः, कुञ्चितः कथ्यते किल ॥६६१॥

❊ वक्षनामानि ❊

उर[१] श्च हृदयस्थानं[२], क्रोडा[३] क्रोडं[४] भुजान्तरे[५] ।
वत्सो[६] वत्स[७] तथा वक्ष[८], श्चेति जगति मन्यते ॥९६९॥

❊ हृदयनामानि ❊

गुणाधिष्ठानकं[१] हृद्[२] च, हृदयं[3] च स्तनान्तरम्[४] ।
असहं[५] च त्रसं[६] मर्म-चरं[७] मर्मवरं[८] तथा ॥९७०॥

❊ कुचनामानि ❊

स्तनौ[१] कुचौ[२] च वक्षोजौ[3], धरणौ[४] च पयोधरौ[५] ।
उरसिजौ[६] तथोरोजौ[७], जानीयान्नाम सप्तकम् ॥९७१॥

❊ स्तनमुखनामानि ❊

स्तनाग्रं[१] स्तनवृन्त[२] ञ्च, स्तनमुख[3] ञ्च मेचकः[४] ।
स्तनशिखा[५] च पिप्पलः[६], चूचुकं[७] चेति मन्यते ॥९७२॥

❊ उदरनामानि ❊

पिचण्डो[१] मलुकः[२] कुक्षिः[3], गर्भ[४] श्च जठरो[५]-दरे[६] ।
तुन्दं[७] रोमलताधारः[८], तुन्दि[९] श्च कथ्यते बुधैः ॥९७३॥

❊ यकृन्नामानि ❊

कालखण्डं[१] च कालेयं[२], कालखञ्जं[३] च कालकम्[४] ।

❀ कटिनामानि ❀

कटिः[1] कटः[2] कटीर[3] श्च, कलत्र[4] श्च ककद्मती[5] ।
श्रोणिः[6] काञ्चीपदं[7] चेति, नामानि प्रथितानि वैः ॥६७६॥

❀ नितम्बनाम ❀

आरोह[1] श्च नितम्बो[2]ऽपि, स्त्रीकट्याः पश्च भाग्भवेत् ।

❀ जघननाम ❀

जघनं[1] मन्यते विश्वे, स्त्रीकट्या अग्रतः पुनः ॥६८०॥

त्रिकं[1] वंशाध स्तत् पार्श्व-कूपकौ तु कुकुन्दरे[1] ।
कुकुन्दुरः[2] कटीकूपौ[3], उत्खिलिङ्गौ[4] रतावुके[5] ॥६८१॥

❀ पुतनामानि ❀

स्फिजौ[1] स्फिचौ[2] कटिप्रोथौ[3], पुतौ[4] चेति हि कथ्यते ।

❀ योनिनामानि ❀

भगो[1] ऽपत्यपथो[2] योनिः[3], वराङ्गं[4] स्मरमन्दिरम्[5] ॥६८२॥

स्त्रीचिह्नं[6] च च्युति[7] श्चापि वुलि[8] श्च स्मरकूपिका[9] ।
एतानि मन्यते योने, र्नामानि पण्डितो जनः ॥६८३॥

❀ लिङ्गनामानि ❀

पुंश्चिह्नं मेढ्रं[2] मेढ्रः[3], शिश्नं[4] च शेप[5]-शेपसी[6] ।

❀ विटपनाम ❀

अण्डमूलं महाबीज्यं[१], विटप[२] श्चापि कथ्यते ।

❀ वङ्क्षरा-सक्थिनामानि ❀

उरुसन्धि वंङ्क्षण:[१] स्या-दुरु:[१] सक्थि[२] रतत् पर्व्व तु ॥९८९॥

❀ जानुनामानि ❀

अष्ठीवान्[१] नलकील[२] श्च, जानु[३] र्नाम त्रयं भवेत् ।

पश्चाद्भागो ऽस्य मन्दिर:[१] कपोली[१] स्त्वग्रिम: पुन: ॥९९०॥

❀ जङ्घानामानि ❀

जङ्घा[१] च प्रसृता[२] नाम, नलकिनी[३] निगद्यते ।

अग्रजङ्घा[१] प्रतिजङ्घा[२], जङ्घाग्रभाग उच्यते ॥९९१॥

❀ पिण्डिकानाम ❀

पिचण्डिका[१] पिण्डिका[२] च, कथ्यते कोविदै: किल ।

❀ घुण्टकनामानि ❀

स्याद् गुल्फ[१] श्चरणग्रन्थि[२],-र्घुण्टको[३] घुटिको[४] पुट:[५] ॥९९२।

❀ चरणनामानि ❀

चरण[१] श्चलन:[२] पाद:[३], क्रम[४] श्च क्रमण:[५] पद:[६] ।

❀ जातिफलनामानि ❀

जातिफलं[१] जातीफलं[२], पुटकं[३] मदशौण्डकम्[४] ।
कोशफलं[५] तथा जाति-कोशं[६] सौमनसं[७] पुनः ॥१०३९॥

❀ कर्पूरनामानि ❀

कर्पूरो[१] घनसार[२] श्च, सिताभ्रो[३] हिमवालुका[४] ।
चन्द्रः[५] कर्पूरवाची वै, प्रयोगे दृश्यते सदा ॥१०४०॥

❀ कस्तूरीनामानि ❀

कस्तूरी[१] गन्धधूली[२] च, कथ्यते मृगनाभिजा[३] ।
मृगनाभि[४] र्पुनश्चैव, मृगमदो[५] ऽपि मन्यते ॥१०४१॥

❀ केशरनामानि ❀

केशरं[१] कुङ्कुमं[२] रक्तं[३], कालेयं[४] करटं[५] वरम्[६] ।
कुसुमान्तं[७] कुसुम्भं[८] च, सङ्कोचपिशुनं[९] तथा ॥१०४२॥
जपापुष्पं[१०] जवापुष्पं[११], पिशुनं[१२] वासनीयकम्[१३] ।
कुसुमान्तं[१४] च संकोचं[१५], काश्मीरजन्म[१६] जागुडम्[१७]॥१०४३॥
प्रियङ्गु[१८] पीतकावेरं[१९], पीतनं[२०] चापि दीपनम्[२१] ।
वाह्लीकं[२२] वाह्लिकं[२३] वर्ण्यं[२४],
वर्णं[२५] लोहितचन्दनम्[२६] ॥१०४४॥

❀ विविधधूपनामानि ❀

पायसो[1] क्षीरधूप[2] श्च, दध्याह्वयो[3] घृताह्वयः[4] ।
क्षीराह्वय[5] श्च श्रीवासः[6], श्रीवेष्टः[7] सरलद्रवः[8] ॥१०५०॥

स्थानात् स्थानान्तरं गच्छन्, धूपो गन्धपिशाचिका[1] ।

❀ हस्तबिम्बनाम ❀

स्थासको[1] हस्तबिम्बं[2] च, कथ्यते हस्तथापकः ॥१०५१॥

❀ अलङ्कारनामानि ❀

आभरण[1]-मलङ्कारः[2], परिष्कार[3] श्च भूषणम्[4] ।
ज्ञायतां भूषणं विश्वे, विभिन्न भूषणं पुनः ॥१०५२॥

❀ विभिन्नभूषणनामानि ❀

चूडारत्नं[1] चूडामणिः[2], शिरोरत्नं[3] शिरोमणिः[4] ।
तरलो[1] नायक[2] श्चापि, हारान्तर्मणि[4] उच्यते ॥१०५३॥

❀ मुकुटनामानि ❀

उष्णीष[1] मुकुटं[2] मौलिः[3], किरीटं[4] मकुट[5] स्तथा ।
कोटीरं चेति नामानि, मन्यते मुकुटस्य हि ॥१०५४॥

❀ मालानामानि ❀

मूर्ध्नि माल्य[1] ञ्च माला[2] च, स्रक्[3] तथा पुष्पदाम[4] च ।

पत्रवल्लि[५] पत्रवल्ली[६], पत्राङ्गुली[७] पत्राङ्गुलिः[८]।
स्तनादिभूषणे पत्र-वल्लरी[९] पत्रमञ्जरी[१०] ॥१०६२॥

❋ पत्रपाश्यानाम ❋

प्रोक्ता ललाटिका[१] पत्र-पाश्या[२] च भालभूषणे।

❋ वालपाश्यानामानि ❋

पार्यतथ्या[१] पारतथ्या[२], वालपाश्या[३] च कथ्यते ॥१०६३॥
पुनः पर्यवतथ्या[४] हि, केशबन्धनभूषणम्।

❋ कर्णिकानाम ❋

कथ्यते कर्णिका[१] किल, कोविदैः कर्णभूषणम् ॥१०६४॥

❋ कुण्डलनामानि ❋

कुण्डलं[१] ताडपत्रं[२] च, ताडङ्कः[३] कर्णवेष्टकः[४]।
कर्णादर्श[५] श्च सौवर्णः[६], कर्णयोः स्वर्णभूषणे ॥१०६५॥
उत्क्षिप्तिका[१] च कर्णान्दुः[२], कर्णान्दूः[३] कर्णभूषणे।
बालिका[१] वालिका[२] चाऽस्ति, भूषणं कर्णपृष्ठगा ॥१०६६॥

❋ कण्ठभूषानाम ❋

ग्रैवेयकं[१] कण्ठभूषा[२], ग्रीवायाः भूषणं भवेत्।
ललन्तिका लम्बमाना[१], हेम्ना प्रालम्बिका[१] कृता ॥१०६७॥

❀ शणादिवस्त्रनामानि ❀

दुकूलं[1] स्याद् दुगूलं[2] च, क्षौमं[3] शणादिजं पटम् ।
कार्पासं[1] वादरं[2] फालं[3], कार्पासोत्थं हि कर्पटम् ॥१०८८॥

कौशेयं[1] कृमिकोशोत्थं, कथ्यते क्षोमवस्त्रकम् ।
मृगस्य रोमजं वस्त्रं, राङ्कवं[1] मृगरोमजम्[2] ॥१०८९॥

❀ कम्बलनामानि ❀

ऊर्णायु[1] राविक[2] श्चैव, रल्लकः[3] कम्बल[4] स्तथा ।
औरभ्र[5] श्चेति नामानि, मन्यन्ते कम्बलस्य हि ॥१०९०॥

❀ अनाहतनामानि ❀

तन्त्रकं[1] निष्प्रवाणि[2] स्या-न्नवं वस्त्रं त्वनाहतं[3] ।

❀ प्रावरणनामानि ❀

प्रच्छादनं[1] च संव्यानं[2], प्रावरणो[3]-त्तरीयके[4] ॥१०९१॥

❀ उत्तरासङ्गनामानि ❀

वैकक्ष[1] मुत्तरासङ्गः[2], स्यात् प्रावारो[3] बृहतिका[4] ।

❀ स्थूलशाटनाम ❀

वराशिः[1] स्थूलशाट[2] श्च, कथ्यते स्थूलवस्त्रकम् ॥१०९२॥

❀ नवार्द्धचक्रि-वासुदेवनामानि ❀

प्राजापत्य[1] स्त्रिपृष्ठो[1] ऽथ, त्रिपृष्ठ[1]-ब्रह्मसम्भवौ[1] ॥११२९॥

स्वयम्भू[2] रुद्रतनयः[2], सोमभू[3] पुरुषोत्तमः[3] ।
शैवः[4] पुरुष[4] सिंहोऽपि महाशिरस्समुद्भवः[4] ॥११३०॥

पुरुषपुण्डरीक[2] स्तु, दत्तो[1] ऽग्निसिंहनन्दनः[2] ।
दाशरथि[1] र्नारायण[2], कृष्ण[1] स्तु वसुदेवभूः ॥११३१॥

वासुदेवा-नवैतानि, कृष्णवर्णाजितानि वै ।

❀ नवबलदेवनामानि ❀

बलदेवाः नव शुक्लाः, कथ्यते पुन रत्र हि ॥११३२॥

अचलो[1] विजयो[2] भद्रः[3], सुप्रभो[4] ऽपि सुदर्शनः[5] ।
आनन्दो[6] नन्दन[7] श्चैव, पद्मो[8] राम[9] स्तथा किल ॥११३३॥

❀ नवप्रतिवासुदेवनामानि ❀

अथ विष्णुद्विषः[1] प्रोक्ताः तन्नामानि नवाऽत्र हि ।
अश्वग्रीव[1] श्च तारक[2],-स्तथा वै मेरको[3] मधुः[4] ॥११३४॥

निशम्भो[5] बलि[6]-प्रह्लादौ[7], लङ्केशः रावणोऽष्टमः ।
नवमस्तु जरासन्धः[9], कथ्यते मगधेश्वरः ॥११३५॥

शलाका पुरुषो शास्त्रे, सजिनेन्द्राश्च षष्टिकाः ।
तथैव मुत्सर्पिण्यां हि, नाम भिन्नैस्तु जानताम् ॥११३६॥

❀ वालीनामानि ❀

वाली[1] वालि[2] श्च सुग्रीवा-ग्रज[3] श्चेन्द्रसुतो[4] भवेत् ॥११४३॥

❀ सुग्रीवनाम्नी ❀

सुग्रीव[1] स्तथाऽऽदित्य-सूनु[2] र्नाम निगद्यते ।

❀ हनुमाननामानि ❀

हनूमान्[1] हनुमान्[2] चैव, मारुति[3] र्वज्रकङ्कटः[4] ॥११४४॥

पुनः स्यात् केशरीसुत[5], आञ्जनेयो[6] ऽर्जुनध्वजः[7] ।

❀ रावणनामानि ❀

लङ्कापति[1] स्तु लङ्केशः[2], पौलस्त्यो[3] दशकन्धरः[4] ॥११४५॥

दशशिराः[5] दशास्य[6] श्च, दशकण्ठ[7] श्च रावणः[8] ।

राक्षसेशो[9] रक्षईश[10], श्चेति नामानि मन्यते ॥११४६॥

❀ इन्द्रजित्नामानि ❀

इन्द्रजित्[1] शक्रजित[2] चैव, मेघनाद[3] श्च रावणिः[4] ।

मन्दोदरीसुतः[5] प्रोक्त, नाम रावणनन्दनः[6] ॥११४७॥

❀ युधिष्ठिरनामानि ❀

अजमीढ[1] स्तथाऽजात-शत्रु[2] र्युधिष्ठिरः[3] पुनः ।

धर्मपुत्र[4] श्च शल्यारिः[5], कङ्क[6] श्च कथ्यते किल ॥११४८॥

❀ द्रौपदीनामानि ❀

सैरन्ध्री[1] द्रौपदी[2] कृष्णा[3], वेदिजा[4] नित्ययौवना[5] ॥११५६॥
याज्ञसेनी[6] च पाञ्चाली[7], नामानि सप्त सन्तिवै ।

❀ कर्णनामानि ❀

राधेय[1] श्चाङ्गराट्[2] चैव, कर्णं[3] श्चम्पाधिप[4] स्तथा ॥११५७॥

राधा[5]-सुता[6]-ऽर्कतनयः[7] कर्णनामानि सन्ति वै ।

पुन स्तस्य धनु र्नाम, कालपृष्ठ[1] हि मन्यते ॥११५८॥

❀ श्रेणिकनाम ❀

प्रख्यातः श्रेणिको[1] भूपो, भम्भासारो[2] ऽपि कथ्यते ।

❀ सालवाहननामानि ❀

स्यात् सालवाहनो[1] राजा, हाल[2] श्च सातवाहनः[3] ॥११५९॥

❀ कुमारपालनामानि ❀

कुमारपाल भूपाल[1], श्चौलुक्यः[2] परमार्हतः[3] ।
राजर्षि[4] श्चापि धर्मात्मा[5], मारि[6]-व्यसनवारको[7] ॥११६०॥

तथा मृतस्वमोक्ता[8] वै, कथ्यते पण्डितै रिह ।

❀ राजवंश्यनाम ❀

राजबीजी[1] राजवंशी[2], राजवंश्योऽपि कथ्यते ॥११६१॥

❀ राजसिंहासननामानि ❀

सिंहासनं[1] सुवर्णस्य, रूपादे स्तु नृपासनम्[1] ॥११६७॥
भद्रासनं[2] पुनः प्रोक्तं, नृपयोग्यं हि भूतले ।

❀ राजछत्रनामानि ❀

अथोष्णवारणं[1] नृप,-लक्ष्म[2] चाऽऽतपत्रं[3] पुनः ॥११६८॥
आतपवारणं[4] छत्रं[5], राजछत्रं हि कथ्यते ।

❀ चामरनामानि ❀

चमर[1] श्चामरं[2] रोम-गुच्छ[3] श्च वालव्यजनम्[4] ॥११६९॥
प्रकीर्णक[5] श्च नामानि, मन्यते चामरस्य वै ।

❀ स्थगीनाम ❀

स्थगी[1] ताम्बूलकरङ्क[2], स्ताम्बूलपात्रमुच्यते ॥११७०॥

❀ भृङ्गारनाम ❀

भृङ्गारः[1] कनकालुका[2], हेमकुम्भो हि कथ्यते ।

❀ पूर्णकुम्भनाम ❀

पूर्णकुम्भो[1] भद्रकुम्भो[2], जलयुक्तो निगद्यते ॥११७१॥

❀ पादपीठनाम ❀

पदासनं[1] तथा पाद-पीठं[2] प्रोक्तं महीतले ।

❀ रक्षिवर्गनाम ❀

रक्षिवर्ग[1] ऽनिकस्थ[2] श्च, कथ्यते ह्यङ्गरक्षकः ॥११७७॥

❀ अधिकृतनामानि ❀

अधिकृत[1] स्तथाऽध्यक्ष[2], श्चाधिकारी हि कथ्यते ।

❀ पाचकनामानि ❀

पौरोगवः[1] सूदाध्यक्षो[2], वरिष्ठः पाचको जनः ॥११७८॥

औदनिको[1] गुणः[2] सूपः[3], सूपकार[4] श्च वल्लवः[5] ।

सूद[6] आरालिक[7] श्चैव, भक्तकार[8] श्च कथ्यते ॥११७९॥

❀ कनकाध्यक्षनामानि ❀

भैरकः[1] कनकाध्यक्षो[2], हेमाध्यक्ष[3] श्च हैरिकः[4] ।

❀ रूपाध्यक्षनामानि ❀

रूप्याध्यक्ष[1] स्तुस एव टङ्कपति[2] हि नैष्किकः ॥११८०॥

❀ स्थानाध्यक्षनाम ❀

कथ्यते स्थानिकः[1] स्थाना-ध्यक्ष[2] श्च साक्षरैः किल ।

❀ शुल्काध्यक्षनाम ❀

—काध्यक्ष[1] श्च शौल्किक.[2], कथ्यते विबुधै रिह ॥११८१॥

❀ पुराध्यक्षनामानि ❀

कोट्टपतिः[1] पुराध्यक्षः[2], पौरिको[3] दाण्डपाशिकः[4] ॥११८७॥

❀ अन्तःपुरनामानि ❀

शुद्धान्तो[1] ऽन्तःपुरं प्रोक्त, मवरोधो[3] ऽवरोधनम् ।

❀ अन्तःपुररक्षकनामानि ❀

सौविदाः[1] सौविदल्लाः[2] स्यात्,
स्थापत्या[3] श्च कञ्चुकिनः[4] ॥११८८॥

षण्ढो[1] वर्षवरः[2] प्रोक्तः, क्लीवे ऽन्तःपुररक्षकः ।

❀ शत्रुनामानि ❀

शत्रु[1] श्च शात्रवो[2] ऽमित्रः[3], प्रत्यनीकः[4] पर[5] स्तथा ॥११८९॥

विपक्ष[6] प्रत्यवस्थाता[7], सपत्नः[8] परिपन्थकः[9] ।
प्रत्यर्थी[10] परिपन्थी[11] च, प्रतिपक्षः[12] रिपुः[13] पुनः ॥११९०॥

असहनो[14] ऽसुहृद्[15] दुर्हृद्[16],
द्वेषी[17] दस्यु[18] स्तथा द्विषन्[19] ।
अरातिः[20] अभिमाति[21] श्चा,-
ऽभिघाति[22] द्विट्[23] तथाऽहितः[24] ॥११९१॥

अरि[25] र्वैरी[26] जिघांसु[27] श्च, रिपो र्नामानि मन्यते ।

❀ न्यायनामानि ❀

नीति[१] र्न्यायो[२] नयः[३] कल्पो[४], देशरूपं[५] समञ्जसम्[६] ॥१२१२॥
अभ्रेष[७] श्चेति नामानि, प्रथितानि महीतले ।

❀ न्याय्यनामानि ❀

उचित[१] चाभिनीतं[२] च, युक्तं[३] प्राप्तं[४] च साम्प्रतम्[५] ॥१२१३॥
न्याय्य[६]-मौपयिकं[७] लभ्यं[८], भजमान[९] मपि मन्यते ।

❀ अधिकारनाम ❀

अधिकारः[१] प्रक्रिया[२] च, व्यवस्था कार्य मुच्यते ॥१२१४॥

❀ मर्यादानामानि ❀

मर्यादा[१] धारणा[२] संस्था[३], स्थितिः स्यान्न्यायसंस्थितिः ।

❀ अपराधनामानि ❀

व्यलीकं[१] विप्रियं[२] मन्तुः[३], आगा[४] ऽपराध[५] उच्यते ॥१२१५॥

❀ करनामानि ❀

करो[१] वलि[२] र्भागधेयो[३], द्विपाद्यो[१] द्विगुणो दमः ।

❀ सेनानामानि ❀

अनीकं[१] कटकं[२] तन्त्रं[३], सेना[४] सैन्यं[५]-मनीकिनी[६] ॥१२१६॥

❀ न्यायनामानि ❀

नीति[1] र्न्यायो[2] नयः[3] कल्पो[4], देशरूपं[5] समञ्जसम्[6] ॥१२१२॥
अभ्रेष[7] श्चेति नामानि, प्रथितानि महीतले ।

❀ न्याय्यनामानि ❀

उचित[1] चाभिनीतं[2] च, युक्तं[3] प्राप्तं[4] च साम्प्रतम्[5] ॥१२१३॥
न्याय्य[6]-मौपयिकं[7] लभ्यं[8], भजमान[9] मपि मन्यते ।

❀ अधिकारनाम ❀

अधिकारः[1] प्रक्रिया[2] च, व्यवस्था कार्य मुच्यते ॥१२१४॥

❀ मर्यादानामानि ❀

मर्यादा[1] धारणा[2] संस्था[3], स्थितिः स्यान्न्यायसंस्थितिः ।

❀ अपराधनामानि ❀

व्यलीकं[1] विप्रियं[2] मन्तुः[3], आगो[4] ऽपराध[5] उच्यते ॥१२१५॥

❀ करनामानि ❀

करो[1] बलि[2] र्भागधेयो[3], द्विपाद्यो[1] द्विगुणो दमः ।

❀ सेनानामानि ❀

अनीकं[1] कटकं[2] तन्त्रं[3], सेना[4] सैन्यं[5]-मनीकिनी[6] ॥१२१६॥

वरूथो[1] रथगुप्तिः[2] स्याद्, लोहावृत्तं रथोपरि ।
अपस्करा[1] रथाङ्गानि[2], नामानि विदितानि वै ॥१२३६॥

❀ शिबिकानामानि ❀

झम्पानं[1] याप्ययानं[2] स्याद्, झम्फानं[3] शिबिका[4] पुनः ।

❀ दोलानामानि ❀

दोला[1] हिण्डोलकः[2] प्रेङ्खा[3], कथ्यते च शयानकः[4] ॥१२३७॥
वैनीतिकं[1] परम्परा-वाहनं शिविकादिकम् ।

❀ वाहननामानि ❀

यानं[1] युग्यं[2] तथा पत्रं[3], वाह्यं[4] वह्यं[5] च वाहनम्[6] ॥१२३८॥
धोरणं[7] चेति नामानि, यानस्य विदितानि वै ।

❀ सारथिनामानि ❀

सव्येष्ठा[1] सारथिः[2] सादी[3], क्षत्ता[4] रथकुटुम्बिकः[5] ॥१२३९॥
सव्येष्ठो[6] दक्षिणस्थ[7] श्च, प्रवेता[8] प्राजिता[9] तथा ।
यन्ता[10] सूतो[11] नियन्ता[12] च, नामानि प्रथितानि वै ॥१२४०॥

❀ रथरोहिनामानि ❀

तूणी[४] धन्वी[५] धनुर्भृ[६] च्च, निषङ्गी[७] मन्यते पुनः।

❀ काण्डीरनाम ❀

काण्डीरः[१] काण्डवान्[२] चापि, काण्डधारी हि कथ्यते ॥१२६१॥

❀ कृतहस्तनामानि ❀

कृतपुङ्खः[१] कृतहस्तः[२], सुप्रयुक्तशरो[३] जनः।

समवेध्य श्च जानाति सम्यग्वाण प्रक्षेपणम् ॥१२६२॥

❀ लघुहस्तनाम ❀

लघुहस्तः[१] शीघ्रवेधी[२], लक्ष्यं विध्यति शीघ्रतः।

❀ भ्रष्टवाणनाम ❀

भ्रष्टवाणो[१] ऽपराद्धेषु[२], यों लक्ष्यं नैव साधयेत् ॥१२६३॥

❀ दूरवेधीनाम ❀

दूरवेधी[१] दूरापाती[२], दूराल्लक्ष्यं यो विध्यति।

❀ शस्त्रनामानि ❀

आयुधं[१] हेति[२] रस्त्र[३] ञ्च, शस्त्रं[४] प्रहरणं[५] पुनः ॥१२६४॥

पाणिमुक्तं[१] च शक्तिः स्यात्, यन्त्रमुक्तं[२] शरादिकम्।

अमुक्तं[३] शस्त्रिका प्रोक्ता, मुक्तामुक्तं[४] यष्टि रिति ॥१२६५॥

❀ बाणनामानि ❀

बाण:[1] काण्ड:[2] कलम्ब[3] श्च,
कादम्ब[4] श्चोऽस्त्रकण्टक:[5] ॥१२७१॥

कङ्कपत्र:[6] पृषत्क[7] श्च, वीरशङ्कु[8] श्च सायक:[9] ।
आशुगो[10] ऽजिह्मगो[11] रोपो[12],
गार्ध्रपक्ष:[13] शर:[14] खग:[15] ॥१२७२॥

लक्षहा[16] मार्गणो[17] वारो[18],
विशिख[19] श्च शिलीमुख:[20] ।
चित्रपुङ्ख[21] श्च पत्री[22]-पु:[23],
प्रदरो[24] मर्मभेदन:[25] ॥१२७३॥

पत्रवाह[26] श्च नामानि, कथ्यन्ते विबुधं रिपो: ।

❀ बाणविशेषनामानि ❀

एषण:[1] सर्वलोह[2] श्च. लोहनालो[3] ऽस्त्रसायक:[4] ॥१२७४॥

प्रक्ष्वेडन[5] श्च नाराचो[6]. लोहबाणाभिधानि च ।
निरस्त:[1] प्रहित:[2] क्षिप्त[3], क्षिप्तबाणो हि कथ्यते ॥१२७५॥

विषाक्तो[1] लिप्तको[2] दिग्ध[3], श्चोक्तं वै विषवान् शर: ।
बाणमुक्ति[1] र्व्यवच्छेद:[2], धनुस्सङ्गात् प्रयाति यत् ॥१२७६॥

तीव्रता बाणवेगस्य, कथ्यते दीप्तिनामत:[1] ।
धारवान् लोहबाणस्तु, क्षुरप्रो[1] विनिगद्यते ॥१२७७॥

वन्दीजनोऽपि नामानि-षट्सन्ति व्यवहारतः ॥१३१९॥

घाण्टिका[१] श्चाक्रिकाः[२] बन्दी[१], सूतो[२] मङ्गलपाठकः[३] ।
मगधो[१] मागधो[२] मह्वः[३], इति नामानि स्युः पुनः ॥१३२०॥

❀ स्तुतिव्रतनाम ❀

स्तुतिव्रत[१] स्तथा नग्नः[२], स्तुतिपाठक उच्यते ।

❀ भोगावलीनाम ❀

स्तुति पाठकग्रन्थस्तु, भोगावली[१] निगद्यते ॥१३२१॥

❀ पराक्रमनामानि ❀

शुष्म[१] शुष्मं[२] सहः[३] शौर्यं[४], बलं[५] प्राणः[६] पराक्रमः[७] ।
ऊर्ज्जं[८] ऊर्ग्[९] द्रविणं[१०] द्युम्नं[११],
स्थाम[१२] शक्ति[१३] स्तथा तरः[१४] ॥१३२२॥

ओजः[१५] पराक्रमस्येति, नामानि संभवन्ति वै ।

❀ युद्धनामानि ❀

युद्धं[१] सङ्ख्यं[२] च सङ्ग्रामः[३], संमर्द[४] श्च समाह्वयः[५] ॥१३२३॥

संङ्गरः[६] संयुगं[७] सयत्[८], समितिः[९] साम्परायिकम्[१०] ।
समुदायः[११] समाघातः[१२],
समुदयः[१३] समित्[१४] मृधम्[१५] ॥१३२४॥

❀ नासीरनाम ❀

अग्रयानं[1] च नसीरं[2], युद्धाग्रे गमनं भवेत् ।

❀ पीडननाम ❀

पीडन[1] मवमर्दः[2] स्याद्, शत्रुतो देशपीडने ॥१३३०॥

❀ प्रपातनामानि ❀

अवस्कन्दो[1] ऽभ्यवस्कन्दो[2], ऽभ्यासादनं[3] तथैव च ।
धाटि[4] र्धाटी[5] प्रपात[6] श्चा-ऽऽक्रमणं छलतो भवेत् ॥१३३१॥

❀ सौप्तिकनाम ❀

सौप्तिकं[1] छलतो रात्रा-वाक्रमणं हि कथ्यते ।

❀ वीराशंसननामानि ❀

आजिभीष्मभू[1] श्च वीरा-शंसनं[2] वीराशंसनी[3] ॥१३३२॥

संहार कारिणी युद्ध भूम्या ताम त्रयं सदा ।

❀ नियुद्धभूनाम ❀

नियुद्ध[1] भूरक्षवाहा[2], मल्लयुद्धस्थलं भवेत् ॥१३३३॥

❀ मूर्च्छानामानि ❀

मूर्च्छा[1] मोहः[2] कश्मल[3] श्च, नाम मूर्च्छितजन्तुनः ।

❀ स्खलितनाम ❀

छलं[1] च स्खलितं[2] नाम, मार्गच्युतः स कथ्यते ॥१३३९॥

❀ परिभूतनामानि ❀

अभिभूतः[1] पराभूतः[2], परिभूतः[3] पराजितः[4] ।
जितो[5] भग्न[6] श्च नामानि, पराभवस्य मन्यताम् ॥१३४०॥

❀ पलायितनामानि ❀

पलायितो[1] गृहीतदिक्[2], नष्ट[3] स्तथा तिरोहितः[4] ।
पलायितस्य नामानि, विजानन्ति मनीषिणः ॥१३४१॥

❀ जिताहवनाम ❀

जितकाशी[1] जिताहवो[2], जयवान् कथ्यते युधि ।

❀ पतितनाम ❀

प्रस्कन्नः[1] पतित[2] श्चैव, पतितार्थे स मन्यते ॥१३४२॥

❀ चारकनामानि ❀

चार[1] श्च चारको[2] गुप्तिः[3], कारा[4] कारागृहे भवेत् ।

❀ वन्दिनामानि ❀

प्रग्रहो[1] ग्रहको[2] वन्दी[3], चोपग्रहो[4] ऽपि कथ्यते ॥१३४३॥

❀ शुद्धकर्मनाम ❀

अवदानं[1] कर्मशुद्धं[2], शुद्धाचरण मुच्यते ।

❀ ब्राह्मणनामानि ❀

भूदेवो[1] ब्राह्मणो[2] ब्रह्मा[3], षट्कर्मा[4] मुखसम्भवः[5] ॥१३५०॥

अग्रजन्मा[6] द्विजन्मा[7] च, द्विजाति[8] र्वाडवा[9] द्विजः[10] ।

वर्णज्येष्ठः[11] शर्मीगर्भो[12],

वेदगर्भो[13] विप्रः[14] पुनः[14] ॥१३५१॥

एतस[14] श्चाग्रजो[16] मैत्र[17], श्चाग्रजाति[18] स्त्रयीमुखः[19] ।

सावित्र[20] सूत्रकण्ठ[21] श्च, नामानि ब्राह्मणस्य वै ॥१३५२॥

❀ वटुनामानि ❀

माणवको[1] वटु[2] श्चैव, वटु[3] र्वटुक उच्यते ।

❀ भिक्षानाम ❀

अन्नादियाचनं भिक्षा[1], ग्रासमात्रक[2] मुच्यते ॥१३५३॥

❀ उपनयनामानि ❀

उपनय[1] श्चोपनायो[2], वटूकरण[3] मानयः[4] ।

यज्ञोपवित संस्कारः, कथयन्ति मनीषिणः ॥१३५४॥

❀ यजमाननामानि ❀

आदेष्टा[1] च व्रती[2] यष्टा[3], यजमान[4] श्च याजकः[5] ।
एतन्नामानि कथ्यन्ते, यज्ञकर्तरि पुंसि वै ॥१३६१॥

❀ दीक्षितनाम ❀

दीक्षितः[1] सोमयाजी[2] च, स्यात् सोमयोज्ञकारकः ।

❀ इज्याशीलनाम ❀

इज्यशीलो[1] यायजूको[2], यज्ञकर्मस्वभाववान् ॥१३६२॥

❀ यज्वनोनामानि ❀

सोमरसाकृष्य यज्ञ-कर्त्ता यज्वा[1] ऽऽसुतोवलः[2] ।

❀ सोमपनामानि ❀

सोमप[1] स्तु सोमपीती[2], सोमपीथी[3] तथैव च ॥१३६३॥
सोमपीवी[4] च यज्ञे स्यात्, स सोमरसपीवकः ।

❀ स्थपतिनाम ❀

वृहस्पति र्यज्ञकर्त्ता, स्थपति[1] र्गीः पतीष्टिकृत्[2] ॥१३६४॥

❀ सर्ववेदानाम ❀

सर्ववेदाः[1] स एवास्ति, यज्ञे सर्वसमर्पति ।

भूतयज्ञस्य नामाऽस्ति, भूतयज्ञ[1] स्तथा बलिः[2] ।
प्रोक्ता एते महायज्ञाः[1], पञ्चापि वै महीतले ॥१३७१॥

यज्ञोयः शुक्लपक्षान्ते, स पौर्णमास[1] उच्यते ।
दर्शो[2] ऽपि कृष्णपक्षान्ते, आमावास्य[2] श्च मन्यते ॥१३७२॥

सौमिकी[1] दीक्षणीयेष्टिः[2], स्याद् दीक्षा[1] व्रतसङ्ग्रहः[2] ।
सुगहना वृतिः कुम्बा[1], वेदी[1] भूमिः परिष्कृता ॥१३७३॥

चत्वरं[1] स्थण्डिलं[2] यज्ञा ऽसंस्कृत भूमि रुच्यते ।
पशुहिंसायज्ञस्तम्भः, स्याद् यूपो[1] यज्ञकीलकः[2] ॥१३७४॥

चषाल[1] श्चापि वै यूप-कटकः[2] कथ्यते किल ।
यज्ञयूपाग्रभागे यद्, वलयाकार वस्तु तद् ॥१३७५॥

घृतावनि[1] स्तथा यूप-कर्णो[2] वै कथ्यते सदा ।
घृतस्पर्शयज्ञस्तम्भ-स्यैकभागः स मन्यते ॥१३७६॥

यूपस्याग्रविभागो वै, यूपाग्रभाग[1] उच्यते ।
तर्म[2] वै कथ्यते नाम, निर्मन्थदारु[1] चाऽरणिः[2] ॥१३७७॥

❀ अग्निभेदाः ❀

दक्षिणो[1] गार्हपत्य[2] श्चा,-ऽऽहवनीय[3] स्त्रयोऽग्नयः ।
इदमग्नित्रयं विद्धे, त्रेता[1] हि कथ्यते बुधैः ॥१३७८॥

मन्त्रादिसंस्कृतो ऽग्नि वै, प्रणीतो[1] मन्यते पुनः ।
ऋग् धाय्या[1] सामीधेनी[2] च, समिदाधीयते यया ॥१३७९॥

दध्याजं[3] च दधिप्राज्यं[4], कथ्यते पण्डितै र्जनैः ।
दध्ना स्यात् मधुसंपृक्तं, मधुपर्को[1] महोदयः[2] ॥१३८८॥

हवित्री[1] होमकुण्ड[2] ञ्च, होमाधारस्थले द्वयम् ।
हव्यपाक[1] श्चरु[2] श्चैव, हव्यान्नेन विरच्यते ॥१३८९॥

अमृतं[1] यज्ञशेष[2] श्च, यज्ञशिष्टे हि वस्तुनि ।
विघसो[1] भुक्तशेषको[2], यज्ञे भुङ्क्ते हि योऽधिकम् ॥१३९०॥

यज्ञान्ते क्रियते स्नानं, यज्ञान्तो[1] ऽवभृथो[2] हि सः ।
प्रोक्तं पूर्त्तं[1] पुन र्वाप्या,-दीष्टं[1] तथा मखक्रिया[2] ॥१३९१॥

इष्टापूर्त्तं[1] तु पूर्वोक्त,-मुभयं कथ्यते पुनः ।
विष्टरो[1] बर्हिर्मुष्टि[2] श्च, दर्भासने प्रयुज्यते ॥१३९२॥

आहिताग्नि[1] रग्निहोत्री[2] चाऽऽग्न्याहितो[3] ऽग्निचित्[4] तथा ।
अग्न्याधान[1] मग्निहोत्र[2],-माऽग्निरक्षण[3]-मित्यपि ॥१३९३॥

दर्वी[1] दर्वि[2] स्तथैवाऽस्ति, नामेह घृतलेखनी[3] ।
महाज्वालो[1] महावीरो[2], होमाग्नि[3] श्च प्रवर्गवत्[4] ॥१३९४॥

निगणो[1] होमभस्म[2] श्च, होमधूमे प्रयुज्यते ।
वैप्लुतं[1] वै होमभस्म[2], ख्यातं होमजभस्मनि ॥१३९५॥

आचमन[1] मुपस्पर्शो[2], जलेन मुखस्पर्शने ।
सेक[1] श्च सेचनं[2] धारो[3], घृतादे रग्निसिंचने ॥१३९६॥

उपवासो[४] निगद्येत, व्रते भोजन रोधके ।
कृच्छ्रं[१] चान्द्रायणं[२] सान्त,-पनं[३] पापविनाशके ॥१४०५॥

संन्यास्यनशने ख्यात:, प्राय:[१] शब्द: प्रयुज्यते ।
नियम:[१] पुण्यकं[२] चैव, व्रतं[३] तपो[४] ऽपि कथ्यते ॥१४०६॥

※ चरित्रनामानि ※

चरित्रं[१] चरितं[२] वृत्तं[३], चारित्रं[४] चरणं[५] तथा ।
आचार[६] श्चापि शीलं[७] च, मन्यते पण्डितै: जनै: ॥१४०७॥

जप्ये ऽघमर्षणं[१] सर्वे-नोध्वंसि च प्रयुज्यते ।

※ पादग्रहणनामानि ※

पादयो: स्पर्शने पाद,-ग्रहण[१] मभिवादनम्[२] ॥१४०८॥

तथोपसंग्रह[३] श्चेति, कथ्यते कोविदै: किल ।

※ यज्ञसूत्रनामानि ※

प्रोद्धृते दक्षिणे स्कन्धे, यज्ञोपवीत[१] मुच्यते ॥१४०९॥

उपवीतं[२] पवित्रं[३] च, यज्ञसूत्रं[४] तथैव च ।
ब्रह्मसूत्रं[५] पुन श्चैव, प्रख्यातं व्यवहारत: ॥१४१०॥

प्राचीनावीत[१] माऽऽवीतं[२], वामे स्कन्धे हि प्रोद्धृते ।
कथ्यते कण्ठमालेव, निवीतं[१] कण्ठलम्बितम् ॥१४११॥

❀ क्षतव्रतनाम ❀

क्षतव्रतो[1] ऽवकीर्णो[2] च, क्षतव्रतस्य नाम वै ।
स व्रतभङ्गकारक-ब्रह्मचारी निगद्यते ॥१४२८॥

संस्कारवर्जितो[1] व्रात्यः[2], संस्काररहितो द्विजः ।
शिश्विदानो[1] दुराचारः[2], कृष्णकर्मा[3] ऽपि कथ्यते ॥१४२९॥

ब्रह्मबन्धु[1] श्च नामाऽस्ति, द्विजो ऽधमोऽपि मन्यते ।
नष्टाग्नि[1] विरहा[2] विप्रो, विनष्टाग्निहोत्राग्निवत् ॥१४३०॥

विप्रो द्विजब्रुवो[1] जाति,-मात्रजीवी[2] च मन्यते ।
धर्मध्वजी[1] लिङ्गवृत्तिः[2], पाखण्डी वेषवान् स वै ॥१४३१॥

वेदहीनो[1] निराकृतिः[2], स्वाध्याय रहितो द्विजः ।
वार्त्ताशी[1] भोजनार्थं यो, ब्रूते गोत्रादिकं निजम् ॥१४३२॥

उच्छिष्ट भोजनो[1] देव-नैवेद्य बलिभक्षकः ।
पुन श्च कथ्यते देव-नैवेद्यबलिभोजनः[2] ॥१४३३॥

❀ अजपनाम ❀

अजप[1] स्त्वसदध्येता[2] कुपाठकजनः स्मृतः ।

❀ शाखारण्डनाम ❀

अन्य शाखा कर्मकर्त्ता शाखारण्डो[1] ऽन्यशाखकः[2] ॥१४३४॥

❀ वीरोपजीवनाम ❀

वीरोपजीवकः[१] ख्यातो यो होम-नाम याचकः ।

❀ वीरविस्रावकः ❀

शूद्र वित्त धनैर्होता-वीरविस्रावको भवेत् ॥१४३९॥

❀ आर्हतनाम ❀

आर्हतः[१] स्याद्वाद वादी[२] जैनो[३] ऽनेकान्तवादिनि[३] ।

❀ सौगतनाम ❀

शून्यवादी[१] सौगतस्तु[२] बौद्ध[३] एव निगद्यते ॥१४४०॥

❀ नैयायिकनाम ❀

आक्षपाद[१] स्तथा नाम यौगो[२] नैयायिको[३] ऽपि च ।

❀ सांख्यनाम ❀

सांख्य[१] स्तु कापिलः[२] प्रोक्तः सांख्य शास्त्रस्य ज्ञातरि ॥१४४१॥

❀ वैशेषिकनाम ❀

वैशेषिकः[१] काणादः[२] स्या दौलुक्यो[३] न्याय ज्ञातरि ।

❀ चार्वाकनाम ❀

बार्हस्पत्यो[१] नास्तिकः[२] स्यात् लोकायतिकः[३] इत्यपि ॥१४४२॥

❀ अयाचितनाम ❀

अविनश्वर[1] ममृतं[2] स्यादयाचित[3] मिति त्रयम् ॥१४४७॥

❀ सेवानाम ❀

श्वजीविका[1] च सेवा[2] च सेवावृत्ति[3] रिहोच्यते ।

❀ वाणिज्यनाम ❀

सत्यानृतं[1] वणिज्या[2] च वाणिज्य[3] मिति ज्ञायताम् ॥१४४८॥

❀ वणिङ्नाम ❀

वाणिजः[1] सार्थवाह[2] श्च वणिक्[3] क्रयविक्रयिकः[4] ।
पण्याजीव[5] आपणिको[6] वैदेह[7] श्च प्रापणिकः[8] ॥१४४९॥

❀ क्रयिनाम ❀

क्रयिकः[1] क्रायको[2] लोके क्रयी[3] च कथ्यते पुनः ।

❀ विक्रयिनाम ❀

विक्रयिको[1] विक्रयी[2] च विक्राय[3] कोऽपि ज्ञायताम् ॥१४५०॥

❀ मूल्यनाम ❀

मूल्य[1]मर्घो[2] ऽवक्रय[3] श्च भाटको[4] वस्न[5] मित्यपि ।

❀ नीविनाम ❀

मूलद्रव्यं[1] परिपणो[2] नीवी[3] नीविश्च ज्ञायताम् ॥१४५१॥

❀ कृषिकनामानि ❀

कर्षकः[1] कार्षकः[2] क्षेत्री[3], कृषिकः[4] कृषको[5] हली[6] ।
कृषीवलः[7] कुटुम्बी[8] च, क्षेत्राजीवो[9] ऽपि कथ्यते ॥१४९६॥

❀ हलिनामानि ❀

जित्या[1] हलि[2] श्च नामाऽस्ति, महाहलं हि मन्यते ।
गोदारणं[1] हलं[2] सीर[3], स्तथा लघुश्च लाङ्गलम् । १४९७॥

ईषा[1] नाम तथेषा[2] ऽपि, हलदण्डो हि कथ्यते ।
सीता[1] शीता[2] च क्षेत्रे हि, हलरेखा निगद्यते ॥१४९८॥

निरीशं[1] च निरीषं[2] वै, कुटकं[3] कूटकं[4] पुनः ।
हलदण्डं विना मात्रः, फालो यत्र च ध्रियते ॥१४९९॥

❀ फालनामानि ❀

कुशिकः[1] कृषकः[2] फालः[3], फलं[4] क्षेत्रविदारकम् ।
दात्रं[1] तथा लवित्रं[2] तत्, मुष्टो वण्ट[1] इच मन्यते ॥१५००॥

मत्यं[1] स्यात् कृषेः कर्म-हलकृष्ट समीकृतौ ।
गोदारणं[1] च कुद्दालः[2], खनित्रं[1] त्ववदारणम्[2] ॥१५०१॥

❀ प्रतोदनामानि ❀

प्रतोद[1] स्तोदनं[2] तोत्रं[3], प्रवयणं[4] च प्राजनम्[5] ।
एतन्नामानि दण्डस्य, येन सञ्चाल्यते वृषः ॥१५०२॥

क्षत्ता[८] शूद्रात् प्रविज्ञेयो, जातो वै क्षत्रिय स्त्रियाम् ।
चण्डाल:[९] कथ्यते शूद्राद्, जातो वै ब्राह्मण स्त्रियाम् ॥१५१०॥

मागध:[१०] क्षत्रियायां वै, वैश्याद् जातो हि मन्यते ।
पुन: वैदेहको[११] वैश्याद्, द्विजस्त्रियां हि कथ्यते ॥१५११॥

सूत[१२] स्तु क्षत्रियाज्जातः, द्विजस्त्रियां हि मन्यते ।
इति च द्वादश भेदा:, कथ्यन्ते शूद्रकस्य वै ॥१५१२॥

माहिष्येण हि जात: स्यात्, करण्यां रथकारक:[१] ।

❀ शिल्पिनामानि ❀

शिल्पी[१] च प्रकृति:[२] कारी[३], कारु[४] श्चेत्यपि कथ्यते ॥१५१३॥

शिल्पिनां समुदायोऽपि, श्रेणि[१] श्च मन्यते बुधैः ।

❀ शिल्पनामानि ❀

शिल्पं[१] कला[२] च विज्ञानं[३], नाम शिल्पस्य कथ्यते ॥१५१४॥

❀ मालाकारनामानि ❀

मालाकारो[१] मालिकश्च[२], पुष्पाजीवो[३]ऽपि मन्यते ।

❀ पुष्पलावीनाम ❀

प्रोक्तं नाम पुष्पलावी[१], पुष्पाणामवचायिनि ॥१५१५॥

आसवो[1] ऽभिषवो[2] मद्य-सन्धान[3] मासुति[4] श्च वै ।
अर्कसम्पादनैः कार्यैः, मद्यनिर्माणिका क्रिया ॥१५२३॥

मन्यते मद्यमण्ड[1] श्च, कारोत्तम[2] स्तथैव च ।
मद्यस्य स्वच्छभागो वै, पुनः मद्यतरोः भवेत् ॥१५२४॥

※ मद्यपात्रनामानि ※

अनुतर्ष[1] श्च गल्वर्कः[2], चषक[3] श्चानुतर्षणम्[4] ।
कथ्यते सरक[5] श्चेति, मद्यपानस्य पात्रकम् ॥१५२५॥

मद्यपानमपि प्रोक्तं, सरक[1] श्चानुतर्षणम्[2] ।
शुण्डा[1] पानमदस्थानं[2], मद्यपानस्थलं भवेत् ॥१५२६॥

मधुक्रमाः[1] मधुवाराः[2], मद्यपानस्य पद्धतिः ।
सहपान[1] सपीति[2] श्च, सहपानक्रिया विधौ ॥१५२७॥

आपानं[1] पानगोष्ठिका[2], समूहमद्यपस्थलम् ।
उपदंशो[1] ऽवदंश[2] श्च, चक्षणं[3] मद्यपाशनम्[4] ॥१५२८॥

भुङ्क्ते मदिरया सार्द्धं, तस्मिन् खाद्ये च मन्यते ।

※ स्वर्णकारनामानि ※

स्वर्णकारः[1] कलाद[2] श्च, नाडिंधम[3] श्च मुष्टिकः ॥१५२९॥

एतन्नामानि मन्यन्ते, स्वर्णकारस्य साक्षरैः ।
तैजसावर्त्तनी[1] मूषा[2], मूषायाः नाम वर्त्तते ॥१५३०॥

❀ सूचीनामानि ❀

सूची[1] सूचि[2] श्च सेवनी[3], वस्त्रं येन च सीव्यति ॥१५३६॥

❀ सूचिसूत्रनाम ❀

पिप्पलकं[1] सूचिसूत्रं[2], सूचिसूत्रस्य नाम वै ।

❀ कर्त्तनसाधननाम ❀

कर्त्तनसाधनं[1] तर्कुः[2], स च त्रागो हि कथ्यते ॥१५३७॥

❀ पिञ्जननामानि ❀

तुलस्फोटनकार्मुकं[1], विहननं[2] च पिञ्जनम्[3] ।

एतन्नामानि कथ्यन्ते, यन्त्रके पिञ्जनस्य वै ॥१५३८॥

❀ सीवननामानि ❀

सीवनं[1] सेवनं[2] स्यूतिः[3], सूचीकारस्य कर्मणि ।

❀ स्यूतनाम ❀

स्यूतः[1] प्रसेवक[2] श्चैव, स्यूतं वस्त्रादि कथ्यते ॥१५३९॥

❀ तन्तुवायनामानि ❀

तन्तुवायः[1] कुविन्द[2] श्च, तन्त्रवायो[3] ऽपि मन्यते ।

त्रसरः[1] सूत्रवेष्टनं[2], वानस्य साधनं भवेत् ॥१५४०॥

❀ आरानामानि ❀

चर्मछिच्छस्त्रमाऽऽरा[1] स्यात्, तथा चर्मप्रभेदिका[2] ॥१५४६॥

चर्मसीवनी[3] सैवाऽस्ति, येन चर्मादि छिद्यते ।

❀ कुम्भकारनामानि ❀

दण्डभृत्[1] कुम्भकार[2] श्च, कुलाल[3] श्चक्रजीवकः[4] ॥१५४७॥

❀ शस्त्रघर्षकनामानि ❀

शस्त्रमार्जो[1] भ्रमासक्तः[2], शाणाजीवो[3] ऽसिधावकः[4] ।

❀ तैलिकनामानि ❀

चाक्रिक[1] स्तैलिक[2] स्तैली[3], तिलंतुद[4] श्च घूसरः[5] ॥१५४८॥

❀ खलनाम ❀

पिण्याक[1] श्च खलो[2] नाम, तिलादि नामसार भाक् ।

❀ रथकारनामानि ❀

रथकृत्[1] रथकार[2] श्च, तक्षा[3] त्वष्टा[4] च वर्द्धकिः[5] ॥१५४९॥

काष्ठतट्[6] रथपति[7] श्चेति, सर्वं नामानि वर्द्धकेः ।

ग्रामतक्षः[1] पुन र्नाम, ग्रामायत्तो हि मन्यते ॥१५५०॥

❀ कैवर्त्तनामानि ❀

कैवर्त्तो[1] धीवरो[2] दाशो[3], मत्स्यग्राही भवेत् पुनः ।

❀ मत्स्यवेधननामानि ❀

वडिशं[1] बडिशं[2] चैव, मत्स्यवेधन[3] मित्यपि ॥१५७३॥
मत्स्यवेधक लौहास्त्रं, कथ्यतेऽत्र सदा जनैः ।

❀ मत्स्यजालनाम ❀

आनायो[1] मत्स्यजाल[2] ञ्च, मत्स्यानां ग्राहको भवेत् ॥१५७४॥

❀ मत्स्यबन्धनीनाम ❀

गृहीत मत्स्यपात्रन्तु, कुवेणी[1] मत्स्यबन्धनी[2] ।

❀ शाकुनिकनाम ❀

पक्षिणां घातकः प्रोक्तः शाकुनिको[1] जीवान्तकः[2] ॥१५७५॥

❀ मांसिकनामानि ❀

कौटिकः[1] खट्टिक[2] श्चैव, वैतंसिक[3] श्च मांसिकः[4] ।
सौनिक[5] श्चेति नामानि, मन्यन्ते मांसिकस्य वै ॥१५७६॥

सूना[1] पशुवधस्थानं, पशुबन्धनसाधनम् ।
वीतंस[1] श्च वितंसो[2] वै, कथ्यते विबुधै रिह ॥१५७७॥

❀ कैवर्त्तनामानि ❀

कैवर्त्तो[1] धीवरो[2] दाशो[3], मत्स्यग्राही भवेत् पुनः ।

❀ मत्स्यवेधननामानि ❀

वडिशं[1] वडिशं[2] चैव, मत्स्यवेधन[3] मित्यपि ॥१५७३॥
मत्स्यवेधक लोहास्त्रं, कथ्यतेऽत्र सदा जनैः ।

❀ मत्स्यजालनाम ❀

आनायो[1] मत्स्यजाल[2] ञ्च, मत्स्यानां ग्राहको भवेत् ॥१५७४॥

❀ मत्स्यबन्धनीनाम ❀

गृहीत मत्स्यपात्रन्तु, कुवेणी[1] मत्स्यबन्धनी[2] ।

❀ शाकुनिकनाम ❀

पक्षिणां घातकः प्रोक्तः शाकुनिको[1] जीवान्तकः[2] ॥१५७५॥

❀ मांसिकनामानि ❀

कौटिकः[1] खट्टिक[2] श्चैव, वैतंसिक[3] श्च मांसिकः[4] ।
सौनिक[5] श्चेति नामानि, मन्यन्ते मांसिकस्य वै ॥१५७६॥

सूना[1] पशुवधस्थानं, पशुबन्धनसाधनम् ।
वीतंस[1] श्च वितंसो[2] वै, कथ्यते विबुधै रिह ॥१५७७॥

※ म्लेच्छजातिनामानि ※

माला:[1] भिल्ला:[2] पुलिन्दा[3] इच. किराता:[4] वकटा:[5] भटा:[6] ।
शवरा:[7] नाहला:[8] निष्ट्या, इत्येवमुक्ता म्लेच्छजातयः ॥१५८४॥

इति श्रीतपोगच्छाधिपति - सूरिचक्रचक्रवर्त्ति - भारतीयभव्यविभूति-चिरंतनयुगप्रधानकल्प-सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-श्रीकदम्बगिरि प्रमुखानेक- प्राचीन तीर्थोद्धारक-पञ्चप्रस्थानमयसूरिमन्त्रसमाराधक-शासन-सम्राट - जगद्गुरु-भट्टारकाचार्य महाराजाधिराज - श्रीमद्विजय - नेमिसूरीश्वर - सुप्रसिद्ध पट्टालङ्कार - व्याकरणवाचस्पति-शास्त्र-विशारद-कविरत्न-साहित्यसम्राट्-साधिकसप्तलक्षश्लोक प्रमाण नूतन संस्कृत साहित्यसर्जक - परमशासन प्रभावकाचार्य देवेश - श्रीमद्विजयलावण्यसूरीश्वर- पट्टधर-व्याकरणरत्न-शास्त्रविशारद-कविदिवाकर-देशनादक्ष - शासनप्रभावकाचार्यदेव - श्रीमद् विजयदक्षसूरीश्वर - पट्टधर-साहित्यरत्न-शास्त्रविशारद-कविभूषण-पञ्च-प्रस्थानमयसूरिमन्त्रसमाराधक-शासनप्रभावकाचार्य श्रीमद् विजयसुशील सूरिणा विरचितायां सुशीलनाममालायां तृतीयो मर्त्यविभागः समाप्त ॥३॥

❀ स्वर्जिकाक्षारनामानि ❀

कापोतः[1] स्वर्जिकाक्षारः[2], सृजिकाक्षार[3] इत्यपि ।
सुखवर्चक[4] इच लोके, साजी सज्जीति वा भवेत् ॥१६०३॥

❀ स्वर्जिकानामानि ❀

स्वर्जिका[1] स्वर्जि[2] इच स्रुग्घ्नी[3], योगवाही[4] सुर्वचिका[5] ।
लवणस्यैव भेदाः स्यु, र्गुण रूप विभागतः ॥१६०४॥

❀ भरतादिक्षेत्रनामानि ❀

*भरता[1] न्यैरावतानि[2], विदेहा[3] श्च विना कुरून्[4] ।
क्षेत्राणि कर्मभूम्यः[1] स्युः, पञ्चदशैव नामतः ॥१६०५॥

शेषाणि सर्ववर्षाणि, मन्यन्ते फलभूमयः[1] ।
तन्नामानि कथ्यन्ते, त्रिंश संख्यानि चात्र हि ॥१६०६॥

हैमवतानि पञ्च स्युः, हरिवर्षाणि पञ्च च ।
रम्यकाण्यपि पञ्चैव, हैरण्यवतान्येव हि ॥१६०७॥

देवकुरववर्षाणि, पञ्च संख्यानि तानि वै ।
उत्तरकुरव श्चापि पञ्च,-संख्यकाः सन्ति नामतः ॥१६०८॥

---

*'पञ्च भरतक्षेत्राणि' यथा—
'जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रमेकमेव, धातकीखण्डे भरतक्षेत्रं द्वयमेव पुष्कर-वरद्वीपार्द्धेऽपि च भरतक्षेत्रं द्वयमेव वर्तते ।

तथोपावर्त्तनं[1] चापि, विषय[2] इत्योपवर्त्तनम्[3] ।
नामान्येतानि मन्यन्ते, देशस्य विबुधैं भुँवि ॥१६१०॥

आर्यावर्त्त[1] स्तथाऽऽचार-वेदी[2] च पुण्यभूः पुनः ।
जिनचक्रयर्द्धचक्रियां, जन्मभूमि हि मन्यते ॥१६११॥

विन्ध्यहिमागयो र्मध्य-प्रदेशो कथ्यते स च ।
पूर्व-पश्चिमयोः सिन्धो, र्मध्यभागोऽपि मन्यते ॥१६१२॥

'पञ्च हैरण्यवतक्षेत्राणि' यथा—

जम्बूद्वीपे हैरण्यवतक्षेत्रमेकमेव, धातकीखण्डे हैरण्यवतक्षेत्रं द्वयमेव, पुष्करवरद्वीपार्द्धेऽपि च हैरण्यवतक्षेत्रं द्वयमेव वर्तते ।

'पञ्च देवकुरुक्षेत्राणि' यथा—

जम्बूद्वीपे देवकुरुक्षेत्रमेकमेव, धातकीखण्डे देवकुरुक्षेत्रं द्वयमेव, पुष्करवरद्वीपार्द्धेऽपि च देवकुरुक्षेत्रं द्वयमेव वर्तते ।

'पञ्चोत्तरकुरुक्षेत्राणि' यथा—

जम्बूद्वीपे उत्तरकुरुक्षेत्र मेकमेव, धातकीखण्डे उत्तरकुरुक्षेत्रं द्वयमेव, पुष्करवरद्वीपार्द्धेऽपि च उत्तरकुरुक्षेत्रं द्वयमेव वर्तते ।
तानि मिलित्वा त्रिंशत्क्षेत्राणि वर्त्तन्तेऽकर्मकभूम्याम् । तत्र युगलिक मनुष्याः निवसन्ति ॥

[इति जिनागमेऽपिकथितम्]

जङ्गलो[1] जाङ्गलो[2] देशो, जलं विना च निर्जलः[3] ।
अनूप[1] श्चाऽम्बुमान्[2] देशः, स स्याद् यत्र जलं बहु ॥१६२२॥

प्रोक्तः पुनः जलप्राय, -देशः कच्छो[1]ऽपि तद्विधः ।
कुमुद्वान्[1] कुमुदावासः[2], कुमुद्वान् देश उच्यते ॥१६२३॥

प्रदेशो बहु वेतस्वान्, वेतस्वान्[1] भूरिवेतसः[2] ।
नड्वान्[1] तु नडकीय[2] श्च, नडप्राय[3] श्च नड्वलः[4] ॥१६२४॥

नलतृणाधिके देशे, सर्वमेतत्प्रयुज्यते ।
शाड्वलः[1] शाद्वल[2] श्चैव, शादहरित[3] इत्यपि ॥१६२५॥

हरिततृणवान् देशः प्रोक्तः प्रायेण्ा पण्डितैः ।
नद्यम्बुजीवनो[1] देशो, नदीमातृक[2] इत्यपि ॥१६२६॥

वर्षाभि र्जीवनं यत्र, स देशो देवमातृकः[1] ।
तत्रैवार्थे बुधैरत्र, वृष्टिजीवन[2] उच्यते ॥१६२७॥

प्रदेशः कामरूपाः[1] वं, तथा प्राग्ज्योतिषाः[2] पुनः ।
अवन्तयश्च विख्याताः, मालवाः[2] अपिसर्वतः ॥१६२८॥

त्रैपुराः[1] डाहला[2] श्चैद्याः[3]; चेदयः[4] पूर्वभारते ।
वङ्गा[1] श्च हरिकेलियाः[2], प्रोक्ता वङ्गाल नामनि ॥१६२९॥

चम्पोपलक्षिता अङ्गाः[1], उक्ता विहारदेशके ।
साल्वा[1] श्च कारकुक्षीयाः[2], साल्वदेशे हि कथ्यते ॥१६३०॥

❀ ताम्रलिप्तनामानि ❀

दामलिप्तं[1] तामलिप्तं[2], तामलिप्ती[3] तमालिनी[4] ।
स्तम्बपू[5] स्तम्बपूरी[6] च, भवेद् विष्णुगृहं[7] पुनः ॥१६७७॥

❀ कुण्डिननपुरनामानि ❀

विदर्भा[1] कुण्डिनापुरं[2], कुण्डिनं[3] कुण्डिनपुरम्[4] ।

❀ द्वारकानामानि ❀

प्रोक्ता तु द्वारका[1] द्वारा,-वती[2] द्वारवती[3] पुरी ॥१६७८॥
नगरी निषधा[1] ख्याता, ज्ञायते नलभूपतेः ।

❀ प्राकारनामानि ❀

प्राकारो[1] वरणः[2] सालः[3], स्याद् दुर्गं परितः खलु ॥१६७९॥

वप्र[1] श्चयोऽपि कोट्टस्य, मूलभूमौ निगद्यते ।
प्राकाराग्रं[1] कपिशीर्षं[2], प्राकारोपरि क्रियते ॥१६८०॥

अट्ट[1] श्चट्टालक[2] क्षौमम्[3], सालोपरि समस्थलम् ।
सैन्यगृहं कोट्टोपरि, प्रोक्तं तूपरिमालके ॥१६८१॥

❀ नगरद्वारनाम ❀

पूर्द्वारं[1] गोपुरं[2] चेति, नगरद्वारमुच्यते ।

❀ रथ्यानामानि ❀

प्रतोली[1] विशिखा[2] रथ्या[3], रथ्यानाम त्रयमिदम् ॥१६८२॥

राज्ञां गृहन्तु प्रख्यातं, सौधं[1] वै नृपमन्दिरम्[2] ।
उपकारिको[1]-पकार्या[2], चोपकर्याऽपि कथ्यते ॥१७०१॥

❀ विभिन्नगृहाणांनामानि ❀

सोधान्तः प्रवेशाय, सिंहद्वारं[1] प्रवेशनम्[2] ।
प्रसादन[1] श्च प्रासादं[2], धामोक्तं देव-भूपयोः ॥१७०२॥

हर्म्यं[1] स्याद् धनिनां गेहं, मठ[1] आवसथ[2] स्तथा ।
आवसथ्यं[3] भवेन्नाम, छात्राणां व्रतिनाञ्च वा ॥१७०३॥

पर्णशाला[1] पर्णशाल[2], -मुटजो घास निर्मित ।
लोकेऽपिपर्णकुटीर, नामापि मन्यते पुनः ॥१७०४॥

❀ जिनमन्दिरनामानि ❀

जिनसद्म[1] विहार[2] श्च, चैत्य[3] मायतनं[4] पुनः ।
जिनालयं च प्रख्यातं, जिनमन्दिर मुच्यते ॥१७०५॥

❀ गर्भागारनामानि ❀

अपवरक[1] श्च वासौकः[2], पुन श्च शयनास्पदम्[3] ।
गर्भागारं[4] च नामानि, मन्यन्ते पण्डितै रिह ॥१७०६॥

❀ भाण्डागारनाम ❀

भाण्डागार[1] ञ्च कोशोऽपि, द्रव्यं रक्षति तद् भवेद ।

❀ सूतिकागृहनाम ❀

पुत्रादि प्रसव स्थान- मऽरिष्टं[1] सूतिकागृहम्[2] ।

❀ महानसनामानि ❀

रसवती[1] पाकस्थानं[2], सूदशाला[3] महानसम् ॥१७१२॥

❀ हस्तिशालानामानि ❀

चतुरं[1] हस्तिशालं[2] च, हस्तिशाला[3] ऽपि कथ्यते ।

❀ अश्वशालानामानि ❀

वाजीशाला[1] ऽश्वशाला[2] स्याद्, वाजीशालं[3] च मन्दुरा[4] ॥१७१३॥

❀ गोशालानाम ❀

सन्दानिनी[1] च गोशाला[2], यत्र गावो वसन्ति सा ।

❀ चित्रशालानामानि ❀

जालिनी[1] चित्रशालं[2] च, चित्रशाला[3] ऽपि कथ्यते ॥१७१४॥

❀ कुम्भशालानामानि ❀

कुम्भशाला[1] कुम्भशालं[2], प्रोक्तं पाकपुटी[3] पुनः ।

❀ तन्तुशालानामानि ❀

तन्तुशाला[1] तन्तुशालं[2], गर्त्तिका[3] वस्त्रकार्यभूः ॥१७१५॥

❀ शबरावासनाम ❀

पक्कण[1] शबरावासो[2], भिल्लानां स्थल मुच्यते ।

❀ आभीरपल्लिकानाम ❀

आभीराणां स्थलं प्रोक्तं, घोष[1] श्चाऽऽभीरपल्लिका[2] ॥१७२०॥

❀ पण्यशालानामानि ❀

निषद्या[1] पण्यशाला[2] च, विपणी[3] विपणि[4] स्तथा ।
आपण[5] पण्यशालं[6] च, हट्टो[7] ऽट्टः[8] कथ्यते पुनः ॥१७२१॥

❀ वेश्याश्रयनामानि ❀

पुरं[1] वेश्याश्रयो[2] वेश्यो[3], वेश्यानां स्थल मुच्यते ।

❀ मण्डपनाम ❀

मण्डप[1] स्तु जनाश्रय[2], मन्मद्गुलगृहं भवेत् ॥१७२२॥

❀ [illegible]नाम ❀

[illegible]

❀ [illegible] ❀

[illegible] ॥१७२३॥

[illegible]

❀ तमङ्गनामानि ❀

इन्द्रकोश[1] स्तमङ्ग[2] श्च, प्रोक्त स्तमङ्गक:[3] पुन: ॥१७३७॥

❀ वलभीनाम ❀

वलभी[1] वलभि[2] श्चापि, छदिराधार उच्यते ।

❀ दन्तकानाम ❀

दन्तका:[1] नागदन्ता:[2] स्याद्, भित्तिस्थे काष्ठनिर्मिते ॥१७३८॥

❀ प्रग्रीवनामानि ❀

प्रगीवो[1] ऽपाश्रयो[2] मत्ता- लम्ब:[3] स्यात् मत्तवारण:[4] ।

❀ गवाक्षनामानि ❀

गवाक्षो[1] जालकं[2] चैव, ख्यातो वातायन:[3] पुन: ॥१७३९॥

❀ अन्नकोष्टकनामानि ❀

कुशूल[1] श्चा ऽन्नकोष्टक:[2], कुसूलो[3] ऽपि निगद्यते ।

❀ कोणनामानि ❀

कोणो[1] ऽश्री[2] कोटि[3] रश्रि[4] श्च,

पाली[5] पालि[6] रणी[7] पुन: ॥१७४०॥

अणि:[8] कोटी[9] तथाऽस्र[10] श्च, नामानि कथितानि हि ।

※ सम्मार्जनीनामानि ※

सम्मार्जनी[1] च वर्धनी[2], शोधनी[3] पवनी[4] पुनः ॥१७४५॥
बहुकरी[5] तथा ख्याता, गृहशोधक वस्तुनि ।

※ सङ्करनाम ※

गृहप्रकीर्णं धूल्यादि सङ्करो[1] ऽवकरो[2] भवेत् ॥१७४६॥

※ उदूखलनाम ※

धान्यादि कुट्टकं प्रोक्त,- मुदूखल[1]- मुलूखलम्[2] ।

※ प्रस्फोटननाम ※

पुनः प्रस्फोटनं[1] चैव, पवनं मन्यते किल ॥१७४७॥

※ कण्डननाम ※

धान्यादि कुट्टनं कार्यं,- मऽवघात[1] श्च कण्डनम्[2] ।

※ कटनाम ※

उपवेशन कार्याय, किलिञ्जः[1] कथितः कटः[2] ॥१७४८॥

※ मुसलनामानि ※

मुसलो[1] मुषल[2] श्चैव, प्रसिद्धो मुसलो[3] ऽपि वै ।
नाराचो[4] धान्यपोनिः[5] स्नुः, नामानि मुसलस्य च ॥१७४९॥

❋ मलयाचलपर्वतनामानि ❋

चन्दनगिरि[1] राषाढो[2], मलयो[3] दक्षिणाचलः[4] ॥१७७५॥

❋ माल्यवन्पर्वतनामानि ❋

प्रश्रवण[1] स्तु माल्यवान्[2], प्रोक्तः प्रस्रवणो[3] नगः ।

❋ विन्ध्याचलपर्वतनाम ❋

विन्ध्याचलगिरे र्नाम, विन्ध्य[1] स्याद् जलवाहकः[2] ॥१७७६॥

❋ शत्रुञ्जयपर्वतनाम ❋

शत्रुञ्जयगिरे र्नाम, विमलाद्रिः[1] शत्रुञ्जयः[2] ।

❋ मन्दराचलपर्वतनाम ❋

नामोक्तं मन्दराचल-स्य त्विन्द्रकील[1]-मन्दरौ[2] ॥१७७७॥

❋ त्रिकुटाचलनामानि ❋

त्रिमुकुट[1] स्सुवेल[2] श्च, त्रिकूट[3] स्त्रिककुद्[4] पुनः ।
त्रिकुटाचलशैलस्य, नामानि प्रथितानि वै ॥१७७८॥

❋ गिरनारपर्वतनाम ❋

गिरनारगिरे र्नाम, उज्जयन्तः[1] प्रसिद्धयति ।
लोके रैवतकः[2] प्रोक्तो, गिरनारगिरि र्पुनः ॥१७७९॥

❀ द्रोणीनाम ❀

द्रोणी[1] च शैलयोः सन्धिः, साक्षरः मन्यते सदा ॥१७८४॥

❀ पर्यन्तपर्वताःनाम ❀

पर्यन्तपर्वताः[1] पादाः[2], मुख्याद्रे र्लघुपर्वताः ।

❀ दन्तकाःनाम ❀

स्याद् दन्तकाः[1] बहिस्तिर्यक् -प्रदेशा निर्गता गिरेः ॥१७८

❀ अध्यतिकानाम ❀

पर्वतस्योर्ध्वभूमि वै, मन्यतेऽध्यतिका[1] बुधैः ।

❀ उपत्यकानाम ❀

अधोभूमि र्नगस्यात्र, उपत्यका[1] हि कथ्यते ॥१७८६॥

❀ प्रस्थनामानि ❀

सानुः[1] प्रस्थं[2] तथा स्नुः[3] स्याद्, शैल शृङ्गे च तुल्यभूः

❀ पाषाणनामानि ❀

पाषाण[1] प्रस्तरः[2] ग्रावा[3], अश्मा[4] दृषद्[5] तथा शिला[6] ।

[illegible] नामानि, मन्यन्ते प्रस्तरस्य वै ।
[illegible], सुशीलसूरिणा मृदु ॥१७८

अलङ्कारसुवर्णं[1] स्यात्, शृङ्गीकनक[2] माऽऽयुधम्[3] ।
रजत ञ्च सुवर्ण ञ्च, मिलितं घनगोलकम् ॥१८१२॥

❀ पित्तलनामानि ❀

आर[1] श्च पित्तला[2] शब्दो, विशेषपित्तले भवेत् ।
पुनः पित्तल नामानि, कथ्यन्ते पण्डितै रिह ॥१८१३॥

कपिलोहं[1] सुलोहं[2] च, पीतलोहं[3] सुलोहकम्[4] ।
आरकूटो[5] रितिः[6] रीती[7], रिरी[8] रीरी[9] सुवर्णकम्[10] ॥१८१४॥

ब्राह्मी[1] तु ब्रह्मरीति[2] श्च, कपिला[3] महेश्वरी[4] तथा ।
राज्ञी[5] नाम्ना भवेदेक,-प्रकारस्य हि पित्तलम् ॥१८१५॥

❀ कांस्यनामानि ❀

कंसं[1] कांस्यं[2] प्रकाश[3] ञ्च, घोषो[4] विद्युत्प्रियं[5] मलम्[6] ।
रवण[7] मसुराह्व[8] च, लोहजं[9] वङ्गशुल्वजम्[10] ॥१८१६॥
घण्टाशब्दं[11] च नामानि, कांस्यस्य संभवन्ति वै ।

❀ पञ्चलोहनाम ❀

सौराष्ट्रकं[1] पञ्चलोहं[2], पञ्चधातुमयं च तद् ॥१८१७॥

❀ वर्त्तलोहनाम ❀

वर्तं[1] वर्त्तलोहं[2] च, लोहधातुभिदा भवेत् ।

अस्ताघ[1] मतलस्पृक्[2] चा,-ऽस्थाघ[3] मऽस्थाग[4] मित्यपि ।
अगाध[5] मपि तन्नाम, यत् तलं न जनः स्पृशेत् ॥१८६१॥

गभीरं[1] गम्भीरं[2] निम्न[3],-मस्ताधार्थस्य वाचकम् ।
उत्तान[1] मुच्यते तत्र, यत्र किञ्चिद् जलं भवेत् ॥१८६२॥

अच्छं[1] जलं प्रसन्नं[2] स्या-दनच्छं[1] कलुषा[2] ऽविले[3] ।

❀ हिमनामानि ❀

अवश्याय[1]स्तु प्रालेयं[2], तुषार[3] स्तुहिनं[4] हिमम्[5] ॥१८६३॥

धूमिका[6] धूमरी[7] धूम-महिषी[8] महिका[9] तथा ।
नीहारो[10] मिहिका[11] चेति, नामानि तुहिनस्य वै ॥१८६४॥

❀ हिमानीनामानि ❀

हिमसन्तति[1] हिमानी[2], हिमराशी प्रयुज्यते ।

❀ समुद्रनामानि ❀

समुद्रः[1] सागरः[2] सिन्धु[3], स्तिमिकोशो[4] महाशयः[5] ॥१८६५॥

जलधि[6] र्जलराशि[7] श्च, जलनिधि[8] स्तथोदधिः[9] ।
महोप्रावार[10]उर्वङ्गो[11], वारिनिधि[12]श्च वारिधिः[13] ॥१८६६

वारीशो[14] वारिराशि[15] श्च, सरस्वान्[16] धरणीप्लवः[17]।
अकूवारो[18] महाकच्छो[19], ऽकूपारो[20] मकरालयः[21] ॥१८६७।

❀ आवर्त्तनामानि ❀

आवर्त्तो[1] वोलक[2] श्चासौ, तालूरः पयसां भ्रमः ।

❀ वेलानाम ❀

वेला[1] नामाऽपि विख्यातः, कथ्यते वृद्धिरम्भसः ॥१८७५॥

❀ अब्धिकफनामानि ❀

अब्धकफ[1] स्तथा फेनो[2], हिण्डीरो[3] हिण्डिरः[4] पुनः ।
डिण्डीर[5] श्चापि प्रख्यातः, सागरमल[6] उच्यते ॥१८७६॥

❀ जलस्फोटनामानि ❀

बुद्बुदः[1] स्थासक[2] श्चैव, जलस्फोटो[3] ऽपि कथ्यते ।

❀ मर्यादानाम ❀

मर्यादा[1] कुलभू[2] र्नाम, समुद्रपार्श्व भूमयः ॥१८७७॥

❀ समुद्रतटनामानि ❀

कूलं[1] कच्छः[2] प्रपात[3] श्च, रोधः[4] प्रतीर[5] मित्यपि ।
तटं[1] तीरं[2] च विज्ञेयं, नद्युदध्यो स्तटं सदा ॥१८७८॥

❀ पुलिननाम ❀

पुलिनं[1] सैकतं[2] नाम, जलहीनं तटस्थलम् ।

विष्णुपदी[१२] च स्वर्वापी[१३], मन्दाकिनी[१४]कुमारसूः[१५] ॥१८८६॥

भीष्मसूः[१६] ऋषिकुल्या[१७] च, जह्नुकन्या[१८] च जाह्नवी[१९] ।
हैमवती[२०] तथा हर-शेखरा[२१] चेति नामानि ज्ञायताम् ॥१८८७॥

❀ यमुनानदीनामानि ❀

यमुना[१] सूर्यजा[२] चैव, कलिन्दतनया[३] यमी[४] ।
कलिन्दपुत्री[५] कालिन्दी[६], स्यु र्यमभगिनी[७] पुनः ॥१७८८॥

❀ नर्मदानदीनामानि ❀

नर्मदा[१] मेकलाद्रिजा[२], तथा मेकलकन्यका[३] ।
इन्दुजा[४] पूर्वगङ्गा[५] च, रेवा[६] च मेखलाद्रिजा[७] ॥१८८९॥

पुन र्मेकलकन्या[८] ऽपि, नर्मदाया श्च नाम वै ।

❀ गोदावरीनदीनाम ❀

गोदा[१] गोदावरी[२] नाम्नी, नदी ख्यातैव वर्तते ॥१८९०॥

❀ तापीनदीनामानि ❀

तापी[१] च तपनी[२] नाम्नी, प्रख्याता तपनात्मजा[३] ।

❀ शतद्रुनदीनाम ❀

शतद्रु[१] श्च शुतुद्रिः[२] स्यात्, लोके सतलजो नदी ॥१८९१॥

※ मुरलानदीनाम ※

मुरला[1] निम्नगा नाम, मुरन्दला[2] ऽपि मन्यते ।

※ मुरवेलानदीनाम ※

सुनन्दिनी[1] नदी नाम, मुरवेला[2] ऽपि कथ्यते ॥१८९६॥

※ चर्मण्वतीनदीनाम ※

रन्तिनदी[1] नदी नाम, चर्मण्वती[2] च मन्यते ।

※ सिन्धुसङ्गमनाम ※

सिन्धुसङ्गमः[1] सम्भेदः[2], नद्याः सङ्गम उच्यते ॥१८९७॥

※ स्रोतनाम ※

स्रोतो[1] भवति तल्लोके, यत्राऽम्भः सरणं स्वतः ।

※ प्रवाहनामानि ※

ओघो[1] धारा[2] रयो[3] वेणी[4], पुनः प्रवाह[5] उच्यते ॥१८९८॥

※ घट्टनामानि ※

अवतार[1] स्तया तीर्थो[2], घट्टो[3] ऽपि कथ्यते पुनः ।

※ पूरनामानि ※

अम्बुवृद्धिः[1] प्लवः[2] पूर[3], श्चेति नामानि मन्यते ॥१८९९॥

वर्हि:शुष्मा[५२] च हिरण्य-रेता:[५३] पवनवाहन:[५४] ॥१६२२॥

पीथो[५५] ऽनिलसखो[५६] हव्य,-भुग्[५७] हविरशनो[५८] हवि:[५६] ।
हवनो[६०] हव्यवाह[६१] श्च, हव्याशनो[६२] हुताशन:[६३] ॥१६२३॥

वहुलो[६४] मन्त्रजिह्व[६५] श्च, रोहिताश्वो[६६] विभावसु:[६७] ।
दमूना:[६८] दमुना:[६६] दीप्र:[७०], पृदाकु[७१] र्दहन:[७२] पवि:[७३] ॥१६२४॥

भरथो[७४] नाचिकेत[७५] श्च, पर्परीक[७६] श्च पावक:[७७] ।
पृष्ठ:[७८] छागरथो[७६] ऽप्पित्तं[८०], हुतवहो[८१] विरोचन:[८२] ॥१६२५॥

अपित्तं[८३] चापि वर्हि[८४] श्चे,-त्यग्ने र्नामानि सन्ति वै ।

❀ स्वाहानाम ❀

पुन रग्ने: प्रिया भवेत्, स्वाहा[१] ऽग्नायी च नामत: ॥१६२६॥

❀ वडवानलनामानि ❀

ऊर्व[१] श्चौर्व[२] स्तथाऽब्ध्यग्नि[३], वडिवो[४] वडवानल:[५] ।
वडवामुख:[६] पुनर्नाम, भवेत् संवर्त्तक[७] स्तथा ॥१६२७॥

❀ दावानलनामानि ❀

दावानलो[१] दवो[२] दावो[३], वनवह्नि[४] रपि स्मृत: ।

❀ मेघवह्निनामानि ❀

मेघवह्नि:[१] मेघज्योति[२], विद्युताग्नि रिरम्मद:[३] ॥१६२८॥

शाल:[२५] साल:[२६] पलाशी[२७] च,
पुलाकी[२८] फलदी[२९] वसु[३०] ॥१९५४॥

शाखी[३१] च शिखरी[३२] स्कन्धी[३३], क्षितिरुह[३४] श्च वह्निभू[३५]।
अंह्रिप[३६] श्चाङ्घ्रिपो[३७] जन्तु[३८],
जीर्ण[३९] श्चरणप:[४०] कुज:[४१] ॥१९५५॥

अनोकह[४२] उरु[४३] श्चैव, नन्द्यावर्त्त[४४] स्तथैव च।
एतन्नामानि मन्यन्ते, वृक्षस्य विबुधै र्जनै: ॥१९५६॥

❀ कुञ्जनामानि ❀

ख्यात: कुञ्जो[१] निकुञ्ज[२] श्च, कुडङ्गो[३] ऽपि हि कथ्यते।
त्रिणि नामानि मन्यन्ते, वृक्षै र्वृताान्तरे स्थले ॥१९५७॥

पुष्पं फलं क्रमात् पत्रं, वानस्पत्य[१] स्तु स द्रुम:।
वनस्पति[१] स्तु स द्रुम:, फलमेव च पत्रकम् ॥१९५८॥

❀ फलेग्रहिनाम ❀

फलेग्रहि:[१] फलावन्ध्यो[२], य: फलत्येव स द्रुम:।

❀ फलवन्ध्यनामानि ❀

फलवन्ध्यो[१] ऽवकेशी[२] चा, -ऽवकेशो[३] कथ्यतेऽपि वै ॥१९५९॥

त्रिणि नामानि वृक्षाणि, नार्पन्ति फलं कदा।

❀ शाखानामानि ❀

शाखा[1] शिखा[2] लता[3] नाम, वृक्षाङ्गे च लघौ स्मृतम् ।
शाला[1] साला[2] स्कन्धशाखा[3], बृहद्भाग स्तरो भवेत् ॥१६६५॥

❀ स्कन्धनाम ❀

प्रकाण्डमस्तकं स्कन्धो[1], वृक्षस्य कथ्यते बुधैः ।
प्रकाण्डो[1] गण्डिका[2] गण्ड[3], मूलात् शाखावधि द्रुमः ॥१६६६॥

❀ शिफानाम ❀

जटा[1] शिफा[2] द्वयं नाम, वृक्षमूले हि मन्यते ।

❀ स्तम्बनामानि ❀

प्रकाण्डरहिते गुल्मो[1], विटपः[2] स्तम्ब[3] उच्यते ॥१६६७॥

❀ शिरोनामनामानि ❀

शिरो[1] ऽग्रं[2] शिखरं[3] शिरो-नाम[4] वृक्षोर्ध्वभागके ।

❀ वृक्षमूलनामानि ❀

वृक्षाधोभागके मूल[1], श्चांह्रि[2] स्तथांह्रिनाम[3] वै ॥१६६८॥
बध्नो[4] बुध्न[5] श्च नामापि, मन्यते पण्डितै र्जनैः ।

❀ वृक्षमज्जानाम ❀

सारो[1] मज्जा[2] द्वयं नाम, वृक्षमध्ये निगद्यते ॥१६६९॥

अत्यन्तनूतने पत्रे, प्रवाल¹ इच कथ्यते बुधैः ॥१६७४॥
कोशी¹ शुङ्गा² प्रवालग्र-भागो भवति निश्चयात् ।

❀ दलस्नसानाम ❀

माढि¹ र्दलस्नसा² पत्र-नाडी बोधाय युज्यते ॥१६७५॥

❀ विटपनाम ❀

विस्तारो¹ विटप² श्चापि, वृक्षप्रसार बोधवान् ।

❀ पुष्पनामानि ❀

कुसुमं¹ प्रसवः² पुष्पं³, सूनं⁴ सुमनसः⁵ सुमम्⁶ ॥१६७६॥
मणीवकं⁷ प्रसूनं⁸ चे-ति नामानि सुमस्य वै ।
जालकः¹ क्षारको² नाम, नूतनकलिकार्थकः ॥१६७७॥
कलिका¹ कोरकः² स्याच्च, कुसुमकलिकार्थकः ।
कुड्मलं¹ मुकुलं² ज्ञेयं-दऽर्धस्फुटित कोरके ॥१६७८॥

❀ गुच्छनामानि ❀

गुच्छो¹ गुत्सो² गुलुञ्छ³ इव, गुलुञ्छ⁴ गुत्सकः⁵ पुनः ।
गुच्छ⁶ इव स्तबको⁷ गुच्छो⁸, नामान्यष्टौ च सन्ति वै ॥१६७९॥

❀ परागनाम ❀

परागो¹ [illegible] पुष्परजो हि कथ्यते ।

❀ ग्रन्थिनामानि ❀

परुः[१] पर्व[२] तथा ग्रन्थिः[३], त्रीणि नामानि सन्ति वै ।

❀ वीजकोशीनामानि ❀

शिम्बा[१] शिम्बी[२] शमी[३] शिम्बिः[४],

वीजकोशी[५] तथा शिमिः[६] ॥१९८६॥

एतन्नामानि मन्यन्ते, वीजकोशस्य साक्षरैः ।

❀ पिप्पलवृक्षनामानि ❀

अश्वत्थः[१] पिप्पलः[२] ख्यातः, श्रीवृक्षः[३] कुञ्जराशनः[४] ॥१९८७॥

कृष्णावासो[५] वोधिसत्त्वो[६], वोधितरु[७] स्तथैव च ।
चलदल[८] श्च नामानि, मन्यन्ते पिप्पलस्य वै ॥१९८८॥

पुन र्नामाऽपि तद्भेदः, प्लक्ष[१] श्च पर्कटी[२] जटी[३] ।

❀ वटवृक्षनामानि ❀

न्यग्रोध[१] स्तु वहुपाद्[२] स्याद्, वटो[३] वैश्रवणालयः[४] ॥१९८९॥

❀ उदुम्बरनामानि ❀

जन्तुफल[१] श्च यज्ञाङ्गः[२], उडुम्बरः[३] उदुम्बरः[४] ।
मशको[५] हेमदुग्धक[६], स्तद्भेदो जघनेफला[१] ॥१९९०॥

काकोदुम्बरिका[२] फल्गु[३], मलयु[४] रपि मन्यते ।

निर्गुण्टी[८] श्चापि निर्गण्डी[९], चेति नामानि सन्ति वै ॥२०४०॥

❊ वासन्तीनामानि ❊

वासन्ती[१] माधवी[२] चापि, पुण्ड्रक[३] स्तथाऽतिमुक्तकः[४] ।
लता[५] चेति हि नामानि, वासन्त्याः सम्भवन्ति वै ॥२०४१॥

❊ जपापुष्पनामानि ❊

ओड्रपुष्पं[१] जपापुष्प[२]-मोड्रपुष्पं[३] जपा[४] जवा[५] ।

❊ मालतीपुष्पनामानि ❊

जाति[१] स्तु मालती[२] जाती[३], सुमनाः[४] सुमना[५] तथा ॥२०४२॥

❊ मल्लिकापुष्पनामानि ❊

मल्लिका[१] तृणशून्यं[२] च, विचकिल[३] श्च भूपदी[४] ।
शतभीरु[५] स्तथा शीत-भीरु[६] र्नामानि सन्ति वै ॥२०४३॥

❊ सप्तलानामानि ❊

सप्तला[१] नवमल्लिका[२], तथैव नवमालिका[३] ।

❊ मागधीपुष्पनामानि ❊

मागधी[१] यूथिका[२]ऽम्बष्ठा[३], गणिका[४] पि च तद्भिदा ॥२०४४॥
हेमपुष्पिका[१] च पितायाः, यूथिकाया भिदा स्मृता ।

❀ एरण्डनामानि ❀

एरण्डो[1] व्याघ्रपुच्छ[2] श्च, चञ्चु[3] पञ्चाङ्गुलः[4] पुनः ।
गन्धर्वहस्तको[5] मुण्डो[6], व्यडम्बको[7] व्यडम्बनः[8] ॥२०५०॥
रुबूको[9] रूवुक[10] इचैव, वर्द्धमान[11] श्च चित्रकः[12] ।
रुचक[13] उरुबूक[14] श्च, स्यात उरुवुकः[15] पुनः ॥२०५१॥
एतन्नामानि मन्यन्ते, पञ्चाङ्गुलस्य पण्डितैः ॥२०५२॥

❀ धातकीनामानि ❀

अग्निज्वाला[1] सुभिक्षा[2] च, धातकी[3] धातुपुष्पिका[4] ।
नामान्येतानि कथ्यन्ते, पुनश्च धातृपुष्पिका[5] ॥२०५३॥

❀ कपिकच्छूनामानि ❀

कण्डूरा[1] कण्डुरा[2] ऽव्यण्डा[3], कपिकच्छू[4] र्जहा[5] ऽजहा[6] ।
ऋष्यप्रोक्ता[7] ऽऽत्मगुप्ता[8] च, मर्कटी[9] प्रावृषायणी[10] ॥२०५४॥
शूकशिम्बा[11] तथा शूक-, शिम्बि[12] श्च कपिकच्छुकः[13] ।
नामान्येतानि मन्यन्ते, कण्डुरायां श्च कोविदैः ॥२०५५॥

❀ धत्तूरनामानि ❀

धत्तूरो[1] धुत्तुरो[2] धूर्तो[3], धुस्तूरो[4] धुस्तुरो[5] स्तथा ।
धन्तूरो[6] मातुल[7] श्चैव, धुत्तूरः[8] कनकाह्वयः[9] ॥२०५६॥

दर्भः[1] कुथः[2] कुशो[3] र्वीहः[4], पवित्रं[5] नाम पञ्चमम् ।
तेजन[1] स्तु शरो[2] गुन्द्रो[3], मुञ्जो[4] नाम चतुर्थकम् ॥२१५१॥

हरितालो[1] रुहा[2] ऽनन्ता[3], दूर्वा[4] च शतपर्णिका[5] ।
तथा सहस्रवीर्या[6] च, मार्गवी[7] शतपर्विका[8] ॥२१५२॥

पोटगल[1] स्तु प्रख्यातो, धमन[2] श्च नडो[3] नलः[4] ।
मेघनामा[1] स्तु वै मुस्ता[2], कुरुविन्द[3] इव मुस्तकः[4] ॥२१५३॥

गुन्द्रा[1] तु सोत्तमा ख्याता, स्यादपि भद्रमुस्तकः[2] ।
उलपो[1] वल्वजा[2] चैवं, भवेत् कोमलघासकं ॥२१५४॥

❀ इक्षुनामानि ❀

अथेक्षुः[1] स्याद् रसाल[2] श्च, प्रख्यातोऽप्यसिपत्रकः[3] ।

❀ इक्षुभेदनामानि ❀

कान्तारः[1] कोपकार[2] श्च, पुण्ड्[3]-पुण्ड्रक[4]-पौण्ड्रकाः[5] ॥२१५५॥

ईक्षो मूलस्य नामात्र, मोरटं[1] मन्यते बुधैः ।
काशः[1] कास[2] मिषीका[3] च, तृणभेदोऽपि कथ्यते ॥२१५६॥

यवसं[1] चापि घासः[2] स्यात्, तृण[1] मऽर्जुन[2] मेव च ।

❀ विषनामानि ❀

विष[1] स्तीक्ष्ण[2] रसः[3] क्ष्वेडो[4], गरलो[5] ऽपि च नाम वै ॥२१५७॥

प्रसिद्धाः सर्वदा लोके, कोविदाः कथयन्ति वै ॥२१६६॥

॥ इति वनस्पतिकायः समाप्तः ॥

॥ इति एकेन्द्रियजीवाः समाप्ताः ॥

※ अथ द्वीन्द्रियजीवनामानि ※

❀ कायाभवाःकीटनामानि ❀

कृमि[1] र्नीलाङ्गु[2]-र्नीलङ्गू[3], शरीरान्तर वर्तिनः ।
क्षुद्रकीटो[1] बहिश्चारी, पुलका[1] उदरे वहिः ॥२१६७॥

कीकसाः[1] लघुकाया स्ते, काष्ठकीटो[1] घुणः[2] स्मृतः ।

❀ पृथ्वीभवाकीटनामानि ❀

कुसूः[1] किञ्चिलकः[2] किञ्चु-लकः[3] किञ्चुलुकः[4] पुनः ॥२१६८॥

ख्यातो गण्डूपदः[5] स्यु र्वै, भूलता[6] ऽपि महीलता[7] ।
शिली[1] गण्डूपदी[2] नाम, गण्डुलः कथ्यते बुधैः ॥२१६९॥

❀ जलौकानामानि ❀

जलौका[1] च जलालोका[2], जलूका[3] जलसर्पिणी[4] ।
जलौकसो[5] ऽस्रपाः[6] सन्ति, रक्तपाः[7]विचकाः[8] पुनः ॥२१७०॥

❀ शुक्तिनामानि ❀

शुक्तिः[1] स्यादब्धिमण्डूकी[2], मुक्तास्फोटो[3] ऽपि मन्यते ।

❀ मधुनामानि ❀

माक्षिकं[1] भ्रामरं[2] दालं[3], क्षौद्र[4] मौद्दालकं[5] मधु[1] ॥२१६१॥
छात्रकं[7] पौत्तिकं[8] चाऽर्घ्यं[9], चेति नामानि सन्ति वं ।

❀ मधूच्छिष्टनामानि ❀

सिक्थक[1] श्च मधूच्छिष्टं[2], मदनं[3] नाम वुच्यताम् ॥२१६२॥
चर्वणा[1] मक्षिका नीला, कृष्णाऽपि कथ्यते पुनः ।
पतङ्गिका[1] च पुत्तिका[2], मन्यते लघुमक्षिका ॥२१६३॥
वनमध्येऽधिका जाता -दंश[1] स्तु वनमक्षिका[2] ।
तज्जाति रल्पका दंशी[1], कथ्यते कोविदैः सदा ॥२१६४॥
तैलाटी[1] वरटा[2] सैव, गन्धोली[3] वरटी[4] भवेत् ।

❀ झिल्लीकानामानि ❀

चीरी[1] च चीरुका[2] चैव, झीरिका[3] झिरिका[4] तथा ॥२१६५॥
झिरीका[5] झीरुका[6] चैव, झिरूका[7] झिल्लका[8] पुनः ।
झिल्लीका[9] झिल्लिका[10] भृङ्ग-रिका[11] वर्षकरी[12] तथा ॥२१६६॥
भृङ्गारी[13] चेति नामानि, मन्यन्ते पण्डितै र्जनैः ।
इत्युक्ता श्चतुरिन्द्रिया., जीवाः येऽत्र महीतले ॥२१६७॥

॥ इति चतुरिन्द्रियजीवाः समाप्ताः ॥

महाकायस्य मन्यन्ते, विश्वे च वर्तयन्तिताः ॥२२०४॥

काले ऽप्यजातदन्त श्च, स्वल्पाङ्गः स्यात् च मत्कुणो[1] ।
पञ्चवर्षो द्विपो बालः[1] पोतः[1] स्याद् दशवर्षकः ॥२२०५॥

पिक्को[1] विक्क[2] श्च मातङ्गो, विंशतिवर्ष उच्यते ।
कलभो[1] ऽपि त्रिंशद्वर्षः, कथ्यते कोविदैः किल ॥२२०६॥

यूथनाथ[1] स्तथा यूथ-पतिः[2] स्याद् यूथनायकः ।
प्रभिन्नो[1] गर्जितो[2] मत्तो[3], मदोन्मत्तो ऽपि मन्यते ॥२२०७॥

ख्यातो मदोत्कटः[1] स्याच्च, मदकलो[2] ऽपि वै पुनः ।
उद्वान्तो[1] निर्मद[2] श्चोक्तो, मदशून्यगजो हि तद् ॥२२०८॥

कल्पित[1] सज्जित[2] श्चैव, युद्धाय चलिते गजे ।
परिणत स्तिर्यग्घातो[2], तिर्यक् प्रहारकर्त्तरि ॥२२०९॥

व्याडो[1] दुष्टगजो[2] व्याल[3], उपद्रवकरे गजे ।
तथा गम्भीरवेदी[1] स्याद्, चाऽवमताङ्कुशः[2] किल ॥२२१०॥

प्रख्यात उपवाह्य[1] श्च राजवाह्य[2] स्तथैव च ।
औपवाह्यो[3] ऽपि कथ्यते, नृपस्यारोहणाय वै ॥२२११॥

सन्नाह्य[1] समरोचितः[2], सङ्ग्राम योग्य कुञ्जरे ।
ईषादन्त[1] उदग्रदन्[2], लम्बदन्तो गजो भवेत् ॥२२१२॥

गजानां समुदाये तु, हास्तिकं[1] गजता[2] घटा[3] ।
मदो[1] दानं[2] प्रवृत्ति[3] स्तु, उन्मत्तगजगण्डजम् ॥२२१३॥

* खलिननामानि *

खलीनं[1] खलिनं[2] चैव, कवियं[3] कविका[4] कवी[5] ॥२२५६॥
मुखयन्त्रणं[6] पञ्चाङ्गी[7], नामानि सप्त सन्ति वै ।
मुखबन्धाश्रितं चर्म, तलिका[1] तलसारकम्[2] ॥२२६०॥

दामाञ्चनं[1] पादपाशः[2], पदबन्धन रज्जुषु ।
प्रक्षरं[1] प्रखरः[2] स्याच्च, कवचं घोटकस्य वै ॥२२६१॥

चर्मदण्डः[1] कशा[2] चैव, ताडनायास्य जायते ।
वल्गो[1] वल्गा[2] कुशा[3] वागा[4], रश्मि[5] स्तथाऽवक्षेपणी[6] ॥२२६२॥

पल्ययनं[1] च पर्याणं[2], पर्याणस्याऽस्ति नाम वै ।
वीतं नाम पुनः प्रोक्तं, तच्च फल्गु हयद्विपम् ॥२२६३॥

* अश्वभेद [खच्चर] नामानि *

वेसरो[1] ऽश्वतरो[2] वेगसरो[3] ऽश्वस्य भिदा भवेत् ।

* उष्ट्रनामानि *

उष्ट्रो[1] मयो[2] महाङ्ग[3] श्च, खप्पः[4] कण्टकाशनः[5] ॥२२६४॥
कुलनाशः[6] शलः[7] भोलिः[8], कुलनाशः[9] क्रमेलकः[10] ।
द्विककुद्[11]दीर्घग्रीव[12] श्च, दाशेरो[13]दुर्गलङ्घनः[14] ॥२२६५॥
वासन्तः[15] शिशुनामा[16] च, मर्यो[17] मरुप्रियः[18] पुनः ।
भूतघ्न[19] श्चेति नामानि, मन्यन्ते रवणस्य वै ॥२२६६॥

❀ वत्सनामानि ❀

तर्णः[1] शकृत्करि[2] श्चैव, स्यातो वत्स[3] पुनर्भुवि ।
वत्सतर[1] स्तु दम्यो[2] वै, महावत्सो निगद्यते ॥२२७४॥

❀ वृषभभेदनामानि ❀

नस्योतो[1] नस्तित[2] श्चैव, नस्तोतः[3] कथ्यते पुन. ।
प्रष्ठवाट्[1] हलवोढा[2] स्यात्, पष्ठवाट्[3] युगपार्श्वगः ॥२२७५॥

वोढारः स्युर्युगादीनां, प्रासङ्ग्य[1]-युग्य[2]-शाकटाः[3] ।
स च सर्वधुरीणो[1] वै, सर्वां वहति यो धुरम् ॥२२७६॥

[1]एकधुरीणक [2]धुरावुभावेकधुरावहे ।
धुरन्धरो[1] धुरीणः[2] स्याद्, धुर्यो[3] धौरेयकः[4] पुनः ॥२२७७॥

धौरेयो[5] धूर्वह[6]श्चेति, नामानि कथयन्ति वै ।
गलि[1] र्वुण्टवृष[2] श्चैव, प्रोक्तः शक्तोऽप्यधूर्वहः ॥२२७८॥

पृष्ठवाह्य[1] स्तथा पृष्ठ्यः[2], स्थौरी[3] नामापि मन्यते ।
द्विदन्[1] षोडन्[2] द्वि-षड्दन्तौ,
वहः[1] स्कन्धोऽस्य[2] बन्धनम् ॥२२७९॥

ककुद्[1] चांऽसकूटं[2] स्यात्, ककुदं[3] कुकुदं[4] पुनः ।
नैचिकं[1] नैचिकी[2] तस्य, शिरो लोकेषु कथ्यते ॥२२८०॥

विषाणं[1] कूणिका[2] शृङ्गं[3], प्रोक्तं वृषस्य शृङ्गकम् ।
गलभागोऽस्य सास्ना[1], कथ्यते गलकम्बलः[2] ॥२२८१॥

करटा[1] दुःखदोह्या[2] सा, दुःखेन दुह्यते सदा ।
वञ्जुला[1] बहुदुग्धा[2] सा, या बहुदुग्धप्रदा भवेत् ॥२२६०॥

द्रोणक्षीरा[1] तथा द्रोणदुग्धा[2] द्रोणदुघा[3] भवेत् ।
पीवरस्तनी[1] पीनोध्नी[2], कथ्यते पण्डितैः पुनः ॥२२६१॥

धेनुष्या[1] पीतदुग्धा[2] च, संस्थिता दुग्धबन्धके ।
नैचिकी[1] स्यादुत्तमा गौः मलिनी[1] वालगर्भिणी[2] ॥२२६२॥

पलिक्नी[3] मन्यते सैव, बालगर्भवती च या ।
समांसमीना[1] गौः स्याद्या, प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥२२६३॥

सुकरा[1] ऽकोपना[2] ऽचण्डी[3], गौः स्याच्छान्तस्वभाविका ।
वत्सला[1] वत्सकामा[2] स्याद्, या वत्सं बहु सेवते ॥२२६४॥

चतुर्वर्षा[1] तथा चतुर्हायणी[2] कथ्यते पुनः ।
त्रिहायणी[1] त्रिवर्षा[2] च, स्याद् द्विवर्षा[1] द्विहायनी[2] ॥२२६५॥

[1]एकवर्षाभिधा एक हायनी कापि गौर्भवेत् ।
आपीन[1] मूधो[2] दुग्धधारकमङ्गमुच्यते ॥२२६६॥

❀ गोमयनाम ❀

गोविट्[1] गोमय[2] माख्यातं, पवित्रं[3] भूमिलेपनम्[4] ।
गोग्रन्थिः[1] छगणं[2] चैव, करीषं[3] शुष्कगोमयम् ॥२२६७॥

गव्यं[1] स्याद् वै गवां सर्वं, दुग्धं दधि घृतादिकम् ।
व्रजो[1] भवति गो स्थानं, गोकुलं[2] गोधनं[3] धनम्[4] ॥२२६८॥

अथ खेचरपञ्चेन्द्रियनामानि

❀ विहगनामानि ❀

विहगो[1] विष्किरो[2] वाजी[3], विहङ्ग[4] इव विहङ्गमः[5] ।
वारङ्ग[6] श्चैव वारङ्गिः[7], विष्किर[8] इव विविष्किरः[9] ॥२३७७॥

पक्षी[10] पत्री[11] पतत्रि[12] श्च, पतत्री[13] पतगः[14] पतन्[15] ।
पत्ररथः[16] पतङ्ग[17] श्च,
पित्सन्[18] वयो[19] द्विजः[20] पुनः ॥२३७८॥

शकुनः[21] शकुनि[22] श्चैव, गरुत्मान्[23] चञ्चुमान्[24] खगः[25] ।
शाकुन्त[26] श्च शकुन्ति[27] श्च, नगौकाः[28] नभसङ्गमः[29] ॥२३७९॥

वगौका[30] श्चाऽण्डजो[31] नाडीचरणो[32] रसनारद[33] ।
नीडोद्भव[34] श्च कण्ठाग्निः[35],
नीडजो[36] लोमकी[37] पुनः ॥२३८०॥

ख्यातं नाम विहाया[38] श्च, कीकसमुख[39] इत्यपि ।
सर्वाण्येतानि नामानि मन्यन्ते पक्षिणां बुधैः ॥२३८१॥

चञ्चु[1] श्चञ्चू[2] स्तथा त्रोटिः[3], सृपाटी[4] च सृपाटिका[5] ।
पत्रं[1] पिच्छं[2] पतत्र[3] ञ्च, वाजः[4] तथा तनूरुहम्[5] ॥२३८२॥

पक्षो[1] गरु[2] -च्छदः[3] पिच्छ[4], मिति नामान्यपि क्वचित् ।
पक्षिचञ्चो हि मन्यन्ते, पक्षमूलं[1] तु पक्षतिः[2] ॥२३८३॥

प्रडीनो[1]-ड्डीन[2]-सण्डीन[3]-डयनानि[4] नभोगतौ ।

मधुकण्ठः[5] सुधाकण्ठः[6], काकपुष्टः[7] कुहूमुखः[8] ॥२३६१॥

ताम्राक्षः[9] कामतालो[10] वै, काकजात[11] स्तथैव च ।
मदोल्लापी[12] पिक[13] श्चापि, परपुष्टो[14] वनप्रियः[15] ॥२३६२॥

परभृतो[16] ऽन्यभृत[17] श्च, मधुघोषो[18] रतोद्वहः[19] ।
घोषयित्नुः[20] पोषयत्नु[21] श्चेति नामानि सन्ति वै ॥२३६३॥

❀ काकनामानि ❀

काको[1]ऽरिष्टो[2] द्विको[3] ध्वाङ्क्षो[4], घूकारिः[5] करटो[6] ऽन्यभृत्[7]।
एकदृक्[8] चिरजीवी[9] च, वायसः[10] परभृत्[11] पुनः ॥२३६४॥

बलिभुक्[12] बलिपुष्ट[13] श्च, मौकुलि[14] श्च सकृत्प्रजः[15] ।
आत्मघोष[16] श्च नामानि, कथ्यन्ते काकपक्षिणः ॥२३६५॥

अथज्ञेयो वृद्धकाको[1], द्रोणकाको[2] ऽतिहिंसकः ।
दग्धकाकः[3] कृष्णकाकः[4], पर्वतकाक[5] इत्यपि ॥२३६६॥

वनाश्रय[1] श्च काकोलः[2] सप्त भेदाः प्रकीर्तिताः ।
काकभेदे पुनर्ज्ञेयो-मद्गु[1] श्च जलवायसः[2] ॥२३६७॥

❀ उलूकनामानि ❀

उलूक[1] कौशिको[2] घूक[3], काकारिः[4] पेचकः[5] पुनः ।
दिवान्धो[6] श्च दिवाभीतो[7], निशाट[8] कथ्यते तथा ॥२३६८॥

खञ्जनः[१] खञ्जरीट[२] श्च, लघुपक्षी कवेः प्रियः ॥२४०६॥

❀ सारसनामानि ❀

सारसो[१] लक्ष्मणः[२] कामी[३], मैथुनी[४] रक्तमस्तकः[५] ।
श्येनाक्ष[६] श्चापि श्येनास्यो[७], गोनर्दो[८] दीर्घजानुकः[९] ॥२४०७॥
कुरङ्कुरः[१०] पुष्कराख्यो[११], नामानि सारसस्य वै ।

❀ सारसीनामानि ❀

सारसी[१] लक्ष्मणा[२] प्रोक्ता, लक्षणा[३] लक्ष्मणी[४] च सा ॥२४०८॥

❀ क्रौञ्चनामानि ❀

क्रुञ्चः[१] क्रौञ्च[२] श्च क्रुङ्[३] पुंसि, क्रुञ्चा[१] क्रौञ्ची[२] स्त्रियां भवेत् ।

❀ चापनामानि ❀

चापः[१] किकीदिविः[२] श्चैव,
किकिः[३] किकी[४] दिवो[५] दिविः[६] ॥२४०९॥
किकिदिविः[७] किकीदीविः[८], किकीदिवी[९] किकीदिव[१०] ।
किकिदिव[११] श्च नामानि, चापस्य संभवन्ति वै ॥२४१०॥

❀ चातकनामानि ❀

चातक[१] स्तोककः[२] स्यात्, [illegible][३] श्च नभोऽम्बुपः[४] ।
[illegible][५] [illegible] सारङ्ग[६], सारङ्गो[७] [illegible] कथ्यते ॥२४११॥

बिसकण्टिका[5] पि नाम तथैव बिसकण्ठिका[6] ।
वकपत्न्या श्च नामानि षडेव पठितानि वै ॥२४१८॥

❀ भृङ्गनामानि ❀

कलिङ्ग[1] श्चाथ धूम्याटः[2], भृङ्गो[3] नामानि त्रीणि वै ।

❀ कङ्कपक्षिनामानि ❀

कङ्कः[1] स्याल् लोहपृष्ठ[2] श्च, कर्कटः[3] कमनच्छदः[4] ॥२४१९॥
दीर्घपाद[5] स्तथा स्कन्धमल्लकः[6] कथ्यते पुनः ।

❀ चिल्लनामानि ❀

आतापी[1] शकुनि[2] श्चिल्ल[3], स्तथाऽऽतायी[4] च मन्यते ॥२४२०॥

❀ श्येनपक्षिनामानि ❀

श्येनः[1] शशादनः[2] पत्री[3], नामानि श्येनपक्षिणः ।

❀ गृध्रस्यनामानि ❀

गृध्र[1] श्च पुरुषव्याघ्रः[2], शकुनिः[3] कूणितेक्षणः[4] ॥२४२१॥
[illegible][5] सुदर्शन[6] श्चैव, दाक्षाय्यो[7] दूरदृक्[8] पुनः ।
कामायु[9] श्चेति नामानि, गृध्रस्य संभवन्ति वै ॥२४२२॥

❀ कुररस्यनामानि ❀

उत्क्रोशः[1] कुररो[2] नाम, तथा च मत्स्यनाशनः[3] ।

आतिः[6] राटी[7] शरातिः[8] श्च, शरालिः[9] शराली[10] पुनः ॥२४२९॥

❀ क्रकर नाम ❀

क्रकरः[1] कृकणो[2] नाम-द्वयं क्रकर पक्षिणः।

❀ शकुन्त नाम ❀

भास[1] स्तथा शकुन्त[2] श्च, भासनाम द्वयं स्मृतम् ॥२४३०॥

❀ जलकुक्कुभ नामानि ❀

कोयष्टिः[1] शिखरी[2] चैव, जलकुक्कुभ उच्यते।

❀ कपोतनामानि ❀

पारापतः[1] कपोत[2] श्च, ख्यातः पारावतः[3] पुनः ॥२४३१॥

कलरव[4] स्तथा रक्तलोचनो[5] ऽपि च कथ्यते।

❀ चकोरनामानि ❀

चकोर[1] श्चलचञ्चु[2] श्च, तथैव विषसूचकः[3] ॥२४३२॥

नाम ज्योत्स्नाप्रियो[4] लोके चकोरस्य चतुर्थकम्।

❀ गुन्द्रालनामानि ❀

जीवंजीव[1] श्च गुन्द्रालो[2], विषदर्शनमृत्युकः[3] ॥२४३३॥

❀ व्याघ्राटनामानि ❀

व्याघाट[1] श्च भरद्वाजो[2], भारद्वाजो[3] ऽपि ज्ञायताम्।

इत्यधोऽधो क्रमाज्ज्ञेया:, सप्तनरकभूमय: ।
विख्याता. सर्वदा: सर्वा:, नरकभूमयो भुवि ॥२४७१॥

सन्ति रत्नप्रभायां वै, त्रिशल्लक्षाणि संख्यया ।
द्वितीयायां शर्करायां, लक्षाणां पञ्चविंशति: ॥२४७२॥

वालुकायां तृतीयायां. पञ्चदशलक्षाणि वै ।
सन्ति पङ्कप्रभायां तु, दशलक्षाणि संख्यया ॥२४७३॥

पञ्चम्यां धूमप्रभायां, त्रीणिलक्षाणि संख्यया ।
षष्ठ्यां तम:प्रभायां तु, पञ्चन्यूनमेकं लक्षम् ॥२४७४॥

महातम: प्रभानाम्न्यां, भूमौ पञ्चैव निश्चिता: ।
सन्ति वै नरकावासा:, सीमन्तकादय: किल ॥२४७५॥

एतासु स्यु: क्रमेणैव, तत्तन्नरकवासिन: ।
शास्त्रेषु कथिता: प्राज्ञै:, लोकेऽपि सन्ति सर्वदा ॥२४७६॥

※ पातालनामानि ※

पातालं[1] नागलोक[2] श्च, बलिवेश्म[3] रसातलम्[4] ।
वडवामुख[5] माख्यात मधोभुवन[6] मित्यपि ॥२४७७॥

※ बिलनामानि ※

निम्नं[1] निर्व्यथनं[2] रन्ध्रं[3], विवरं[4] च वपा[5] ऽन्तरम्[6] ।
गर्तं[7] रोकं[8] बिलं[9] छिद्रं[10], सुषिरं[11] शुषिरं[12] शुषि:[13] ॥२४७८॥

अथ [illegible]भागः षष्ठः।

❀ लोकनामानि ❀

लोकः[1] स्याद् भुवनं[2] विश्वं[3], विष्टपं[4] विष्टपं[5] जगत्[6]।
जगती[7] चेति नामानि, लोकानां सप्त सन्ति वै ॥२४८१॥

जीवाजीवाधारक्षेत्रं, स लोकः कथ्यते खलु।
अलोकोऽपि जिनेन्द्रेण, कथ्यते हि ततोऽन्यथा ॥२४८२॥

❀ आत्मनामानि ❀

क्षेत्रज्ञः[1] पुरुष[2] आत्मा[3], चेतनः[4] कथ्यते तथा।

❀ जीवनामानि ❀

जीवो[1] जन्तु[2] स्तथा जन्युः[3],
देहभाक्[4] देहभाग्[5] भवी[6] ॥२४८३॥
असुमान्[7] चापि संसारी[8], शरीरी[9] देहभृत्[10] तथा।
प्राणी[11] सत्त्वं[12] च नामानि, द्वादशैव भवन्ति वै ॥२४८४॥

❀ जन्मनामानि ❀

जन्म[1] जन्मो[2] जनि[3] श्चैव, जननं[4] जनु[5] रुद्भवः[6]।
उत्पत्ति[7] श्चेति नामानि, प्रयोगे प्रचलन्ति वै ॥२४८५॥

सौख्यं[७] चेति प्रसिद्धानि, सप्त नामानि सन्ति वै ॥२४६१॥

❀ दुःखनामानि ❀

दुःखं[१] व्यथा[२]ऽसुखं[३] पीडा[४], बाधा[५] बाध[६] श्च वेदना[७] ।
आमनस्य[८] ममानस्यं[९], प्रगाढ[१०] श्च प्रसूतिजम्[११] ॥२४६२॥

अर्त्तिः[१२] कृच्छ्रं[१३] तथा कष्टं[१४], वैमनस्यं[१५] प्रयुज्यते ।
आभीलं[१६] चापि नामास्ति, स्यादाऽऽधि[१] र्मनसीव्यथा ॥२४६[३]॥

सपत्राकृति[१]-निष्पत्राकृती[२] स्यातां प्रपीडने ।
क्षुज्जाठराग्निजा बाधा, व्यापादो[१] द्रोहचिन्तनम्[२] ॥२४६४॥

आद्यं ज्ञान मुपज्ञा[१] स्यात्, सङ्ख्या[१] चर्चा[२] विचारणा[३] ।
चर्चो[४]ऽपि च विचारार्थे, वाक्ये विज्ञैः प्रयुज्यते ॥२४६५॥

पूर्वाऽनुभूत स्मरणे, वासना[१] भावना[२] भवेत् ।
संस्कारो[३]ऽप्यनु भूतार्थ-स्मरणेऽत्र प्रयुज्यते ॥२४६६॥

❀ निर्णयनामानि ❀

अन्त[१] श्च निर्णय[२] श्चैव, निश्चयः[३] कथ्यते ऽपि वै ।

❀ समर्थननामानि ❀

प्रोक्तं समर्थनं[१] नाम, तत्रार्थे सम्प्रधारणा[२] ॥२४६७॥

❀ अज्ञाननामानि ❀

अहंमति[१] रविद्या[२] च कथ्यतेऽज्ञानमित्यपि ।

❀ स्नेहनामानि ❀

प्रीतिः[१] प्रेम[२] तथा स्नेहो[३], हार्दं[४] नामापि मन्यते ॥२५०३॥

❀ दाक्षिण्यनाम ❀

सरलता हि दाक्षिण्यं[१], कथ्यते चाऽनुकूलता[२] ।

❀ पश्चात्तापनामानि ❀

पश्चात्तापो[१] ऽनुताप[२] श्च, प्रसिद्धोऽनुशयः[३] पुनः ॥२५०४॥
बुधैश्च विप्रतीसारो[४], विप्रतिसार[५] उच्यते ।

❀ समाधाननामानि ❀

समाधानं[१] समाधि[२] श्च, प्रणिधानं[३] तथैव च ॥२५०५॥
अवधानं[४] पुन र्नाम, समाधे र्मन्यते बुधैः ।

❀ धर्मनामानि ❀

धर्मः[१] श्रेयो[२] वृषः[३] पुण्यं[४], सुकृतं[५] नाम पञ्चमम् ॥२५०६॥

❀ भाग्यनामानि ❀

भागधेयं[१] तथा भाग्यं[२], दिष्टं[३] दैवं[४] पुन विधिः[५] ।
नियति[६] श्चेति नामानि, मन्यन्ते नियते र्बुधैः ॥२५०७॥
अनिष्टसमयः[१] प्रोक्तं, निर्ऋतिः[१] कालकर्णिका[२] ।

❀ विषयनामानि ❀

इन्द्रियार्था[1] स्तथा ऽर्था[2] श्च,गोचरा[3] विषया[4] अपि ॥२५१५॥

स्पर्शो[1] रस[2] श्च गन्ध[3] श्च, रूपं[4] शब्द[5] श्च पञ्चमः ।

❀ शीतनामानि ❀

तुषारः[1] शीतलः[2] शीतः[3], सुषीमः[4] सुषिमो[5] हिमः[6] ॥२५१६॥

सुशीमः[7] शिशिर[8] श्चैव, जडो[9] ऽपि कथ्यते पुनः ।

❀ उष्णनामानि ❀

अथोष्णा[1] श्च कटु[2] स्तीक्ष्ण[3],
स्तिग्म[4] स्तीव्र[5] स्तथा खरः[6] ॥२५१७॥

चण्ड[7] श्चेति हि नामानि, मन्यन्ते पण्डितैः पुनः ।

ईषदुष्णः[1] कदुष्ण[2] श्च, कोष्णः[3] कवोष्ण[4] इत्यपि ॥२५१८॥

तथा मन्दोष्ण[5] नामापो,-षदुष्णस्य हि कथ्यते ।

❀ कर्कशनामानि ❀

कक्खटः[1] खक्खटः[2] क्रूरः[3], कर्कशो[4] निष्ठुरो[5] दृढः[6] ॥२५१९॥

कठोरः[7] कठिनो[8] मूर्त[9], मूर्तिमत्[10] परुष[11] स्तथा ।
जठर[12] जरठ[13] श्चैव, जरढ[14] श्च खरः[15] पुनः ॥२५२०॥

एतन्नामानि कथ्यन्ते, कर्कशस्य हि कोविदैः ।

❀ सुगन्धनामानि ❀

सुरभि[1] श्च समाकर्षी[2], गन्ध[3] श्च घ्राणतर्पणः[4] ।
तथा जनमनोहारी[5], निर्हारी[6] नाम विद्यते ॥२५२६॥

विदूरग[1] स्तथाऽऽमोदः[2] स्याद्दूरगतगन्धवान् ।
परिमलो[1] विमर्दोत्थः, कथ्यतेऽत्र सुगन्धवान् ॥२५२७॥

सुगन्धि[1] रिष्टगन्ध[2] श्चैवाऽऽमोदी[3] मुखवासनः[4] ।

❀ दुर्गन्धनामानि ❀

दुर्गन्धः[1] पूतिगन्धि[2] श्च, पूतिगन्धिक मुच्यते[3] ॥२५२८॥

आमगन्धि[1] स्तथा विस्रं[2], कथ्यते कोविदैः पुनः ।

❀ श्वेतवर्णनामानि ❀

ख्याताः श्वेतादिकाः वर्णा, स्तेषां वर्णनमस्त्यधः ॥२५२९॥

शुक्लः[1] श्वेतः[2] सितः[3] श्येतः[4], शुभ्र[5] श्च विशदः[6] शुचिः[7] ।
अवलक्षो[8] वलक्ष[9] श्चा,ऽवदातो[10] धवल[11] स्तथा ॥२५३०॥

पाण्डरः[12] पाण्डुरः[13] पाण्डु[14], गौर[15] श्च हरिणो[16]ऽर्जुनः[17] ।
सप्तदशैव नामानि, ईषत्पाण्डु[1] स्तु धूसरः[2] ॥२५३१॥

❀ विभिन्नवर्णनामानि ❀

कापोत[1] श्च कपोताभः[2], कपोतवर्णवान् भवेत् ।

पुरुहं[7] पुरुहू[8] श्चैव, भूयिष्ठं[9] बहुलं[10] बहु[11] ॥२५६२॥
अदभ्रं[12] भूरि[13] भूय[14] श्च, स्फिरं[15] स्फारं[16] तथैव च।
एतन्नामानि मन्यन्ते, प्रचुरस्य हि पण्डितैः ॥२५६३॥

❀ अल्पनामानि ❀

अल्पं[1] तुच्छं[2] तनु[3] स्तोकं[4], क्षुद्रं[5] क्षुल्लं[6] तथा कृशम्[7]।
अणु[8] च तलिनं[9] दभ्रं[10], दश नामानि सन्ति वै ॥२५६४॥

❀ सूक्ष्मनामानि ❀

श्लक्ष्णं[1] च पेलवं[2] सूक्ष्मं[3], सूक्ष्मनामानि त्रीणि वै।

❀ लेशनामानि ❀

कणो[1] मात्रा[2] लवो[3] लेश, स्त्रुटी[4] त्रुटि[5] र्निगद्यते ॥२५६५॥

❀ लघुनामानि ❀

ह्रस्वं[1] लघु[2] च प्रख्यात, लघुकार्ये प्रयुज्यते।

❀ अत्यल्पनामानि ❀

अत्यल्प[1]-मल्पिष्ठ[2] च, स्यादल्पीयो[3] ऽणीय[4] स्तथा ॥२५६६॥
कनिष्ठ[5] ञ्च कनीय[6] श्च, लिङ्गभेदो विशेष्यवत्।

❀ दीर्घनाम ❀

दीर्घं[1]-नाऽऽयतमाख्यातं, लम्बार्थस्य हि वाचकम् ॥२५६७॥

❀ विस्तारनामानि ❀

प्रपञ्चा[१]-ऽऽभोग[२]-विस्तार[३]-व्यासाः[४] विस्तारवाचकाः ।
विस्तरो[१] विग्रहः[२] शब्दे, समस्तपदस्फोटने ॥२६०४॥

❀ समासनामानि ❀

समास[१] श्च समाहारः[२] संक्षेप[३] श्च संग्रहः[४] ।

❀ समस्तनामानि ❀

विश्वं[१] सर्वं[२] समस्तं[३] च, समग्रं[४] सकलं[५] समम्[६] ॥२६०५॥
अशेष[७] मथ निःशेषं[८], निखिल[९]-मखिलं[१०] तथा ।
अनूनं[११] न्यक्ष[१२]-मऽन्यूनं[१३],कृत्स्नं[१४] पूर्णं[१५] निगद्यताम् ॥२६०६॥
अखण्डं[१६] चेति नामानि, मन्यन्ते निखिलस्य वै ।

❀ शकलनामानि ❀

अर्ध[१] श्च शकलं[२] शल्कं[३], खण्ड[४] श्च खण्डलं[५] दलम्[६] ॥२६०७॥
भित्तं[७] नेम[८] श्च नामानि, कथ्यन्ते शकलस्य वै ।

❀ अंशनामानि ❀

अंशो[१] भाग[२] श्च वण्टो[३], वण्टक[४] श्चापि मन्यते ॥२६०८॥

❀ मलिननामानि ❀

मलीमसं[१] तथा म्लानं[२], मलिनं[३] मलदूषितम्[४] ।

❀ विस्तारनामानि ❀

प्रपञ्चा[१]-ऽऽभोग[२]-विस्तार[३]-व्यासा:[४] विस्तारवाचका: ।
विस्तरो[१] विग्रह:[२] शब्दे, समस्तपदस्फोटने ॥२६०४॥

❀ समासनामानि ❀

समास[१] श्च समाहार:[२] संक्षेप[३] श्च संग्रह:[४] ।

❀ समस्तनामानि ❀

विश्वं[१] सर्वं[२] समस्त[३] ञ्च, समग्रं[४] सकलं[५] समम्[६] ॥२६०५॥
अशेष[७] मथ नि:शेषं[८], निखिल[९]-मखिलं[१०] तथा ।
अनूनं[११] न्यक्ष[१२]-मऽन्यूनं[१३], कृत्स्नं[१४] पूर्णं[१५] निगद्यताम् ॥२६०६॥
अखण्डं[१६] चेति नामानि, मन्यन्ते निखिलस्य वै ।

❀ शकलनामानि ❀

अर्ध[१] श्च शकलं[२] शल्कं[३], खण्ड[४] श्च खण्डलं[५] दलम्[६] ॥२६०७॥
भित्तं[७] नेम[८] श्च नामानि, कथ्यन्ते शकलस्य वै ।

❀ अंशनामानि ❀

अंशो[१] भाग[२] श्च वण्टो[३], वण्टक[४] श्चापि मन्यते ॥२६०८॥

❀ मलिननामानि ❀

मलीमसं[१] तथा म्लानं[२], मलिनं[३] मलदूषितम्[४] ।

अञ्जसा[13] झटिति[14] स्राक्[15] च, सपदि[16] द्राग[17] रं[18] पुनः।
अष्टादशैव नामानि, शीघ्रार्थे सभवन्ति वै ॥२६७३॥

❀ झम्पानामानि ❀

झम्पा[1] झम्प[2] श्च सम्पातपाटवं[3] कूर्दने भवेत् ॥

❀ नित्यनामानि ❀

असक्त[1]-मनिश[2] नित्यं[3], संसक्तं[4] सततं[5] पुनः ॥२६७४॥

अनवरत[6]-माश्रान्त[7]-मऽविरत[8]-मऽनारतम्[9] ।
अजस्रं[10] सन्ततं[11] चेति, नित्यनामानि सन्ति वै ॥२६७५॥

❀ सामान्यनाम ❀

साधारण[1] प्रसिद्ध वै, सामान्य[2]-मपि मन्यते ।

❀ संहतनाम ❀

नाम द्वयं बुधै ज्ञेय, संहतं[1] दृढसन्धि[2] च ॥२६७६॥

❀ गहननाम ❀

कलिलं[1] गहनं[2] नाम, दुःखैः प्रवेष्टुमर्हति ।

❀ सङ्कीर्णनामानि ❀

सङ्कीर्णं[1] सङ्कुलं[2] कीर्णं[3]-माकीर्णं[4] साकुलं[5] पुनः ॥२६७७॥

❀ संवृतनामानि ❀

संवीतं[1] संवृतं[2] रुद्धं[3], स्थगित[4]-मपवारितम्[5] ।
आवृतं[6] पिहितं[7] छन्न[8]-मपिहित[9] ञ्च छादितम् ॥२६८३॥
अन्तर्हितं[11] तिरोहितं[12], द्वादशैतानि सन्ति वै ।

❀ अन्तर्धाननामानि ❀

अन्तर्द्धा[1] च तिरोधान[2]-मन्तर्द्धि[3] श्च पिधान[4] मिति ॥२६८४॥
व्यवधा[5] व्यवधान[6] ञ्च, छदन[7]-मपवारणम्[8] ।
स्थगनं[9] चेति नामानि, ह्यन्तर्धानस्य सन्ति वै ॥२६८५॥

❀ प्रकाशितनामानि ❀

आविष्कृत[1] दर्शित[2] ञ्च, प्रादुष्कृतं[3] प्रकाशितम्[4] ।
प्रकटितं[5] भवेन्नाम, प्रकाशितस्य वस्तुनः ॥२६८६॥

❀ अवलम्बितनामानि ❀

अवलम्बित[1]-मुच्चण्ड[2]-मविलम्बित[3]-मित्यपि ।
एतन्नामानि मन्यन्ते, सालम्बन वस्तुनि ॥२६८७॥

❀ अनादृतनामानि ❀

अवमत[1]-मवज्ञातं[2], परिभूत[3]-मनादृतम्[4] ।
अवगणितं[5] भवेन्नामावमानित[6]-मित्यपि ॥२६८८॥

नुन्नं[७] नुत्त[८] ञ्च निष्ठ्यूतं[९], नव नामानि सन्ति वै।

❀ लिप्तनाम ❀

दिग्धं[१] लिप्तं[२] द्वयं नाम, लेपनस्य प्रयुज्यते ॥२६६५॥

❀ रुग्णनाम ❀

रुग्णं[१] भुग्नं[२] द्वयं नाम, वक्रे भग्ने च पीडिते।

❀ रूषितनाम ❀

रजोलिप्ते विजानीयाद्, रूषितं[१] गण्डितं[२] द्वयम् ॥२६६६॥

❀ गुप्तनाम ❀

गूढं[१] गुप्त[२] द्वयं नाम, गुप्तार्थे कथ्यते बुधैः।

❀ मुषितनाम ❀

मुषितं[१] मूषितं[२] नाम, चोरितार्थे प्रयुज्यते ॥२६६७॥

❀ गुणितनाम ❀

आहतं[१] गुणितं[२] नाम, गुणितार्थे निगद्यताम्।

❀ निशातनामानि ❀

निशातं[१] निशितं[२] शातं[३],

शीतं[४] क्ष्णुत[५] ञ्च तेजितम्[६] ॥२६

❀ स्पर्द्धानाम ❀

सङ्घर्ष[१] श्चैव संहर्षः[२], स्पर्द्धा[३] नामाऽपि कथ्यते ।

❀ अपक्रियानाम ❀

द्रोहो[१] ऽपकारनामस्यादपक्रिया[२] ऽपि मन्यते ॥२७६०॥

❀ व्यर्थनामानि ❀

वन्ध्यं[१] वन्ध्यं[२] मुधा[३] मोघं[४], व्यर्थे स्यादऽफलं[५] पुनः ।

❀ निरर्थकनामानि ❀

ख्यातं निरर्थकं[१] नाम, तदेवान्त गंडु[२] इति ॥२७६१॥

❀ संस्थाननाम ❀

प्रसिद्ध नाम संस्थानं[१], सन्निवेशो[२] ऽपि मन्यते ।

❀ व्ययनाम ❀

अर्थस्यापगमो लोके व्ययः[१] प्राज्ञेन कथ्यते ॥२७६२॥

❀ अभिव्याप्तिनाम ❀

संप्लवनं[१]-मभिव्याप्तिः[२], सर्वथा व्यापने भवेत् ।

❀ भ्रंशनाम ❀

भ्रंशो[१] भ्रंसो[२] इदं नाम निपतने हि मन्यते ॥२७६३॥

❀ जीर्णिनाम ❀

ज्यानि[1] र्जीर्णि[2] द्वयं नाम जीर्णतार्थे प्रयुज्यते ।।२७७७।।

❀ वरनाम ❀

वरो[1] वृति[2] श्चतुर्दिग्भ्यो रोधने वरदानके ।

❀ समुच्चयनामानि ❀

समुच्चयः[1] समाहारः[2], समूहार्थे प्रयुज्यते ।।२७७८।।

❀ अपहारनामानि ❀

अपचयो[1] ऽपहार[2] श्च, हानि[3] र्ह्रासे प्रयुज्यते ।

❀ प्रत्याहारनाम ❀

प्रत्याहार[1] उपादानं[2], द्वयं नामास्य बुध्यताम् ।।२७७९।।

❀ बुद्धिशक्तिनाम ❀

निष्क्रमो[1] बुद्धिशक्ति[2] श्च द्वयं नामास्य मन्यते ।
उपर्युक्ताः क्रिया शब्दा, लक्ष्या धात्वर्थ संबलात् ।।२७८०।।

— अव्ययप्रकरणे —

अथाऽव्ययानि वक्ष्यन्ते, तत्रादौ तस्य लक्षणम् ।
श्रीसिद्धहेमचन्द्राभि-धयाकृतौ प्रतिपादितम् ।।२७८१।।

समन्ताद् वनवासीति, सामन्तभद्रसूरिप: ।
स्वच्छं गच्छं वितेने स:, तदनु भद्रकृद् भुवि ॥६॥

सर्वदेवाख्य सूरीश:, सर्वश्रयस्करं कलम् ।
वटगच्छं पवित्रं च, विशालं तदनु व्यधात् ॥७॥

श्रीमेदपाट भूपाल महातपापदै र्भुवि ।
श्रीजगच्चन्द्रसूरीशै स्तपागच्छ: प्रवर्त्तित: ॥८॥

परम्परागते स्वच्छे, तपागच्छे ऽत्र भूतले ।
यवनाकवरे लेश-प्रतिबोधकरा: वरा: ॥९॥

धीर वीरत्व हीरत्व-गभीरत्वादि भूपिता: ।
जगद्गुरुवरा: विज्ञा: सञ्जाता हीरसूरय: ॥१०॥

प्रतापि सेनसूरीशै र्दक्षै: श्रीदेवसूरिभि: ।
वादीभै: सिंहकल्पै: श्री-सिंहसूरीश्वरै: क्रमात् ॥११॥

उल्लासिते तपोगच्छे, वृद्धिविजयकारका: ।
श्रीवृद्धिविजया जाता, वृद्धिचन्द्रादय: परे ॥१२॥

तेषा ञ्च शान्तमूर्त्तीनां, पादाब्जमधुपोपमा: ।
सर्वशासनसम्राजो, विभ्राजो ज्ञानरश्मिभि: ॥१३॥

सत्तीर्थोद्धारका: प्रौढा, सर्वतन्त्रस्वतन्त्रका: ।
सूरिमन्त्रैकप्रस्थान-पञ्चकाराधका: किल ॥१४॥

सद्ब्रह्मचारिण: श्रीमन्नेमिसूरीश्वरा वरा: ।
समाचरान्विता जाताऽस्तत्पट्टाम्बर भास्करा: ॥१५॥

कुम्भे तथा च हनने घोपान्तर्भाव किङ्किणीपु घः ।
विपयो भैर वो ङार्थः, चस्तरौ चन्द्र चौरयोः ॥१७॥

किन्तु निम्नार्थ बोधेपु चमारोऽव्यय इष्यते ।
अन्योन्याऽर्थे विकल्पार्थे सेमास पाद पूरणे ॥१८॥

पक्षान्तरे समूहार्थे हेतावबधृतावपि ।
अन्वाचये पुनस्तुल्य योगितायान्तथैव च ॥१९॥

चुश्चकोरे प्रयुज्येत पुमानेव सदा बुधैः ।
छेदके छस्तथा सूर्ये संवरणेऽपि छः पुमान् ॥२०॥

तडिन्निर्मल छन्दस्सु छमिति संप्रयुज्यते ।
जनने जेतरि जः स्यात् विगतेऽपि प्रकीर्तितः ॥२१॥

जेतरि केवलं जिः स्यात् पुमानेवेति निश्चयः ।
जू विहायसि विगते पिशाच्यां जवने तथा ॥२२॥

झः पुंसि गायने नष्टे घर्वर ध्वनि नामनि ।
व्यूहने गूढ पादे ञः चाह वाक् चरणे पुनः ॥२३॥

ध्वनौ वायौ पृथिव्यां टः करङ्के भुवि टं स्मृतम् ।
चकोरेऽब्दे तथा ठः स्यात् घटे शून्ये बृहद्ध्वनौ ॥२४॥

डः स्याद् ध्वनौ वृषाङ्केऽपि रुद्रे चन्द्रस्य मण्डले ।
वन्दिवृन्देऽपि ढः प्रोक्तो यामिनी पति मण्डले ॥२५॥

न्पौ स्तरण्यां समाख्यातः प्पः पाने पवने पथि ।
वर्णके पस्तथा प्रोक्ते, पा श्रुते पातरि भवेत् ॥३५॥

निष्फले पुष्करे जल्पे, फकारो भय रक्षणे ।
फं फा वाते फले फेने, फूत्कारे फूरिरिति स्मृतः ॥३६॥

कलहे विगते कुम्भे ब्वः पद्मे वरुणोऽपि स्यात् ।
भ्नः शुक्ले भ्रमरे दोष्णौ, भये भ्नी रितिकथ्यते ॥३७॥

धिषणे भ्नं भुवि भू शब्दः, चन्द्रे शिवे विधौ च म्नः ।
मौलौ च बन्धने भोः स्यात्, म्ना माने वारणेऽव्ययः ॥३८॥

अस्मच्छब्द द्वितीया म्ना, म्ने पष्ठो कथ्यतेऽस्मदः ।
लक्ष्म्यां मातरि म्ना शब्दः,

य्यः स्याद् वाते यमेऽपिच ॥३९॥

रवौ धातरि य्यः पुंसि, याने य्या मातरि श्रियाम् ।
खट्वाङ्गेऽपि य्या शब्दः, कथ्यते पण्डितै रिह ॥४०॥

र्रः स्यात् कामे नरे तीक्ष्णे, रामे वैश्वानरेऽपि र्रः ।
र्रा द्रव्ये कनके प्रोक्तः, आश्रये नीरदेऽपि रा ॥४१॥

ल्लः सूर्ये रक्षणे शब्दे, भयेऽपिच प्रयुज्यते ।
र्री भ्रान्तौ प्रयुज्येत, लकारश्चलने भवेत् ॥४२॥

ल्ला दाने लवणे ल्लूश्च, लश्च लूश्च विडौजसि ।
दिशायाममृते लः स्यात्, लोः श्लेषे वलयेऽपिच ॥४३॥

[::]



निषण्णा कमले भव्या,

अब्जहस्ता सरस्वति ।

सम्यग्ज्ञानप्रदा भूयात्,

भव्यानां भक्ति-शालिनाम् ।



कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी रचित "अभिधान चिन्तामणि" कोशना आधारे तमे रचेल नूतन संस्कृतश्लोकमां "सुशीलनाममाला" नूतन कोष हालना कालमां समाजने घणोज उपयोगी थशे, तेमां बे मत नथी।

दिनप्रतिदिन आवुं नूतन संस्कृत साहित्य बहार पाडो के जेथी समाज ने खूबज उपयोगी थाय एज शुभेच्छा।

वेरावल (सौराष्ट्र)	विजयमोतिप्रभसूरि
आसो शुद १४ गुरुवार	जैनउपाश्रय
ता० ७-१०-७६	जगावाव चोक

卐

॥ ॐ ह्रीँ अर्हं नमः ॥

"सुशीलनाममाला"-निर्माणकृते

शुभाशीराशिमाला-

मुनीन्द्रं तीर्थपं सार्वं, नौमि नेमिं जगद्गुरुम् ।
लावण्य- शीलशाल्यङ्गं, दक्षमोदक्षमोत्तमम् ॥ १ ॥

"यथा नाम तथा गुणाः" इत्युक्तिमनुसृत्येयं नाममाला सुन्दरतरशीलालङ्कारालङ्कृतत्वाद्यथार्थाभिधानागुणनिधाना च ।

कलिकालकल्पतरुकल्प- कलिकालसर्वज्ञेन भगवता श्रीमद्धेमचन्द्राचार्यवर्येण विरचिता 'ऽभिधानचिन्तामणि' सदभिधानशब्दकोपयटिष्ठपरिपाटीपरिपुष्टत्वेन सुवर्णसुवाससंवलनसादृश्यं समजनिष्ट । दृग्गता पठ्यमाना चेयं 'सुशीलनाममाला', संस्कृतसाहित्योपासक-सर्वजनता-सार्वजनीनतां जनयतु, विजयतु च जगतीतले समुद्र-सूर्य-सुधाकर-कमलाकर-धराधरादिसंस्थिति यावद् ।

शास्त्रविशारद-कविभूषण-साहित्यरत्नाचार्यश्रीविजयसुशीलसूरिवरो मदीयसांसारिकोऽनुजोऽपि विनेयोऽपि सुशीलतालतालवालकल्पोऽनल्पायुष्मान् सम्भूय श्रीजिनेन्द्रशासनप्रभावनाभासुरकार्यकलापकरणोद्यतो भवत्वनुदिनमिति मे मङ्गलमनीषासहकृतशुभाशीराशिमालाऽसराला ॥

२५०३ श्रीवीराब्दे, २०३३ विक्रमेऽब्दे, २८ श्रीनेमिवत्सरे, १३ लावण्यवर्षे, चैत्रशुक्लसप्तम्यां, रविवासरेऽलेखि विजयदक्षसूरिणा ॥

दिनाङ्कः— २७-३-७७ । मरुधरस्थे जावालनगरे शाश्वतीचैत्रीश्रीनवपदावलिसमाराधना याः प्रथममङ्गलदिने चेति शुभं कल्याणमस्तु ॥

श्रीअभिधानचिन्तामणि कोशना आधारे लगभग २८४८ संस्कृत श्लोकप्रमाण '[illegible]नाममाला' नामनो शुभग्रन्थ रचेल छे, ते जाणी अनुमोदना। ते संस्कृत शब्दकोश सर्वने उपयोगी बने तेवी शुभेच्छा।

पालीताणा	विजय
तारीख	अभ्यानंदसूरि
१२-१०-७६	नेमि-दर्शनज्ञानशाला

卐 卐 卐

' सुशीलनाममाला ' अभिधानचिन्तामणि कोशनी जग्याए आपना हाथे बहार पडे छे. एज विद्वानो शिष्यनी परंपरामां गौरव ने उन्नतमुखे प्रशंसा करवा लायक छे. बाकी वाचकवर्ग तेनो लाभ उठावी प्रशंसा करे त्यारे ज ग्रन्थकर्त्तानी शोभा छे.

सूर्योदय थतो होय तो कोइने आंगळी बताववानी जरुरत रहेती नथी, तेनी मजा तो आंख ज लूंटी शके छे. ए तो पुस्तकनो अभ्यास करी विद्यार्थीओ ज प्रशंसा करी जाणे एज। राजा पण कोश विनानो राज्य करी शकतो नथी तेम पंडित पण कोशविनानो कवि बनी शकतो नथी एटलुं लखी विरमुं छुं।

अमदाबाद-१
दिनाङ्क
१४-१०-७६

प्रियंकरसूरि
मांडवीनी पोळ
जैन उपाश्रय

पर एक बात तो निश्चित रूप से प्रत्येक समझदार व सामान्य बुद्धिवाला भी अवश्य मानेगा कि-सृजन के पीछे का सृजक का परिश्रम अवश्य ही सराहनीय-व अनुमोदनीय एवं आदर्श है।

साथ २ अपन आशा भी करेंगे कि:-सदायुवान-सदाबहार संस्कृत व प्राकृत भाषा के साहित्य को प्रस्तुत कोशकार पूज्य आचार्य श्री नव्य स्वसृजन एवं अनुपलब्ध व उपयोगी प्राच्य पुनः प्रकाशन द्वारा संस्कृत-प्राकृत के साहित्य में अपना महत्वपूर्ण प्रदान करके देव भाषा साहित्य को समृद्ध करेंगे।

हम शासनदेव से प्रार्थना करेंगे कि:-हमारी अपेक्षित साहित्य सृजन की आशा को नवपल्लवित व सफल करने हेतु कोशकार को बलप्रदान करें-सहयोग दें यह ही हमारी मनो कामना है।

वीर सं० २५०२, वि. सं० २०३२ नेमि स० २७
कार्तिक कृष्णा ५
बुधवार दिनांक १३-१०-७६
श्री संभव जिन केवल ज्ञान कल्याणक दिन

शासन सम्राट्-साहित्य सम्राट् परम पूज्य
आ० श्री नेमिलावण्य चरण रज
मनोहर विजय गणिः।
जैन उपाश्रय
श्री नाडुलाइ तीर्थ
[राजस्थान]

विशेष्यतो जैनागम सविदा साहित्यरत्नाद्यनेकोपाधिभाजा श्रीविजयसुशीलसूरिणा मनीषिणा विधाय परितो बहुशश्च परिश्रमान् वस्तुतो मुख्यतश्च विनेयानामन्येषां च सरलातिसरल दिशेव परमपुरुषार्थोपयोगी सुशीलसम्प्रयोजि केयमन्वर्थ नाम्नी 'सुशीलनाममाला' पुस्तकी विनिबद्धा, विख्यातमैथिलमनीषिणा पं० श्री सुरेशझा शर्मणा संशोधिता च, दृष्ट्वेमां दृढं विश्वसिमि यदियं झटित्येव स्वशक्त्या सत्प्रचार प्रसारणादिना वाढं फलिष्यति प्रार्थये चैतत्साफल्याय भगवन्तं परमेश्वरम्, ग्रन्थनिर्मात्राऽत्र निर्माणे कियान् श्रमो व्यधायीति नातिरोहितमेतत् सुशीलनाममालां विपश्यतां विपश्चितामिति।

जयपुर

दिनाङ्क

८-१०-७६

शुभेच्छोमें,
खड्गनाथ मिश्रस्य
सम्मतिः
प्रधानाचार्य
राजकीय महाराजा आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय
(डीन, संस्कृत संकाय, राजस्थान
विश्वविद्यालय जयपुर).

"पद्यामृतमयकोष:, वृद्धिर्वैदुष्यवर्द्धक: ।
गुटिकेव सदा सेव्य:, कण्ठस्थ: सिद्ध निर्मित: ॥ १ ॥
देवतादेवभाषायां, भासितो भास्करोपम: ।
विद्वत्सरसिवदतां,पण्डितोक्ति व्यनक्ति च ॥ २ ॥
मुनिप्रवर्येण सुशीलनाम्ना,
सुनिर्मितेयं च सुशीलमाला ।
हृर्यैर्जनैः स्वेहृदि संस्थितोय-
मानन्ददादुष्टजनर्त्तिदा च ॥ ३ ॥
श्रीकान्तठक्कुर इति प्रथितेन सम्यक्,
कोपान्तलोचनकृतात्र सुशीलमाला ।
तेनातिरम्य वचनेन सुधन्यवादं
विष्वक् प्रयच्छति मुदा सुमतिप्रसूनम् ॥ ४ ॥

जयपुर दिनाङ्क ८-१०-७६	श्रीकान्त ठक्कुर (ज्योतिषाचार्य, पोष्टाचार्य) भू० पू० व्याख्याता, महाराजा संस्कृत कॉलेज, जयपुर)

"स्वाभिप्रायान् परावबोधयितुं भाषाणामध्ययनेऽध्यापने च शब्दकोशानामतीवावश्यकता भवति। तदर्थमेव च अनेकै मनीषिभिरुल्लिखिताः शब्दकोशाः। तेषु तेषु च कोशेषु विद्यते स्व स्व वैशिष्ट्यम्, परं यादृशं वैशिष्ट्यमस्यां "सुशील-नाममालायां" विद्यते तादृशं वैशिष्ट्यं नान्येषु शब्दकोशेषु दृष्टिगोचरं भवति। अस्या अतीवसरलतया शब्दान्वेषणे अल्पमेधसामपि जनानामनतिश्रममात्रेणैवाल्पकाले स्वाभिष्टज्ञानानि भविष्यन्तीति सुनिश्चितमेव।

अत्र पर्यायादिव्युत्पत्तिप्रदर्शनक्रमेण शब्दार्थानां ज्ञानं कारयितुं विविधोपायाः प्रदर्शिताः सन्ति। यतोऽस्यां नाममालायां यत्र तत्रातीव सरलतया क्लिष्ट शब्दानां व्युत्पत्तिराविदृश्यते। स्वानुभवतर्कगहनाध्ययनपरिपाकमत्या पूर्वापराचार्यसम्मतं स्वीकृत्य भाषाविज्ञानदृष्ट्यापीयं सम्यगुपयोक्तृणां छात्राणां गुणैकपक्षपातिनां विदुषाञ्चातीव लाभकरी भविष्यतीति, आशा समानः।"

जोधपुरम्

दिनाङ्क

१६-१०-७१

जयनन्दनझा
संस्कृताध्यापकः
व्याकरणाचार्य-साहित्यरत्न-
शिक्षाशास्त्री,
सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालयः।

卐 卐 卐

षु सर्ववोधगम्यः विद्यते । 'वाक्यं रसात्मकं
रेण अयं ग्रन्थ विदुषान् करकमले आयाति ।

हुना-'क्षणे क्षणे यन्नवतामुवैति तदेव रूपं
' कृतित्व-सौन्दर्येण मम हृदये अमिट प्रभावः

ग्रन्थोऽयं पाठकानां सुवहु उपकरिष्यति ।

न ङ्क ७६ दिने]	भवदीय जयन्तीलालः ओझा एम. ए. वी. एड. जावालस्थः ।

शब्दकोशोऽयम् हिमालयवत् उभयोः कोशयोः मानदण्डं करोति। यथा हिमालये भास्वन्ति रत्नानि महोषधिश्च तथैवास्मिन् कोशेऽपि सुगमरूपेण शब्दानां वर्णनं दरिदृश्यते। तथैव कोशेऽस्मिन् शब्दाः रत्नानि इव प्रकाशन्ते। तथा च ओषध्यः इव उपयोगिनः सन्ति। कोशोऽयं सुन्दरः उपादेयश्चास्तीति 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'।

सिरोही
दिनाङ्क
२९-९-७६

भूरालाल शर्मा
(वेदान्त साहित्य शास्त्री
रा० उ० मा० विद्यालये
संस्कृताध्यापकः)

"सुशीलनाममाला" ग्रन्थ का अवलोकन करने का अवसर प्राप्त हुआ। 'अनुष्टुप्' छंद का यह संस्कृत भाषा में पर्यायवाची शब्द कोष एक अनुपम प्रयास है। भाषा के प्रगति के लिए शब्द कोष व उसमें भी पर्यायवाची शब्द संकलन एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस नाममाला में 'छः' विभाग रखे गए है और जो विभागीकरण विषय का किया गया है वह अनुमोदनीय है।

इसके उपरांत जो अनुक्रम रखा है वह सराहनीय है। (१) देवाधिदेव (२) देव (३) मर्त्य (४) तिर्यंग् (५) नरक (६) सामान्य विभागीकरण ग्रन्थकार महोदय के धार्मिक दृष्टिकोण का सूचक व प्रेरक है। शब्द संकलन में शब्द के यथार्थ अर्थ को सुरक्षित रखने का जो प्रयास किया गया है व साहित्यक दृष्टि से अनुकरणीय व प्रशंसनीय है।

पू० आचार्य श्री विजयसुशीलसूरि महाराज साहेब ने संस्कृत साहित्य की इस ग्रन्थ द्वारा जो सेवा की है वह संस्कृत साहित्य के प्रति उनके आदर का द्योतक है।

भाषा के विद्वानों लेखकों व विद्यार्थिओं के लिए यह ग्रंथ उपयोगी सिद्ध हो यही मेरी कामना है।

सिरोही
दिनाङ्क
१२-६-७६

पुखराज सिंघी एडवोकेट
संयोजक
राजस्थान जैन संघ व अध्यक्ष
सेठ कल्याणजी परमानंदजी पेढी

अभिप्राय-

साहित्यरत्न, कविभूषण, शास्त्रविशारद पू० आचार्य देव श्रीविजयसुशीलसूरीश्वरजी म० श्री ताजेतरमां कलिकाल सर्वज्ञ पूज्य आचार्य भगवंत श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी म० रचित 'श्रीअभिधानचिन्तामणि' ने अवलं-अनुलक्षी, सरल भाषामां अने रोचक शैलिमां २८४८ श्लोक प्रमाण 'सुशीलनाममाला' नामनो एक नूतन संस्कृत कोश रची प्रकाशित करी रह्या छे.

पूज्य आचार्यश्रीना निकट सत्संगथी अने भाव वाही उपदेशथी तेओश्री एक विशिष्ट विद्वान्, प्रखर शास्त्राभ्यासी, सिद्धहस्त लेखक अने प्रभावक वक्ता छे एतो जाणुंज छुं.

तेओश्रीए आज पर्यंत न्हाना-म्होटा पुस्तकों-ग्रंथो रची वह्योळा प्रमाणमां साहित्य-सर्जन कर्युं छे. जे सरल, रसप्रद अने मननीय होइ, सुंदर ने उत्साहभर्यो आवकार पामेल छे. परन्तु आने हुं विशेष प्रभावित तो ए कारणे थयो के—

अभिमत

परम पूज्य आचार्यदेव श्रीविजयसुशीलसूरीश्वरजी म० सा० द्वारा विरचित 'सुशीलनाममाला' का अवलोकन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। २४८ श्लोकों का यह ग्रन्थ न केवल एक 'शब्द कोष' है अपितु एक 'ज्ञान कोष' भी है। इसके विभिन्न विभागों में जैन साहित्य से संबंधित अनेकों पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख है। ग्रन्थ में जैनदर्शन की परंपरानुसार तीर्थंकर, गणधर, यक्ष-यक्षिणी, गत चौविसी, वर्तमान चौविसी, देवलोक, मृत्युलोक आदि का विवरण ज्ञान से परिपूर्ण है। ग्रन्थकार आचार्यप्रवर एक सिद्धहस्त लेखक हैं। साथ ही आप एक प्रखर व्याख्यानकार एवं वक्ता भी हैं। आप के छोटे बड़े करीब ५० ग्रन्थ अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। [illegible] विद्वान् लेखक अपने निर्मल दीक्षा जीवन के ५५ वर्ष पूर्ण कर चुके हैं जिसमें आपने व्याकरण, न्याय, आगम आदि का गहन अध्ययन किया है जिसका प्रतिबिम्ब आपके द्वारा लिखे ग्रन्थों में दिखाई पड़ता है।

[illegible]

राष्ट्रीय चेतना में नैतिक एवं चारित्रिक विकास की अत्यन्त आवश्यकता है। इस प्रकार की रचनाएें भगवान महावीर के उपदेशों एवं सिद्धान्तों को जीवन में आचरण शुद्धि का क्रियात्मक कायाकल्प कराती है।

आज के परिवर्तित परिवेश में एवं राष्ट्रीय धारा के बदलते हुए स्वरूप में यह ग्रन्थ मानव मात्र के लिये भद्रंकर होगा तथा इस प्रकार के अन्य ग्रन्थों की रचनाएँ विश्व कल्याण की भावना को बढाने में आशीर्वाद स्वरूप होगी।

ज्योतिष सदन
ऋषि पंचमी गुरुवार
(भाद्रपद शु०)
विक्रम सं० २०३५
दिनाङ्क ७-६-७८

पं० हीरालाल शास्त्री एम० ए०
संस्कृताध्यापक
शासकीय विद्यालय
माण्डवला (जालोर)

पूज्यश्रीनी शुभ निश्रामां राजस्थानमां अनेक स्थले अंजन-शलाका-प्रतिष्ठादिनां शुभ कार्यो थतां ज रहेतां होवा छतां संस्कृत के तात्त्विक विषयना साहित्य सर्जनमां तेओश्री खूबज प्रवृत्तिशील बनी रहेता होइ विविध विषयी पुस्तकोनु' सर्जन करी शक्या छे। पूज्यश्रीना रोमेरोममां प्रकाशी रहेल समता गुणे, राजस्थानना घणा गामोमां दीर्घकालीन क्लेशमय वाता-वरणने पण एकदम शांत बनावी अंजनशलाका-प्रतिष्ठा आदिनां कार्यो निर्विघ्ने अने उत्साह पूर्ण वातावरणवाळां बनी जवा पाम्यां छे।

शासन प्रभावनानां अने सकल संघना हितकार्योमां कया माणसपासेथी कइ रीते काम लेवु' तेनी सुज, आ आचार्य भगवन्तमां अजोड छे।

हमणां ज थयेल श्रीवामणवा-जी महातीर्थमां अंजन-शलाका अने प्रतिष्ठानु' कार्य ते प्रत्यक्ष पूरावा रुपे छे।

पूज्यश्री दीर्घायु बनी रहो नवा नवा साहित्य सर्जनमां अने शासनप्रभावनानां विविध कार्योमां शासनदेव तेओश्रीने सहायभूत बनी रहे एज शुभेच्छा।

श्री वीर सं० २५०३ विक्रम सं० २०३३ अषाड शुक्ला त्रयोदशी दिनाङ्क २६-६-७७	ली० खुबचंद केशवलाल पारेख निवृत्त "धार्मिक शिक्षक" वाव (बनास कांठा) गुजरात.

अतोऽस्माकं तेषां कोटाकोटिवन्दनसहितमभिनन्दनं घटते । इतिसम् ।

। जैनं जयति शासनम् ।

लिखितं-

केशरीचन्द्रात्मज छबीलदासेन श्रेष्ठिवर्यश्रीमत्केशवलाल बुलाखीदास-संचालित-श्रीभट्टीबाईस्याद्वादसंस्कृत प्राकृतपाठ-शाला-श्रीललिताबेनकेशवलाल स्वाध्यायमन्दिर प्रधानाध्याप-नेन वर्त्तमान स्तम्भतीर्थं (खम्भात) निवासिना वैक्रमीयत्रय-त्रिंशदधिकद्विसहस्रसंवत्सरे ।

[जैन पंडित श्रीछबीलदास केशरीचंदजी नो आ अभिप्राय छे.]

विद्वद्वर्य आचार्य श्रीविजयसुशीलसूरिजी महाराज कृत 'सुशीलनाममाला' कोश, संस्कृतना अध्येताओने उपयोगी थाय एम मानुं छु केमके आ कोशनी रचना कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ना अभिधान चिन्तामणिकोशना आधार उपर थयेल छे.

पूज्य आचार्य श्रीविजयसुशीलसूरिजी महाराजनो आ प्रयत्न अनुमोदनीय छे. तेओश्रीए परिश्रम पूर्वक संस्कृत अने गुजराती साहित्यना विषयमां बीजा पण अनेक ग्रन्थो तैयार कर्या छे. तेओश्रीनी ज्ञानोपासना प्रशंसनीय छे।

आसो सुद ९ शुक्रवार दिनाङ्क १-१०-७६	लि० शिवलाल नेमचंद शाह [जैन पंडित] ठे० कोकानो पाडो पाटण (उ० गुजरात)

प्राचीन कालमां परमपूज्य प्रातः स्मरणीय कलि काल सर्वज्ञ आचार्यदेव श्रीमद्‌विजय हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज साहेबे रचेल 'श्री अभिधान चिन्तामणी कोशना' आधारे बाल ब्रह्मचारी राजस्थान दीपक परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय सुशीलसूरीश्वरजी महाराज साहेबे बनायेल 'श्रीसुशीलनाममाला' संस्कृतना अभ्यासीओने घणीज उपयोगी छे. आपश्रीजीनो प्रयास घणोज प्रशंसनीय छे. तेनो घणोज प्रचार थाय एवी अंतिम भावना।

लि०

मास्टर बाबुलाल मणिलाल संघवी

भाभरवाले हाल तखतगढ

राजस्थान (मारवाड़)

दिनांक १०-१-७९

A bunch of flowers :

I was thrilled to go through the great book **'Susheel Nam Mala'** containing about 3000 slokas written by His Holiness Acharya Shrimad Vijay Sushil Surishwarji Maharaj

The Acharya Shree has written one hundred and eight books out of which fifty six books have been published and the remaining await publication.

The Acharya Shree's style is lucid and comprehensive which like nectar enters the soul resulting in the transformation of mind, body and soul. Every theme is depicted in such a simplicity that the reader feels as if he is in the wonderland of illumination. Such is the magic of his style. His books dealing with all the aspects of the Jainism have become very popular among the elite as well as the common people belonging to all faiths, caste and creed.

The Acharya Shri was born in [illegible] Chanasma village of the greater Gujarat Pra[illegible] [illegible] Shrimali family of [illegible]

Achaya Shri Vijay Susheel Surishwarji, though born in Gujarat, has been moving barefooted in the villages, towns and cities of Rajasthan for the last *thirteen* years benefitting people by his sermons and inspiring *them to lead pious life and perform good* deeds for the welfare of the people and the Society.

He has been decorated with titles such as '*Shastra Visharad*' - well versed in Jain *Scriptures*, 'Sahitya Ratna' - the jewel of literature and 'Kavi' Bhushan' - the ornament of the poets. In the holy Jaisalmer Tirtha, Shri Sangh confirmed on him the title of '*Jain Dharma Diwakar' – the Sun of the Jainism*, Besides, he was awarded 'Marudhar - Desho-dharak' on the auspicious *Pratishtha ceremony at Rani Station*, 'Tirtha Prabhavak' at Chanvaleshwar Tirtha, 'Rajasthan Deepak-The lamp of Rajasthan in Pali, 'Shasan Ratna'– The jewel of Jain Society in Jodhpur.

In the sacred Memory of Lord Mahavir, Acharya Shree got the following temples and *monu*-ments constructed :

1. Godwar Panch Teerthi including the Ranakpur Temple.
2. The Abuji Tirtha.
3. The Kapardaji Tirtha
4. Phalodi Parshwanath Tirth.

The Acharya Shri inspired to go to pilgrimage to the holy Tirthas like Sametshikharji, Sidhgiriji, Jaisalmer, Nakoda, Kaparda Shankheshwarji etc.

The Acharya Shree is well versed in Gujarati, *Hindi and Sanskrit His style in Sanskrit bears* a modern touch and is known for its crystal clarity. It is evident from his books like ' Shri *Shad Darshan* Darpanam' 'Shri Tirthankar Charittam' 'Sushil Nam Mala' 'Chhando Ratna Mala' " Shri Hem' *Shabda nu Shasan* Sudha' etc. The *Sushil* Nam *Mala* is written in *stylish* Sanskrit and is admired even by the Sanskrit Scholars of repute.

As a great disciple of His Holiness Acharya Shrimad Vijay Dakhshasurishwarji, his fame and name has spread like the fragrance of the 'Kalpa-Pushpa'- The flower of the tree of Heaven which *fulfills all desires.*

with great enthusiasm, in the year 2033, Owing to this ceremony, the Sangh enjoyed all sorts of happiness.

I bow to the Sacred feet of Acharya Shri Vijay Sushilsuriswarji Maharaja, who is like a Tree of Heaven on this earth.

FALNA

Samvat 2033, Ashadh Sukla Panchami.

Wednessday,

(22-6-77)

J. C. Patni

M.A. (English & Hindi)

Vice Principal,

S.P.U. College, Falna.

श्रीसुशीलनाममालायाः- अभिप्रायः।

श्रीमत्-सुशील-महनीय वुधेश्वराणां,
भव्योपकारभर-निर्भर तत्पराणाम्।
पादारविन्दविगलन्मकरन्दवृन्दं,
मद्वन्दनात्मकमिलिन्द उपैत्वमन्दम् ॥ १ ॥

श्रीमत्कराम्बुजविनिः सृतपत्रमेत्य,
हर्षप्रकर्षमिह सन्तनुते नितान्तम्।
स्वान्ते ममाऽस्ति कुशलं भवदीयमिप्सोः,
श्रीमत्प्रसादमनिशं मनसाऽभिलिप्सोः ॥ २ ॥

यः श्रीमता मतिमता रचितोऽस्ति कोषो,
वैदुष्यलक्षणमहार्थ भटाधिपोषः।
एतत्कृते मतिमते भवते ददामि,
धन्य ध्वनि स्वरवनि प्रतिपद्यमानम् ॥ ३ ॥

कोषं विना न लसतीह तथा विपश्चित्,
लोके यथा नरपतित्वमितोऽपिकश्चित्।
तस्मात् सुधीजन समाज उदारभावं,
दृष्ट्वा प्रसीदतितरां मतिमत्सु सत्सु ॥ ४ ।

साहित्य सद्म-हृदयन्त्रविमोचि कुञ्जी,
गूढार्थबोधविहिताऽऽदरलोकरञ्जी।
श्रीमन्मुखाम्बुजविनिर्गत नाममाला,
मालायते हृदि न कस्य गुणे विशाला ॥ ५ ॥

वि० सं० २०३३ मार्गशिर षष्ठी — उपाध्याय हेमचन्द्रविजयो मणि, पादलिप्तपुरम्

श्रीसुशीलनाममालायाः- अभिप्रायः।

श्रीमत्-सुशील-महनीय बुधेश्वराणां,
भव्योपकारभर-निर्भर तत्पराणाम् ।
पादारविन्दविगलन्मकरन्दवृन्दं,
मद्वन्दनात्मकमिलिन्द उपैत्यमन्दम् ॥ १ ॥
श्रीमत्करामबुजविनिः सृतपत्रमेत्य,
हर्षप्रकर्षमिह सन्तनुते नितान्तम् ।
स्वान्ते ममाऽस्ति कुशलं भवदीयमिप्सोः,
श्रीमत्प्रसादमनिशं मनसाऽभिलिप्सोः ॥ २ ॥
यः श्रीमता मतिमता रचितोऽस्ति कोषो,
वैदुष्यलक्षणमहार्घ भटाधिपोवः ।
एतत्कृते मतिमते भवते ददामि,
धन्य धन्यानि स्वरचानि प्रतिपद्यमानम् ॥ ३ ॥
कोशं विना न लभतीह तथा विपश्चित्,
लोके यथा नरपतिर्वनितोऽपि कश्चित् ।
तस्मात् सुशील [illegible] उदारभावं,
[illegible] ॥ ४ ॥